A Daily News Magazine
भोपाल
सोमवार, 6 जनवरी, 2025

भोपाल एवं इंदौर से एक साथ प्रकाशित

वर्ष -22 अंक-127 नगर संस्करण, पृष्ठ -8, मूल्य रू.- 2 (डाक पंजीयन संख्याः म.प्र./भोपाल/4-391/2018-20)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

पहली बात

अर्थ व्यवस्थाः आंकड़ों के हिम-शिखरों पर गरीबों का सैर-सपाटा

उमेश त्रिवेदी
प्रधान संपादक

हम खुश हैं कि भारत सन् 2024 में दुनिया की पांचवी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था बन चुका है और उसकी जीडीपी 3.6 लाख करोड़ डॉलर है। हमारा अगला कदम 2027-28 में दूसरी लंबी छलांग लगाने का है। याने वर्ष 2027-28 में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था का तमगा हासिल कर लेगा। अर्थात हमारी अर्थ व्यवस्था 5 लाख करोड़ डॉलर की जीडीपी के साथ दुनिया में अपनी आर्थिक समृद्धि का परचम फहराने में सफल हो सकेगी। संयुक्त राष्ट्र संघ व्दारा जारी आंकड़ों में भले ही यह कहा जाए कि दुनिया भर के गरीबों की आबादी में सबसे ज्यादा गरीब भारत में रहते हैं, लेकिन इससे सामाजिक पर्यावरण और परिवेश में हमारे खुश रहने के पैमानों और बहानों में कोई फर्क नहीं पड़ता है।

जैसा कि दुनिया में तीसरी सबसे बड़ी अर्थ व्यवस्था में हमारी गिनती होने अथवा शुमार होने से मिलने वाली खुशी हमारी भूख पर भारी है, उसी प्रकार दूसरे कई पहलू हमें हमारी बदनसीबी और बदहाली भुलाने के लिए पर्याप्त हैं। बस, हम खुश हैं और हम खुश रहेंगे। खुशियों के एक नहीं, अनेक पहलू हैं। खुशी का एक पहलू यह भी हो सकता है कि पांच साल पहले वैश्विक वित्तीय संकट और कोविड महामारी के दौरान भी भारत की अर्थव्यवस्था मजबूत बनी रही। हम इसलिए खुश हैं कि हमारे देश के दो उद्यो गपति मुकेश अंबानी और गौतम अडानी दुनिया के पहले पच्चीस-पचास अमीरों मे शुमार । मुकेश अंबानी अपने बेटे की आलीशान शादी में अरबों रूपये खर्च करके अपनी सम्पन्नता की नुमाइश करते हैं।

हम इसलिए भी खुश हैं कि वैश्विक बहुआयामी गरीबी सूचकांक 2014 के अनुसार दुनिया में 110 करोड लोग बहुआयामी गरीबी से जूझ रहे हैं, लेकिन हमारे देश में उनकी संख्या महज 21 फीसदी है। याने हमारे देश में बहुआयामी गरीबों की संख्या मात्र 23.4 करोड़ है। हमें इससे भी कुछ फर्क नही पड़ता है कि कुल बहुआयामी गरीबों में आधे याने 11.70 करोड़ बच्चे हैं। दिलचस्प यह है कि 110 करोड़ गरीबों में 96.2 करोड़ लोग देहातों में रहते हैं। यह आबादी बुनियादी सुविधाओं से पूरी तरह वंचित है। भारत में गरीबी के कारकों में कमजोर बुनियादी ढांचे के अलावा सेवाओं के वितरण में कमी, अवसरों की कमी जैसे कारक जिम्मेदार हैं। फिर भी हम खुश हैं..। जबकि 'ग्लोबल हंगर इंडेक्स' की रिपोर्ट में भारत में भूख का गंभीर स्तर व्याप्त है।

राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण के मुताबिक भारत के देहातों में एक व्यक्ति अपने परिवार की प्रतिदिन की जरूरतों को पूरा करने के लिए 126 रुपए खर्च करता है, जबकि शहरों में यह आंकड़ा 215 रूपए है। 'ग्लोबल हंगर इंडेक्स' 2024 के मुताबिक सबसे अधिक कुपोषित आबादी वाले देशों में इस साल भारत की रैंक सातवीं होगी। यह आंकड़ा लगभग 200 मिलियन है याने ब्राजील की आबादी के समकक्ष है। ग्लोबल हंगर इंडेक्स ने 2024 में 127 देशों के लिए ये आंकड़े एकत्रित किए हैं। इसमें भारत की रैंकिंग 105 है, जिसे 'गंभीर' श्रेणी माना जाता है। भारत में भूख की इस गंभीरता को कमतर नही आंका जाना चाहिए। इसके अलावा भारत में बाल दुर्बलता की दर दुनिया में सबसे अधिक है।

यह रिपोर्ट गरीबी और भूख से निपटने के लिए सरकारी नीतियों में गंभीर आकलन की आवश्यकता प्रतिपादित करती है। सबसे पहले तो उस जीडीपी दर की ओर इशारा करती है, जिसके बहाने केन्द्र और राज्यों की सरकारें हमेशा सफलता के बिगुल बजाया करती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि प्रति व्यक्ति जीडीपी वृद्धि दर और भूख के निम्न स्तर के बीच संबंध ''हमेशा प्रत्यक्ष या गारंटीकृत नहीं होता है''। जाहिर है कि अकेले जीडीपी वृद्धि से पूरे लोगों को बेहतर खाद्य और पोषण सुरक्षा मुहैया करा पाना संभव नहीं है। गौरतलब है कि जीडीपी की सीमाओं को उजागर करते हुए यह रिपोर्ट देश में व्याप्त सामाजिक और आर्थिक असमानताओं के मुद्दों को भी एड्रेस करती है। एक चौंकाने वाला तथ्य यह है कि भारत में आय असमानता का आंकड़ा बीते सौ सालों मे सर्वाधिक है। कहा जा सकता है कि हालात औपनिवेशिक काल से भी बदतर हैं।

वर्ल्ड इनइक्वेलिटी लैब के एक अध्ययन के अनुसार 1 प्रतिशत भारतीय राष्ट्रीय आय का 22.6 प्रतिशत कमाते हैं। जबकि निचली 50 फीसदी आबादी मात्र 15 प्रतिशत कमाती है। भारतीय अरबपतियों के लिए यह स्वर्ण काल है। हुरून रिसर्च इंस्टीट्यूट की रिपोर्ट के मुताबिक 2024 में भारत में अरबपतियों की संख्या 271 तक पहुंच गई है। गौरतलब है कि 1991 में भारत में अरबपतियों की संख्या महज 1 थी। इसमें सिर्फ 2023 में 94 नए अरबपति इस सूची में जुड़े हैं। नए अरबपति जुड़ने का यह आंकड़ा अमेरिका के बाद सर्वाधिक है। इनकी सामूहिक सम्पत्ति 1 ट्रिलियन से ज्यादा है, जो दुनिया की कुल सम्पत्ति का 7 फीसदी है। इनमें मुकेश अंबानी, गौतम अडानी और सज्जन जिंदल जैसे मुठ्ठी भर भारतीय दिग्गज अपना खजाना बढ़ाने के लिए अनवरत प्रयासरत है।

भारत में आर्थिक सुधारों के नाम पर जीडीपी ग्रोथ पर बहुत जोर दिया जा रहा है। देश की अर्थ व्यवस्था का लक्ष्य 8 फीसदी जीडीपी वृद्धि दर हासिल करना है। लक्ष्य यह भी है कि 2027 तक भारत जापान और जर्मनी को पीछे ढकेल कर दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन जाए। लेकिन कहना मुश्किल है कि विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था में देश की गरीबी और बदहाली का परिदृश्य क्या होगा । इसीलिए यह रिपोर्ट विकास के क्षेत्र में गरीब-समर्थक नीतियों की अनिवार्यता पर जोर देती महसूस होती है। रिपोर्ट में कहा गया है कि देश में सामाजिक सुरक्षा का जाल बेहतर बनाने की जरूरत है। इसके साथ ही स्वास्थ्य और पोषण जैसे मुद्दों पर भी ध्यान देना जरूरी है।

दिल्ली में एक ही आवाज, आपदा नहीं सहेंगे, बदल कर रहेंगे

● रोहिणी रैली में पीएम मोदी की हुंकार,3 दिन के भीतर की दूसरी रैली

● दिल्ली को वर्ल्ड क्लास का बनाने पर दिया पूरा जोर

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली में चुनाव की तारीखों की घोषणा से पहले पीएम मोदी ने पूरी तरह से चुनावी मोड में ला दिया है। प्रधानमंत्री ने रविवार को दिल्ली मेट्रो चरण-4 के अंतर्गत जनकपुरी और कृष्णा पार्क के बीच

● पीएम बोले-दिल्ली मेट्रो का काम बीजेपी की सरकार ने पूरा फैलाया

करीब 1,200 करोड़ रुपये की लागत वाले 2.8 किलोमीटर लंबे हिस्से का उद्घाटन किया। प्रधानमंत्री ने दिल्ली मेट्रो चरण-4 के 26.5 किलोमीटर लंबे रिठाला-कुंडली खंड की आधारशिला भी रखी, जिसकी लागत करीब 6,230 करोड़ रुपये होगी। इसके बाद पीएम मोदी ने रोहिणी के जापानी पार्क में परिवर्तन रैली को संबोधित किया। इससे पहले पीएम मोदी ने साहिबाबाद और न्यू अशोक नगर के बीच दिल्ली-गाजियाबाद-मेरठ नमो भारत कॉरिडोर के 13 किलोमीटर लंबे हिस्से का भी उद्घाटन किया था। पीएम मोदी ने दिल्ली को वर्ल्ड क्लास राजधानी बनाने की बात कही। पीएम मोदी ने कहा कि 21वीं सदी के इस पड़ाव दिल्ली के लोगों से विशेष आग्रह किया। पीएम मोदी ने कहा कि दिल्ली के उज्वल भविष्य के लिए बीजेपी को अवसर देने का आग्रह किया। पीएम मोदी ने इस मौके पर दिल्ली की आम आदमी पार्टी की सरकार की आपदा कहकर आलोचना की। पीएम मोदी ने जनकपुरी से कृष्णा पार्क से मेट्रो के उद्घाटन का जिक्र किया। पीएम मोदी ने कहा कि दिल्ली में एक ही आवाज गूंज रही हैं, आपदा नहीं सहेंगे, बदलकर रहेंगे। पीएम मोदी ने जनसभा के दौरान लोगों के साथ इस नारे को दोहराया। पीएम मोदी ने कहा कि दिल्ली विकास की धारा चाहती है। बीजेपी सेवा भाव से काम करने वाली पार्टी है, बीजेपी सपनों को पूरा करने की पार्टी है। पीएम मोदी ने कहा कि

दिल्ली को दुनिया के 20 शहरों में एक बनाना हमारा संकल्प है। उन्होंने कहा कि दिल्ली गरीब और मिडिल क्लास के सपनों को पूरा करने वाला शहर बने। पीएम मोदी ने अपने संबोधन में कहा कि राजनीति में नीति,नीयत,निर्णय और निष्ठा बहुत महत्वपूर्ण होता है। आपदा वालों की नीयत देख लीजिए...आज इनके नेताओं पर करोड़ों के घोटाले के मुकदमे हैं। शराब घोटाला किसने किया- आपदा वालों ने। स्कूल घोटाला किसने किया- आपदा वालों ने। प्रदूषण के नाम पर किसने करोड़ों का खेल किया- आपदा वालों ने। अनैतिकता के साथ कारनामे करने वाले लोग दिल्ली में आपदा में घेर करके तबाही की ओर ले जा रहे हैं। उनकी वो सारी बातें जो पार्टी के जन्म से पहले कहते थे, वह सब कुछ धरा का धरा रह गया है। आपदा वालों के काम का कोई हिसाब नहीं है,लेकिन इनके कारनामें बेहिसाब हैं। ये तब होता है जब नीयत में खोट होता है और निष्ठा जनता के प्रति नहीं होती। ये आपदा वाले दिल्ली चुनाव में अपनी हार सामने देखकर बौखला गए हैं। झूठ फैला रहे हैं। दिल्ली वालों को डरा रहे हैं कि बीजेपी आएगी तो ये बंद हो जाएगा,वो बंद हो जाएगा। मोदी ने आगे कहा कि मैं दिल्लीवालों को विश्वास दिलाने आया हूं कि भाजपा सरकार में दिल्ली में जनहित की कोई योजना बंद तो नहीं होगी, लेकिन उसमें बेईमानों का जो ठेका है न,उनको बाहर निकाला जाएगा। पिछले 10 साल में राज्य सरकार की जो योजनाएं सिर्फ कागज पर चली हैं,जिन योजनाओं में आपदा वालों ने जनता का पैसा लूटा है,उन्हें भी भाजपा सरकार की ओर से पूरी ईमानदारी के साथ और ये आपदा वालों को भगा करके ईमानदार लोगों को बैठाकर कल्याण के काम आगे बढ़ाए जाएंगे।

सुप्रभात

वो आएगा नुमाइश ए सामान देखकर
क्यों कारोबार छोड़ दूं नुक़सान देखकर
नख़रे उठा रही हूं तुम्हारी तलाश के
रुकती नहीं हूं रास्ता वीरान देखकर
सोचा नहीं था मैंने कभी तेरे जैसा शख़्स
मुंह फेर लेगा मुझको परेशान देखकर
वो तेरा लम्स वो तिरि बाहों की ख़ुशबुएं
लौटी हूं जैसे कोई गुलिस्तान देखकर
तू लाख बेवफ़ा है मगर सर उठा के चल
दिल रो पड़ेगा तुझको पशेमान देखकर
ज़ाहिर न हो कि मुझसे तेरा वास्ता भी है
सबकी नज़र है तुझपे मेरी जान देखकर

– हिमांशी बाबरा

बच्चे नहीं करेंगे माता-पिता की सेवा तो अब पड़ेगा भारी!

सुप्रीम कोर्ट का ऐतिहासिक फैसला, माता-पिता वापस ले सकते हैं संपत्ति

नई दिल्ली (एजेंसी)। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में बुजुर्गों को लेकर ऐतिहासिक फैसला सुनाया है। शीर्ष अदालत के इस फैसले से अब उन

● बच्चों को अब बुजुर्ग माता-पिता का भरण-पोषण हर हाल में करना होगा

बच्चों को सतर्क रहने की जरूरत है जो अपने बुजुर्ग माता-पिता से प्रॉपर्टी अपने नाम कराने या फिर उनसे गिफ्ट हासिल करने के बाद उन्हें अपने हाल पर छोड़ देते हैं। ऐसा करने वाले संतान की अब खैर नहीं है। माता-पिता से संपत्ति या फिर

गिफ्ट लेने के बाद उन्हें ठुकराने वालों को अब बड़ी कीमत चुकानी होगी। ऐसे बच्चों को प्रॉपर्टी या गिफ्ट या फिर दोनों लौटाने होंगे। सुप्रीम कोर्ट के इस फैसले से पूरी तरह स्पष्ट हो गया कि बुजुर्ग माता-पिता का भरण-पोषण हर हाल में करना होगा। उन्हें उनके हाल पर छोड़ देना काफी महंगा पड़ने वाला है। सुप्रीम कोर्ट का यह फैसला अपने आप में ऐतिहासिक और बेहद महत्वपूर्ण है। सुप्रीम कोर्ट ने अपने फैसले में साफतौर पर कहा है कि अगर बच्चे माता-पिता की देखभाल करने में विफल रहते हैं तो माता-पिता ने उन्हें जो प्रॉपर्टी और गिफ्ट दिए हैं वो वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम के तहत रद्द किया जा सकता है। सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में बुजुर्गों के लेकर बहुत अहम फैसला सुनाया। इससे बुजुर्गों को खासा फायदा होने वाला है।

प्रॉपर्टी और गिफ्ट लेने के बाद कर देते हैं नजरअंदाज

सुप्रीम कोर्ट ने सीनियर सिटीजन के हितों की रक्षा करने की जरूरत पर जोर देते हुए यह फैसला दिया है। आमतौर पर व्यवहार में देखा जाता है कि कई पैरेंट्स को उनके बच्चे प्रॉपर्टी और गिफ्ट लेने के बाद नजरअंदाज कर देते हैं। उन्हें खुद की देखभाल करने के लिए छोड़ दिया जाता है। शीर्ष अदालत ने इस मामले में अहम फैसला सुनाते हुए कहा कि अगर बच्चे पैरेंट्स की देखभाल करने में विफल रहते हैं तो माता-पिता ने उन्हें जो प्रॉपर्टी और गिफ्ट दिए हैं, वे वरिष्ठ नागरिकों के भरण-पोषण और कल्याण अधिनियम के तहत रद्द किया जा सकता है। बुजुर्गों की स्थिति में सुधार लाने की कोशिशों के तहत सुप्रीम कोर्ट ने यह बड़ा फैसला दिया है।

मध्यप्रदेश में है देश की डेयरी कैपिटल बनने की क्षमता : मुख्यमंत्री

विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन में डेयरी टेक्नोलॉजी कोर्स पाठ्यक्रम शामिल होने पर संगोष्ठी आयोजित

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि वर्तमान परिदृश्य में भारत सबसे युवा देशों में से एक है। प्रधानंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के विजन अनुरूप हमें युवा शक्ति का संपूर्ण उपयोग राष्ट्रहित और विकास में करना है। डेयरी टेक्नोलॉजी युवाओं के लिए एक नए मार्ग खोलता है। भगवान श्रीकृष्ण की शिक्षा स्थली उज्जैन के विक्रम विश्वविद्यालय में डेयरी टेक्नोलॉजी की अकादमिक डिग्री कोर्स की शुरुआत की जा रही है। पशुपालन का डिग्री कोर्स अब जबलपुर के साथ उज्जैन में भी छात्रों को प्रदाय किया जाएगा। भविष्य में अन्य विश्वविद्यालयों में भी यह कोर्स राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 अनुसार प्रदान किए जाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने विक्रम विश्वविद्यालय उज्जैन के स्वर्ण जयंती सभागृह में रविवार को पशुपालन विभाग एवं विक्रम विश्वविद्यालय द्वारा आयोजित संगोष्ठी को सबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि डेयरी टेक्नोलॉजी में प्रशिक्षित कौशल प्राप्त युवा डेयरी टेक्नोलॉजी का उपयोग कर अपने मजबूत इरादों और मेहनत से दूध उत्पादन में मध्यप्रदेश को सर्वोच्च स्थान पर ले जाएंगे। भारत दुनिया का सबसे बड़ा दुग्ध उत्पादक देश है और दुग्ध उत्पादन में 9त्न की भागीदारी के साथ मध्यप्रदेश का देश में तीसरा स्थान है। प्रदेश में दुग्ध उत्पादन का औसत 673 ग्राम है, जबकि राष्ट्रीय औसत 471 ग्राम का है। हमें इन उपलब्धियों से संतुष्ट नहीं होना है। प्रदेश की भौगोलिक स्थिति, अथाह जल संपदा और उर्वरा भूमि को देखते हुए सही दिशा में समेकित प्रयास करने पर हम डेयरी के क्षेत्र में देश का नंबर-1 राज्य बनाएंगे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि प्रदेश को देश का डेयरी कैपिटल बनाने के लिए दूध की प्रति लीटर क्रय के आधार पर सरकार पशुपालकों को बोनस भी प्रदान करेगी।

कल से प्रदेश से तेज ठंड का दूसरा दौर

पारे में 2-3 डिग्री की गिरावट के आसार; उज्जैन, ग्वालियर-चंबल में आज कोहरा

भोपाल (नप्र)। वेस्टर्न डिस्टरबेंस (पश्चिमी विक्षोभ) के असर से मध्यप्रदेश में जनवरी में तेज ठंड का दूसरा दौर अगले 48 घंटे बाद यानी कल 7 जनवरी से शुरू होगा। प्रदेश के उत्तर-पश्चिमी हिस्से में रविवार से यह सिस्टम एक्टिव हुआ है, जिसका

असर दो दिन बाद दिखेगा। इससे पहले ग्वालियर-चंबल, उज्जैन, सागर और रीवा संभाग में कोहरे का असर देखने को मिलेगा। सोमवार सुबह करीब 20 जिलों में कोहरा छाया हुआ है। मौसम वैज्ञानिक वीएस यादव ने बताया- वेस्टर्न डिस्टरबेंस की एक्टिविटी से उत्तर से बर्फीली हवाएं आने लगेंगी। जिनकी रफ्तार तेज होगी। ये ठंड का असर बढ़ाएंगी। दिन-रात दोनों के तापमान में गिरावट होगी। जनवरी में मावठे की बारिश भी हो सकती है। 10 जनवरी को वेस्टर्न डिस्टरबेंस का असर उत्तर-पश्चिमी भारत में देखने को मिल सकता है।

पोरबंदर में क्रैश हुआ कोस्ट गार्ड का हेलीकॉप्टर ध्रुव

तीन लोगों की हो गई मौत,तकनीकी खामी की आशंका

पोरबंदर (एजेंसी)। गुजरात के पोरबंदर में इंडियन कोस्ट गार्ड का एक एडवांस्ड लाइट हेलीकॉप्टर ध्रुव आज दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई। इस हादसे में कई लोग घायल भी हुए हैं, जिनका सिविल हॉस्पिटल में इलाज किया जा रहा है। हादसा क्यों हुआ,इसका पता अभी नहीं चल पाया है। जानकारी के अनुसार, कोस्ट गार्ड का ध्रुव हेलीकॉप्टर खुले मैदान में गिर गया और उसमें आग लग गई। इंडियन कोस्ट गार्ड भारत के समुद्री सीमा की

निगरानी करती है। भारतीय तटरक्षक बल के मुताबिक,रविवार को ध्रुव हेलीकॉप्टर दुर्घटनाग्रस्त होने के समय नियमित उड़ान पर था। इसमें दो पायलट और तीन अन्य लोग सवार थे। इस हादसे में तीन लोगों की मौत हो गई, जबकि दो गंभीर रूप से घायल हो गए। आशंका जताई जा रही है कि किसी तकनीकी खामी के कारण यह हादसा हुआ। बता दें कि ध्रुव हेलीकॉप्टर का उपयोग थल सेना, वायु सेना और नौसेना भी करती है। दो साल पहले इस हेलीकॉप्टर में कई खामियां पाई गई थीं।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 18 °c

न्यूनतम 13°c

सुबह सवेरे

भोपाल ■ सोमवार, 06 जनवरी 2025

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

गुरुकुल परम्परा को आत्मसात कर फिर से बनेंगे विश्व गुरु : सीएम

भोपाल(नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि अंधेरे से प्रकाश की ओर ले जाने वाला गुरु ही होता है। गुरु अपने विद्यार्थी में निहित अनंत संभावनाओं को पहचान कर इसका चारित्रिक एवं शैक्षणिक विकास करते हैं। हमारी पुरातन गुरुकुल परम्परा आज भी प्रासंगिक है। आज कई विकसित देश हमारी पुरानी गुरुकुल परम्परा को अपनाकर अपने बच्चों को शिक्षा दे रहे हैं। हमें भी पुन:उसी गुरुकुल परम्परा से जुड़ना होगा, तभी हमारा देश फिर से विश्व गुरु बन सकेगा। हम प्रदेश में क्लास के अंदर और क्लास के बाहर भी विद्यार्थियों को जीवन एवं नैतिक मूल्य तथा व्यावहारिक शिक्षा देकर उनके समग्र विकास की ओर बढ़ रहे हैं। मजबूत इरादों और शैक्षणिक

गुणवत्ता में आमूल-चूल सुधार लाकर हम प्रदेश को शिक्षा के मामले में देश का एक मॉडल एजुकेशन स्टेट बनायेंगे। इसमें शिक्षकों की बड़ी अहम भूमिका है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार को कलेक्टर कार्यालय, उज्जैन के एनआईसी से वर्चुअली जुड़कर स्टार्स प्रोजेक्ट के तहत अंतर्राष्ट्रीय शैक्षणिक भ्रमण के लिए सिंगापुर जाने वाले चयनित शिक्षकों को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि शिक्षक हमारे लिए सदैव पूजनीय हैं, हम विकसित भारत और विकसित मध्यप्रदेश के निर्माण में उनकी अनंत क्षमताओं और सुदीर्घ अनुभवों का प्रदेश के शैक्षणिक विकास एवं विस्तार में अधिकतम सदुपयोग करेंगे।

विचारधारा नहीं, बल्कि विचारों का खालीपन है बड़ी समस्या

- गड़करी बोले-राजनीति में सत्तारूढ़ पार्टी की ओर भागते हैं लोग

पुणे (एजेंसी)। केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी ने शनिवार को कहा कि राजनीति को लेकर उनकी राय अच्छी नहीं है, क्योंकि इसमें इस्तेमाल करो और फेंको की रणनीति अपनाई जाती है। उन्होंने सवाल किया कि राजनीति में सत्तारूढ़ पार्टी में शामिल होने की होड़ रहती है, ऐसे में लोगों की विचारधारा और निष्ठा कहां चली जाती है। केंद्रीय सड़क परिवहन एवं राजमार्ग मंत्री और भारतीय

जनता पार्टी (भाजपा) के वरिष्ठ नेता गडकरी ने यह भी कहा कि देश में विचारधारा नहीं, बल्कि विचारों का खालीपन समस्या है। उन्होंने कहा,कई लोग सत्ता में आने वाली पार्टी में शामिल हो जाते हैं, ऐसे में उनकी विचारधारा और निष्ठा कहां चली जाती है। हमारे देश में विचारधारा नहीं, बल्कि विचारों का खालीपन समस्या है। पुणे में मराठा सेवा संघ की ओर से आयोजित एक कार्यक्रम में गडकरी ने कहा कि अगर देश को प्रगति करनी है, तो सबसे पहले अपने घर-परिवार का ख्याल रखना होगा।

प्रियंका के गालों जैसी बनवाएंगे दिल्ली की सड़कें

- भाजपा के पूर्व सांसद रमेश बिधूड़ी का विवादित बयान, कांग्रेस हमलावर
- पवन खेड़ा ने कहा-ये घटिया आदमी की मानसिकता,संघ के दिए संस्कार

नई दिल्ली (एजेंसी)। दिल्ली से भाजपा कैंडीडेट रमेश बिधूड़ी ने एक जनसभा को संबोधित करते हुए प्रियंका गांधी पर आपत्तिजनक कमेंट किया। बयान का वीडियो कांग्रेस नेता पवन खेड़ा ने एक्स पर शेयर किया।

रमेश बिधूड़ी वीडियो में कहते दिख रहे हैं, लालू ने वादा किया था कि बिहार की सड़कों को हेमा मालिनी के गालों जैसा बना दूंगा, लेकिन वे ऐसा नहीं कर पाए। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, जैसे ओखला और संगम विहार की सड़कें बना दी हैं, वैसे ही कालकाजी में सारी की सारी सड़कें प्रियंका गांधी के गाल जैसी बना दूंगा। पवन खेड़ा ने इस बयान पर ऐतराज जताया। उन्होंने सोशल मीडिया पर लिखा,यह बदतमीजी सिर्फ इस घटिया आदमी की ही मानसिकता नहीं दिखाती, यह है इसके मालिकों की असलियत। ऊपर से लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के संस्कार आपको भाजपा के इन ओछे नेताओं में दिख जाएंगे। बिधूड़ी ने कहा- कांग्रेस लालू से कहे कि वो हेमा मालिनी से माफी मांगें कांग्रेस के विरोध पर रमेश बिधूड़ी ने कहा,मैंने कोई विवादित बयान नहीं दिया है।

मुख्यमंत्री ने उज्जैन में किया राहगीरी आनंद उत्सव का शुभारंभ

डॉ. यादव ने गाया गंगा तेरा पानी अमृत, माँ क्षिप्रा तेरा पानी अमृत भजन

मुख्यमंत्री ने घुमाई लाठी, घुड़सवारी की, उज्जैन में राहगीरी में किया ऊं नम: शिवाय का जाप

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार को उज्जैन प्रवास के दौरान कोठी रोड पर राहगीरी आनंद उत्सव में शामिल हुए, उन्होंने नागरिकों को नियमित योग और व्यायाम करने की सलाह दी। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने दीप प्रज्ज्वलन कर राहगीरी आनंद उत्सव का शुभारंभ कर संस्कृति मंचों की प्रस्तुतियों का आनंद लिया। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने रविवार सुबह लाठी घुमाई, घोड़े की सवारी भी की। ऊं नम:शिवाय का जाप किया। मौका था उज्जैन में राहगीरी का।

राहगीरी के लिए कोठी रोड के करीब एक किलोमीटर से ज्यादा लंबे रास्ते को सजाया गया। इस दौरान मुख्यमंत्री यादव ने फूड स्टॉल पर मीठा भी चखा। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने मंच से चंगा तेरा पानी अमृत, मां क्षिप्रा तेरा पानी अमृतज भजन भी गाया।

सांसद श्री अनिल फिरोजिया, विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा, महापौर श्री मुकेश टटवाल, नगर निगम सभापति श्रीमती कलावती यादव, श्री विवेक जोशी, श्री बहादुर सिंह बोर मुंडला सहित जन-प्रतिनिधि और नागरिक भी उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने जनता से आह्वान किया कि बच्चों के साथ परिवार के युवा भी इस राहगीरी में निकलें और प्रतिदिन इसका अनुसरण करें। मुख्यमंत्री को अपने बीच पाकर उज्जैन के नागरिकों में उत्साह दिखाई दिया, सभी ने मुख्यमंत्री के साथ फोटो भी खिंचवाये।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने घुड़ सवारी करते हुए उपस्थित नागरिकों का अभिवादन किया। इस अवसर पर विभिन्न संस्थाओं के प्रतिनिधियों ने मुख्यमंत्री का साफा एवं माला पहनाकर अभिनंदन किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने राहगीरी आनंद उत्सव के दौरान स्वर्णिम मध्यप्रदेश की पेंटिंग का भी विमोचन किया गया। इस दौरान प्लास्टिक मुक्त उज्जैन थीम पर आयोजित जूट थैला वितरण कार्यक्रम का शुभारंभ भी किया।

एजुकेशन में प्राइवेटाइजेशन सही नहीं, खर्च बढ़ाना होगा

नई दिल्ली (एजेंसी)। लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने युवाओं का बेहतर भविष्य बनाने को लेकर अपनी राय जाहिर की। शनिवार को उन्होंने भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान मद्रास के कुछ छात्रों के साथ बातचीत की। उन्होंने कहा कि

- मद्रास आईआईटी के स्टूडेंट से बोले कांग्रेस नेता राहुल गांधी, की चर्चा

निजीकरण और वित्तीय प्रोत्साहन के माध्यम से गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हासिल नहीं की जा सकती। राहुल ने इस दौरान कांग्रेस और भाजपा के बीच अंतर भी बताया। उन्होंने कहा कि हमारी पार्टी का मानना है कि संसाधनों का वितरण अधिक निष्पक्ष तरीके से करना चाहिए। विकास व्यापक और समावेशी होना चाहिए। कांग्रेस सांसद ने बीजेपी को लेकर कहा, आर्थिक नजरिए से वे ट्रिपल-डाउन में विश्वास करने वाले लोग हैं। सामाजिक मोर्चे पर हमारा मानना है कि समाज जितना ज्यादा सामंजस्यपूर्ण होगा, जितने कम लोग आपस में लड़ेंगे, यह स्थिति देश के लिए उतनी ही बेहतर होगी। राहुल गांधी ने अपने यूट्यूब चैनल पर यह

वीडियो पोस्ट कर कहा, 'मुझे हाल ही में आईआईटी मद्रास के कुछ प्रतिभाशाली युवाओं से बात करने का सौभाग्य मिला। साथ में, हमने जानने का प्रयास किया कि सफलता का वास्तव में क्या मतलब है। हमने भारत के भविष्य को आकार देने में रिसर्च, शिक्षा की अहम भूमिका और एक ऐसे उत्पादन पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा देने की आवश्यकता पर चर्चा की जो निष्पक्षता, नवाचार और सभी के लिए अवसर को महत्व देता है।'

शहर की सांस्कृतिक विरासत है भोपाल उत्सव मेला: राज्यपाल

मेले कला और संस्कृति को पहुंचाते हैं जन-जन तक , भोपाल उत्सव मेला समापन समारोह

भोपाल (नप्र)। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा है कि भोपाल उत्सव मेला व्यापारिक मेला ही नहीं है, बल्कि देश की संस्कृति साहित्य और कला को जन-जन तक पहुंचाने का माध्यम बना है। मेले की देश, प्रदेश में विशिष्ट पहचान बनी है। उन्होंने मेले की सफलता के लिए मेले से जुड़े सभी हितधारकों आयोजकों और भोपाल के निवासियों को बधाई दी है। राज्यपाल श्री पटेल आज भोपाल उत्सव मेला के समापन समारोह को संबोधित कर रहे थे।

राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल ने कहा कि संस्कृति, सभ्यता और आस्था के प्रतीक होते हैं। शहर की सांस्कृतिक विरासत होते हैं। भोपाल उत्सव मेला इसका आदर्श है। उन्होंने मेले के संस्थापक स्वर्गीय रमेश अग्रवाल जी के मेला शुरू करने में योगदान की सराहना करते हुए गुजरात में उनसे मुलाकात के प्रसंगों का स्मरण किया। उन्होंने कहा कि आज की भाग दौड़ भरी जिंदगी में परिवार के साथ आत्मीय आनंद और सुकून के पल बिताने का अवसर देने में मेलों का महत्वपूर्ण योगदान है। वास्तव में मेले सामुदायिक एकता और पारस्परिक संवाद के केंद्र होते हैं, जहां बिना किसी भेदभाव के अमीर गरीब शहरी ग्रामीण बच्चे युवा और बुजुर्ग मिलकर व्यंजनों का आनंद लेते हैं। मनोरंजक गतिविधियों में भाग लेते हैं। उन्होंने कहा कि मेले आर्थिक गतिविधियों को भी बढ़ावा देते हैं मेले के मनोरंजन झूले प्रदर्शनी व्यंजन के स्टॉल के साथ विविध उत्पादों का आकर्षक तरीके से प्रदर्शन और ऑफर ग्राहक को खरीदारी के लिए प्रेरित करता है। उन्होंने मेले में व्यापारिक व्यावसायिक गतिविधियों के साथ ही सांस्कृतिक कार्यक्रमों में कलाकारों, साहित्यकारों और कवियों को प्रतिभा प्रदर्शन का अवसर देने के लिए मेला समिति की सराहना की।

सांसद श्री आलोक शर्मा ने कहा कि भोपाल के गौरवशाली इतिहास, संस्कृति और परंपराओं में शामिल भोपाल उत्सव मेले की शुरुआत में स्वर्गीय श्री रमेश चंद्र अग्रवाल का महत्वपूर्ण योगदान है। उनके कार्य समाज सेवा की प्रेरणा देते है। उन्होंने कहा कि मेले लोगों को जोड़ने मिलाने का काम करते हैं। मेले के विकास के लिए वह अपने स्तर से सभी संभव प्रयास करेंगे। महापौर श्रीमती मालती राय ने स्वर्गीय रमेश अग्रवाल के योगदान का स्मरण करते हुए मेले की निरंतरता को बनाए रखने के लिए मेला समिति को बधाई दी। विधायक श्री भगवान दास सबनानी ने मेला समिति की सामाजिक सरोकारों में सहभागिता के लिए सराहना की। उन्होंने कहा कि स्वर्गीय श्री रमेश अग्रवाल के द्वारा रोपित बीज को वट वृक्ष बनने के लिए मेला समिति के पदाधिकारी साधुवाद के पात्र हैं।

कार्यक्रम के प्रारंभ में मेला समिति के पदाधिकारी द्वारा अतिथियों का शाल श्रीफल स्मृति चिन्ह भेंट कर स्वागत किया गया। समिति की ओर से सौंदर्या ग्रुप के डायरेक्टर श्री नवीन राय, भोपाल उत्सव मेला समिति के कोषाध्यक्ष श्री अशोक गुप्ता और पूर्व महामंत्री श्री विनोद गुप्ता को भोपाल मेला उत्सव समिति की ओर से सम्मान प्रदान किया गया। स्वागत उद्बोधन भोपाल उत्सव मेला समिति के अध्यक्ष श्री मनमोहन अग्रवाल ने दिया। आभार प्रदर्शन समिति के महामंत्री श्री अजय सोगाने ने किया।

इस अवसर पर सांसद श्री आलोक शर्मा, महापौर श्रीमती मालती राय, विधायक श्री भगवान दास सबनानी, दैनिक भास्कर समूह के प्रबंध निदेशक श्री सुधीर अग्रवाल एवं आई.ई.एस विश्वविद्यालय के कुलाधिपति श्री बीएस यादव उपस्थित थे।

'सांस' से जुड़ी बीमारियों को लेकर सतर्क है मोदी सरकार

स्वास्थ विभाग ने कहा-किसी भी स्थिति से निपटने को हैं तैयार

नई दिल्ली (एजेंसी)। चीन में कोविड जैसे वायरस ह्यूमन मेटान्यूमोवायरस के बढ़ते मामलों के बीच भारत सरकार ने शनिवार को जॉइंट मॉनीटरिंग ग्रुप की बैठक की। बैठक के बाद सरकार ग्रुप ने कहा कि फ्लू के मौसम को देखते हुए चीन की स्थिति असामान्य

नहीं है। केंद्र सरकार ने एक बयान में कहा-देश सांस से जुड़ी बीमारियों के मामलों में किसी भी बढ़त से निपटने के लिए पूरी तरह तैयार है। चीन में फ्लू के बढ़ते मामलों की वजह यह वायरस है। इस मौसम में इन्फ्लुएंजा के सामान्य वायरस हैं। सरकार स्थिति पर कड़ी नजर रख रही है। साथ ही एचएमपीवी से चीन की स्थिति के बारे में समय-समय पर अपडेट देने को कहा है। बैठक डायरेक्ट्रेट जनरल ऑफ हेल्थ सर्विस की अध्यक्षता में आयोजित की गई थी। इसमें विश्व स्वास्थ्य संगठन , सेंटर फॉर डिजास्टर कंट्रोल, इंटीग्रेटेड डिजीज सर्विलांस प्रोग्राम , नेशनल सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल, इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च,

- मोदी सरकार बोली-एचएमपीवी इस मौसम में सामान्य वायरस

इमरजेंसी मेडिकल रिलीफ डिवीजन और एम्स-दिल्ली सहित कई एक्टपर्ट्स ने भाग लिया। सरकार बोली-एहतियात के तौर पर टेस्टिंग लैब बढाएंगे सरकार ने कहा कि भारत में एचएमपीवी और अन्य वायरस के जरिए इन्फ्लूएंजा जैसी बीमारी और इन्फ्लूएंजा के लिए गंभीर तीव्र श्वसन बीमारी के लिए मजबूत निगरानी सिस्टम मौजूद है। दोनों एजेंसियों के आंकड़ों से पता चलता है कि कोई असामान्य बढ़त नहीं हुई है।

नाथ सम्प्रदाय ने योग के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया - मुख्यमंत्री

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में 'अध्यात्म प्रवाह' पुस्तक का विमोचन किया

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा है कि भगवान गोरक्षनाथ को भगवान श्री महाकालेश्वर की नगरी एवं सम्राट विक्रमादित्य-भृतहरी की अवंतिका से प्रणाम करता हूं। उन्होंने कहा कि नाथ सम्प्रदाय ने योग के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है और आज भी गौ-रक्षा, योग, अध्यात्म, समाजसेवा में विशेष काम कर रहे है। भारत के लोकतंत्र में शुरू से ही नाथ सम्प्रदाय का प्रतिनिधित्व रहा है। वर्तमान में राज्यसभा सांसद बालयोगी संत श्री उमेशनाथ जी महाराज उज्जैन से प्रतिनिधित्व कर रहे हैं।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार शाम सामाजिक शोध-संस्थान के सभागृह में आयोजित गोरक्ष शक्तिधाम सेवार्थ फाउंडेशन के तृतीय अखिल भारतीय सारस्वत सम्मान समारोह में शामिल हुए। मुख्यमंत्री का पुष्प-गुच्छ और शॉल-श्रीफल देकर सम्मान किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कार्यक्रम में 'अध्यात्म प्रवाह' पुस्तक का विमोचन भी किया।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि सभी अखिल भारतीय सारस्वत पुरस्कार विजेताओं का मैं उनके उल्लेखनीय कार्यों के लिए अभिनन्दन करता हूं। कार्यक्रम में उज्जैन जिले के प्रभारी मंत्री श्री गौतम टेटवाल एवं राज्यसभा सदस्य बालयोगी संत श्री उमेशनाथ जी महाराज ने योग और समाजसेवा के महत्व पर प्रकाश डाला। स्वागत भाषण डॉ. शिवनंदन जोशी द्वारा दिया गया। कार्यक्रम में महामंडलेश्वर स्वामी शांति स्वरूपानंद जी महाराज और विधायक श्री अनिल जैन कालूहेड़ा आदि उपस्थित रहे।

हरियाणा में लड़कियों के लिए सुरक्षित नहीं स्कूल !

- 700 से ज्यादा स्कूलों में शौचालय ही नहीं, चौंकाने वाली रिपोर्ट

चंडीगढ़ (एजेंसी)। केंद्रीय शिक्षा मंत्रालय की ओर से इस हफ्ते की शुरुआत में स्कूलों की हालत को लेकर कुछ आंकड़े जारी किए गए। इसके मुताबिक, हरियाणा के स्कूलों में बुनियादी ढांचे की कमी साफ तौर पर नजर आती है।

राज्य में कुल 23,517 स्कूल हैं जिनमें से 767 में लड़कियों के लिए शौचालय नहीं हैं। 1,263 स्कूल ऐसे भी हैं जहां लड़कों के लिए टॉयलेट नहीं हैं। आंकड़े बताते हैं कि हरियाणा में 22,918 स्कूलों में लड़कियों के लिए शौचालय हैं, मगर उनमें से केवल 22,750 ही इस्तेमाल करने लायक हैं। इसी तरह 22,421 स्कूलों में लड़कों के लिए शौचालय हैं, जिनमें से 22,254 ही चालू हैं।

नीतिश की 'ना' पर बिहार में सियासी घमासान

आरजेडी बोली-कौन उन्हें बुला रहा है, हमें जरूरत नहीं

पटना (एजेंसी)। जेडीयू के राष्ट्रीय अध्यक्ष और बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने राष्ट्रीय जनता दल (राजद) के सुप्रीमो लालू प्रसाद यादव के खुले ऑफर को ठुकरा दिया है। शनिवार को गोपालगंज और रविवार को मुजफ्फरपुर में प्रगति यात्रा के दौरान नीतिश कुमार ने बगैर सवाल किए कहा कि गलती से दो बार उनके साथ चले गए थे, अब इधर उधर नहीं जाएंगे। लालू को नीतिश

- बीजेपी-जेडीयू ने भी खोला मोर्चा, कहा-लालू डरे हुए हैं

की ना पर सर्दी के मौसम में सियासी पारा हाई हो गया है। राजद ने कहा है कि उन्हें बुला कौन रहा है तो बीजेपी और जदयू ने यह कहकर पलवार किया है कि लालू यादव डरे हुए हैं इसीलिए ऐसा ऑफर दे रहे हैं। कांग्रेस ने कहा है कि नीतिश कुमार जब ना कहते हैं तो उसका मतलब ना नहीं होता है। रविवार को नीतिश कुमार प्रगति यात्रा पर मुजफ्फरपर पहुंचे। करीब 450 करोड़ की योजनाओं की सौगात जिला वासियों को दी। इस दौरान वे मीडिया कर्मियों से मुखातिब हुए। सीएम ने कहा कि हम गलती ते दो बार उनके साथ चले गए थे। अब पुराने साथी के साथ आ गए हैं। अब उधर कभी नहीं जाएंगे। लालू राबड़ी सरकार पर आरोप लगाते हुए नीतिश कुमार ने कहा कि उन लोगों ने महिलाओं के लिए कुछ नहीं किया। शाम में कोई घर से बाहर नहीं निकलता था। विकास का सब काम हमने सत्ता में आने के बाद किया। नीतिश कुमार के इस बयान पर राजद और कांग्रेस की सख्त प्रतिक्रिया सामने आई है।

महाकुंभ में श्रद्धालुओं के लिए चलेंगी 40 इलेक्ट्रिक बसें

- 15 बसों का संचालन 13 जनवरी से पहले होगा, 25 बसें मौनी अमावस्या पर आएंगी

प्रयागराज (एजेंसी)। महाकुंभ में श्रद्धालुओं को दिक्कत न हो ऐसे में प्रयागराज में इलेक्ट्रिक बसों का संचालन शुरू हो रहा है। 13 जनवरी से पहले शहर की सड़कों पर ई-बसें दौड़ने लगेंगी। इन इलेक्ट्रिक बसों से श्रद्धालु आ-जा सकेंगे। शुरुआत में श्रद्धालुओं के लिए 15 इलेक्ट्रिक बसों का संचालन होगा। 29 जनवरी को मौनी अवास्या के प्रमुख स्नान पर्व तक 25 और बसों को लखनऊ मुख्यालय से प्रयागराज लाया जाएगा। ये इलेक्ट्रिक बसें विभिन्न रूटों पर श्रद्धालुओं को परिवहन सेवा उपलब्ध कराएंगी।

दतिया में अलाव ताप रहे परिवार को कार ने कुचला

- घर के बाहर हुई घटना, 8 वर्षीय बच्चे की मौत, तीन का इलाज जारी

दतिया (नप्र)। दतिया के थरेट थाना क्षेत्र के चीना गांव में घर के बाहर अलाव ताप रहे एक परिवार को कार ने कुचल दिया। घटना में 8 साल के मासूम बच्चे की मौत हो गई। वहीं, परिवार के तीन सदस्यों का इलाज चल रहा है। पुलिस ने रविवार को शव का पीएम कराकर परिजनों को सौंप दिया है। चीना गांव निवासी हरदयाल रजक ने बताया कि शनिवार रात घर के बाहर चबूतरे पर मेरे दो बेटे राम किशोर, मनोज, भतीजा चन्द्र प्रकाश और मेरा नाती मनीष (8) अलाव से ताप रहे थे। इसी दौरान गांव का ही जितेंद्र दौहरे अपनी बिना नंबर की कार लापरवाही से चलाता हुआ आया और सभी लोगों को कुचल दिया। सभी को सेवढ़ा अस्पताल में भर्ती कराया गया, जहां राम किशोर, मनोज और चन्द्र प्रकाश का इलाज जारी है। जबकि डॉक्टरों ने 8 वर्षीय नाती मनीष को इंदरगढ़ अस्पताल रेफर किया। जहां डॉक्टरों ने नाती को मृत घोषित कर दिया था। थरेट थाना प्रभारी अनफासुल हसन ने बताया कि घायलों का इलाज जारी है। मामले में कार चालक जितेंद्र दोहरे के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है।

फर्जी आईटीआर भरते थे राजेश-राधिका शर्मा

वेंचर्स कंपनियों में पार्टनर बनकर किया निवेश और कैश ट्रांजेक्शन

भोपाल (नप्र)। आयकर विभाग की छापेमारी की जद में आए त्रिशूल कंस्ट्रक्शन के प्रमोटर राजेश शर्मा और उनकी पत्नी राधिका शर्मा इनकम टैक्स रिटर्न (आईटीआर) में फर्जी जानकारी भरते थे। इसका खुलासा उन्होंने खुद आयकर विभाग के अफसरों को दिए रिकॉर्डेड बयान में किया है। विभाग को आशंका है कि प्रॉपर्टी में अघोषित निवेश के जरिए कम से कम 50 करोड़ रुपए की आयकर चोरी इन्होंने की है। जिसके लिए मल्टी वेंचर्स कंपनी बनाकर उसमें खुद की भूमिका पार्टनर के रूप में रखी थी और इसी के जरिए अघोषित निवेश और कैश ट्रांजैक्शन किया जा रहा था। आयकर विभाग ने राजेश शर्मा और उसकी पत्नी राधिका शर्मा के खिलाफ आयकर अधिनियम की धारा 132 (4) और 132 (9) में पूछताछ की है। सर्च के दौरान और इसके बाद दोनों के जो बयान लिए गए हैं, उसे रिकॉर्ड किया गया है। इसी में आयकर की बड़ी चोरी का खुलासा हुआ है। 18 दिसंबर को क्वॉलिटी ग्रुप, ईशान ग्रुप और राजेश शर्मा एंड ग्रुप के ठिकानों की तलाशी और जब्ती की कार्रवाई की गई थी। सर्चिंग के बाद की जांच में विभाग ने पाया है कि राजेश शर्मा और उनकी संस्थाओं ने बड़े पैमाने पर राजस्व चोरी की है। इसके लिए अघोषित निवेश और फर्जी ऐक्सपैंडीचर मिला है। अकेले प्रॉपर्टी में निवेश के जरिए 50 करोड़ से अधिक की टैक्स चोरी किए जाने की स्थिति विभाग के संज्ञान में आई है।

रेडियो शाखा के इंस्पेक्टर के घर 20 लाख की चोरी

- भोपाल की पॉश दानिश हिल्स व्यू कॉलोनी में वारदात, जेवरात और नकदी ले भागे बदमाश

भोपाल (नप्र)। भोपाल के कोलार थाना क्षेत्र स्थित कबर्ड कैंपस दानिश हिल्स व्यू कॉलोनी में रहने वाले रेडियो शाखा के इंस्पेक्टर से घर से चोर बीस लाख के जेवरात और बीस हजार केश लेकर फरार हो गए। परिवार 31 दिसंबर से अपने शासकीय आवास में था। शनिवार की रात को लौटने पर वारदात का खुलासा हुआ। कोलार थाना पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। फिलहाल पुलिस को घटना स्थल के करीब कोई सीसीटीवी फुटेज नहीं मिले हैं। घटना स्थल के नजदीक बीजेपी प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा का निज निवास भी है। जानकारी के मुताबिक रेडियो शाखा में पदस्थ इंस्पेक्टर नरोत्तम चौहान की पत्नी सुमन चौहान और उनका परिवार दानिश हिल्स व्यू कॉलोनी के मकान नंबर 4/166 में रहते हैं। हालांकि ड्यूटी के चलते नरोत्तम चौहान भदभदा स्थित रेडियो कॉलोनी में अपने सरकारी आवास में रहते हैं और छुट्टियों में पत्नी-बेटे के साथ अपने निज निवास में रहने आते हैं। 31 दिसंबर को नरोत्तम चौहान की पत्नी और परिवार भदभदा स्थित रेडियो कॉलोनी के सरकारी आवास पर चला गया था। शनिवार को जब परिजन घर लौटे तो मेन गेट का ताला टूटा था। घर के अंदर रखी अलमारी का लॉकर टूटा हुआ था। अलमारी में रखा करीब 20 हजार कैश और सोने चांदी के जेवरात गायब थे।

बॉक्स सहित ले गए सोने के हार

आरोपी कई हार डिब्बे सहित लेकर फरार हुए हैं। जबकि कुछ के डिब्बे और पालिथीन घर में ही पड़ी मिली हैं। इंस्पेक्टर के परिजनों ने तत्काल कोलार पुलिस को सूचना दी। एफएसएल की टीम से स्पॉट मुआयना कराने के बाद रात 11:30 बजे पुलिस ने एफआईआर दर्ज कर जांच शुरू कर दी है।

पाश कॉलोनियों शुमार है दानिश हिल्स व्यू: जिस जगह पर चोरी की वारदात हुई है वह क्षेत्र भोपाल के पॉश इलाकों में आता है, इलाका पूरी तरह से शाम होते ही सुनसान हो जाता है ऐसे में यहां सुने घरों को निशाना बनाना चोरों के लिए काफी आसान रहा।

मौके पर नहीं मिले सीसीटीवी

जिस जगह पर चोरी की वारदात हुई है वहां पर पुलिस को

गुरु गोविंद सिंह जी के प्रकाश पर्व पर दूध तलाई गुरुद्वारा में दो दिवसीय कार्यक्रम का आयोजन

- मुख्यमंत्री डॉ. यादव गुरुद्वारा साहिब उज्जैन में गुरु अरदास में सम्मिलित हुए
- सीएम का सिख समाज ने किया सम्मान और अभिनंदन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव रविवार सुबह दूध तलाई स्थित गुरुद्वारा साहिब पहुंचे और निशान साहिब सेवा में सम्मिलित हुए, इस अवसर पर सिख समाज के प्रतिनिधि भी उपस्थित रहे। मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने यहां गुरुग्रंथ साहिब के समक्ष माथा ठेका और गुरु अरदास में सम्मिलित हुए।

गुरु गोविंद सिंह के साहिबजादों की वीरता को स्कूल शिक्षा पाठ्यक्रम में सम्मिलित करने पर सिख समाज ने मुख्यमंत्री का आभार माना। इस अवसर पर सरोपा भेंट कर मुख्यमंत्री डॉ. यादव का सम्मान और अभिनंदन किया गया। मुख्यमंत्री डॉ. यादव रविवार सुबह दूध तलाई स्थित गुरुद्वारे में पहुंचे। यहां उन्होंने अरदास में भाग लिया। इस दौरान गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी द्वारा मुख्यमंत्री डॉ. यादव का पगड़ी बांधकर स्वागत किया। सिख समाज ने सामूहिक रूप से मुख्यमंत्री का आभार माना और उनके गौरवमय कार्यकाल के लिए प्रार्थना की। इस दौरान सिख समाज के सुरेंद्र सिंह अरोड़ा, ग्रंथी चरण सिंह गिल, इकबाल सिंह गांधी, सभापति श्रीमति कलावती दीदी, विधायक अनिल जैन कालूहेड़ा उपस्थित रहे।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन में मैराथन को दिखाई हरी झंडी: मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने रविवार को सुबह मुंगी चौराहा उज्जैन से मैराथन 'गुड फॉर हेल्थ' को हरी झंडी दिखाकर रवाना किया।मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने कहा कि हम सब प्रण ले कि सुबह-सुबह भ्रमण अवश्य करें और योग करें, जिससे जीवन में आनंद बढ़ता है और स्वस्थ जीवन से बड़ा कोई आनंद नहीं होता है। स्वस्थ जीवन ही सबसे बड़ा सुख है।इस अवसर पर मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने उज्जैन की जनता को आने वाले मकर सक्रांति पर्व की बधाई और शुभकामना दी। विधायक श्री अनिल जैन कालूहेडा, सभापति श्रीमती कलावती देवी जन-प्रतिनिधि और बड़ी संख्या में नागरिक उपस्थित रहे।

सावित्रीबाई फुले जयंती पर 'बहुजन इंटेलेक्ट पिकनिक'

दीपड़ी फार्म हाउस, भोजपुर रोड में सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और बौद्धिक चर्चाओं से दी श्रद्धांजलि

भोपाल (नप्र)। भारत की पहली महिला शिक्षिका और सामाजिक सुधारक माता सावित्रीबाई फुले की जयंती के अवसर पर रविवार को दीपड़ी फार्म हाउस, भोजपुर रोड भोपाल में 'बहुजन इंटेलेक्ट पिकनिक' का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का उद्घाटन सुबह 11:30 बजे हुआ, जिसमें समाज के विभिन्न वर्गों से सैकड़ों प्रतिभागियों ने भाग लिया। वक्ताओं, सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और बौद्धिक चर्चाओं के माध्यम से माता सावित्रीबाई फुले के योगदान को श्रद्धांजलि दी गई।

आयोजन का उद्देश्य माता सावित्रीबाई फुले के योगदान को याद करना, उनके विचारों को प्रोत्साहित करना और बहुजन समाज के बीच बौद्धिक संवाद को बढ़ावा देना था। कार्यक्रम की शुरुआत में डॉ. (मेजर) मनोज राजे, कार्यक्रम संयोजक ने अपने संबोधन में कहा, यह आयोजन केवल एक पिकनिक नहीं, बल्कि माता फुले के महान कार्यों और उनके विचारों को सम्मानित करने का एक प्रयास है। उनका योगदान समाज में महिला शिक्षा और समानता के लिए अनमोल है। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि संघमित्रा गजभिए (अध्यक्ष बौद्धिष्ट महिला जागृति मंच) ने कहा, माता सावित्रीबाई फुले की शिक्षा हमें महिलाओं और वंचित समुदायों को सशक्त बनाने की दिशा में प्रेरित करती हैं।

धोती कुर्ते में क्रिकेट मैच, संस्कृत में कमेंट्री

अंकुर मैदान भोपाल में 6 से 9 जनवरी तक रोचक आयोजन

भोपाल (नप्र)। भोपाल के अंकुर खेल मैदान पर 6 जनवरी से 9 जनवरी तक आयोजित होने वाला क्रिकेट मैच एक नई पहल पेश करेगा। जहां एक ओर क्रिकेट के मैदान पर बैट-बॉल का जादू चलेगा, वहीं दूसरी ओर संस्कृत में कमेंट्री का सिलसिला रहेगा। यह अनोखा क्रिकेट मैच ब्राह्मण समाज के तत्वाधान में आयोजित हो रहा है, जिसमें प्रकांड ब्राह्मण और पंडित वैदिक मन्त्रोच्चार करते हुए 22 गज की पटिका पर छक्के-चौके लगाएंगे। अखिल भारतीय ब्राह्मण समाज के प्रदेश अध्यक्ष पंडित पुष्पेंद्र मिश्रा और महेंद्र मिश्रा, मीडिया प्रभारी आशीष द्विवेदी, अशोक भरद्वाज और अभिषेक दुबे सहित अन्य पदाधिकारी इस आयोजन को लेकर उत्साहित हैं। आयोजन को लेकर मध्य प्रदेश के पूर्व गृह मंत्री नरोत्तम मिश्रा को आमंत्रण दिया गया। आयोजन के बारे में जानकारी देते हुए पदाधिकारियों ने बताया कि इस मैच का उद्देश्य भारतीय संस्कृति को बढ़ावा देना और क्रिकेट के जरिए एकता और भाईचारे का संदेश देना है।

मुख्यमंत्री डॉ. यादव ने श्री चामुण्डा धाम में की पूजा अर्चना

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने उज्जैन की बड़नगर तहसील के ग्राम गजनीखेड़ी स्थित श्री चामुण्डा धाम मन्दिर में पूजा अर्चना कर देश और प्रदेश की खुशहाली की कामना की। केंद्रीय उपभोक्ता मामले, खाद्य एवं नवकरणीय ऊर्जा मंत्री श्री प्रहलाद जोशी, सांसद श्री अनिल फिरोजिया और विधायक श्री जितेन्द्र पंडयाने भी पूजा की।

इस अवसर पर जिला पंचायत अध्यक्ष, सरपंच, पुजारी श्री ईश्वरगिरी गोस्वामी सहित जन-प्रतिनिधि और गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। पुजारी श्री ईश्वरगिरी गोस्वामी ने बताया कि गजनीखेड़ी में यहां चंड-मुंड का संहार करने वाली मां चामुंडा का ऐतिहासिक भव्य मंदिर है। वर्तमान में यह मंदिर पुरातत्व विभाग के अधीन है। माना जाता है कि यहां माता की प्रतिमा दिन में तीन रूप धारण करती है। यह छठी या सातवीं शताब्दी का गुप्तकालीन मंदिर है, गर्भ गृह की प्रमुख मूर्ति

चामुंडा माता की है।

बाजू में स्कंद माता और प्रति स्कंद माता की मूर्ति है। दूसरी तरफ दुर्लभ शेषशायी गणेशजी की मूर्ति है। प्रसिद्ध पुरातत्वविद वी.एस. वाकणकर के अनुसार यह अत्यंत दुर्लभ मूर्ति है। इस प्रकार की दूसरी मूर्ति काठमांडू (नेपाल) में है। मंडप के दाहिनी ओर बाह्य भित्ति पर 11वीं सदी की पांच पंक्ति का नागरी लिपि में एक लेख उत्कीर्ण है। मंदिर के आंगन में दो छतरियां एवं एक कुंड स्थित है। यह स्थान निमाड़ सहित इंदौर क्षेत्र के अरझरे और लाड़ परिवार की कुलदेवी का स्थान माना जाता है।शारदीय नवरात्र में हजारों यात्री निमाड़ क्षेत्र से यहां आते है और तीन दिन तक रुककर पूजन-अर्चन करते हैं।

भारतीय साहित्य में है विश्व बंधुत्व, सामाजिक न्याय और समानता का स्वरः मंत्री सुश्री भूरिया

भोपाल(नप्र)। महिला बाल विकास मंत्री सुश्री निर्मला भूरिया ने कहा है कि हमें भारत जैसे महान देश का निवासी होने और भारतीय संस्कृति को आत्मसात करने का गर्व है। भारतीय साहित्य में धार्मिक, सांस्कृतिक, और दार्शनिक विचारों का विशेष महत्व है। भारतीय साहित्य केवल मनोरंजन ही नहीं करता, बल्कि यह जीवन शैली को भी बदल देता है। भारतीय साहित्य में राष्ट्र का स्वर उद्घाटित होता है। राष्ट्र गौरव का भाव भारतीय दृष्टि की विशेषता है। उन्होंने कहा कि हमारा देश सांस्कृतिक विविधता लिए हुए हैं इसलिए साहित्य को किसी एक

भाषा में चिन्हित नहीं किया जा सकता। हमारे साहित्यकारों ने संस्कृत, हिन्दी, मराठी, तमिल, बंगाली, उर्दू, गुजराती, और अन्य भारतीय भाषाओं में साहित्य रचा है और लगभग हर भाषा में महिला साहित्यकारों ने अपनी प्रभावी उपस्थिति दर्ज कराई है। मंत्री सुश्री भूरिया रविवार को भोपाल में अर्चना प्रकाशन द्वारा आयोजित एक दिवसीय राष्ट्रीय महिला साहित्यकार सम्मेलन को संबोधित कर रही थी। मंत्री सुश्री भूरिया ने कहा की भारतीय साहित्य में विश्व बंधुत्व, सामाजिक न्याय और समानता का स्वर है। इसे लोगों तक पहुचाने में धार्मिक, ऐतिहासिक और राजनीतिक साहित्य का योगदान रहा है। रचनाकारों ने साहित्य को हमारे समक्ष अनेक विधाओं में प्रस्तुत किया है। सभी तरह की शैली गद्य, पद्य और कविताओं के माध्यम से जटिल से जटिल विषयों को समझाने का प्रयास किया जाता है यही साहित्य की खूबसूरती है। उन्होंने कहा की आज के दौर में जब कुछ भी और कैसा भी साहित्य छप रहा है। ऐसे में अर्चना प्रकाशन ने न केवल अपनी गुणवत्ता को बनाये रखा वरन राष्ट्रवादी साहित्य और संस्कृति को संजोये रखने वालों साहित्य के लिए अर्चना प्रकाशन ने कोई समझौता नहीं किया। भारतीय संस्कृति को सहेजने और संवारने का जो कार्य अर्चना प्रकाशन ने किया है उसकी जितनी भी प्रशंसा की जाये उतनी कम है।

भोपाल से योग नगरी ऋषिकेश के लिए सीधी ट्रेन

आज हुबली से चलेगी; रानी कमलापति स्टेशन पर लेगी हॉल्ट

भोपाल (नप्र)। भोपाल से योग नगरी ऋषिकेश के लिए रेलवे ने स्पेशल ट्रेन शुरू की है। इससे पहले भोपाल के किसी भी स्टेशन से योग नगरी ऋषिकेश के लिए कोई सीधी ट्रेन नहीं थी। रेलवे अधिकारियों ने बताया कि यात्रियों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए गाड़ी संख्या 07363/07364 हुबली-योग नगरी ऋषिकेश-हुबली एक्सप्रेस स्पेशल ट्रेन का संचालन किया जा रहा है। यह ट्रेन भोपाल मंडल के हरदा, इटारसी, रानी कमलापति और बीना स्टेशनों पर ठहरकर जाएगी। गाड़ी संख्या 07363 हुबली से योग नगरी ऋषिकेश के लिए प्रत्येक सोमवार को 6 जनवरी से अगले निर्देश तक चलाई जाएगी। यह ट्रेन 13 और 27 जनवरी समेत 3, 10 और 24 फरवरी को संचालित नहीं होगी। इसी प्रकार, गाड़ी संख्या 07364 योग नगरी ऋषिकेश से हुबली के लिए प्रत्येक गुरुवार को 9 जनवरी से अगले निर्देश तक चलाई जाएगी। यह ट्रेन 16 और 30 जनवरी 2025 तथा 6, 13 और 27 फरवरी को संचालित नहीं होगी।

इन ट्रेनों का टाइम टेबल

गाड़ी संख्या 07363 हुबली-योग नगरी ऋषिकेश एक्सप्रेस विशेष ट्रेन हुबली से रात 8:30 बजे प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन अगले दिन हरदा रात 9:55 बजे, इटारसी रात 11 बजे, तीसरे दिन रानी कमलापति दोपहर 12:40 बजे, बीना दोपहर 3:15 बजे और अन्य स्टेशनों से होते हुए रात 11:30 बजे योग नगरी ऋषिकेश पहुंचेगी। इसी तरह, गाड़ी संख्या 07364 योग नगरी ऋषिकेश-हुबली एक्सप्रेस विशेष ट्रेन योग नगरी ऋषिकेश से सुबह 6:15 बजे प्रस्थान करेगी। यह ट्रेन अगले दिन बीना रात 12:50 बजे, रानी कमलापति रात 2:40 बजे, इटारसी सुबह 4:10 बजे, हरदा सुबह 5:31 बजे और अन्य स्टेशनों से होते हुए तीसरे दिन सुबह 6:30 बजे हुबली पहुंचेगी।

इन स्टेशनों पर रुकेगी ट्रेन

दोनों दिशाओं में यह ट्रेन इन स्टेशनों पर रुकेगी

धारवाड़, लोंडा, बेलगावी, घटप्रभा, मिराज, सांगली, करद, सतारा, पुणे, दौंड कोर्ड लाइन, अहमदनगर, कोपरगांव, मनमाड, भुसावल, हरदा, इटारसी, रानी कमलापति, बीना, वीरांगना लक्ष्मीबाई झांसी, ग्वालियर, आगरा कैंट, मथुरा, हजरत निजामुद्दीन, गाजियाबाद, मेरठ सिटी, मुजफ्फरनगर, देवबंद, टपरी, रुड़की और हरिद्वार।

गर्ल्स सेफ्टी के लिए बनाया खास जूता

अटैकर को मिलेगा बिजली का झटका; वीडियो रिकॉर्ड कर रजिस्टर्ड नंबर पर भेजेगा

भोपाल (नप्र)। मध्य प्रदेश विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद और राष्ट्रीय विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी संचार परिषद रवींद्र भवन परिसर में 31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस का आयोजन कर रहे हैं। इस आयोजन में जहां भोपाल के छात्रों ने कई नए मॉडल प्रस्तुत किए हैं, वहीं जयपुर के भारतीय विद्या आश्रम स्कूल के छात्रों और उनके शिक्षक ने मिलकर एक अनोखा डिजाइन किया है, जो लड़कियों की सुरक्षा के लिए तैयार किया गया है। यह जूता एक ओर जहां सामने वाले को करंट का झटका देगा, वहीं दूसरी ओर यह जीपीएस से भी कनेक्ट रहेगा। 6 जनवरी तक चलने वाले इस विज्ञान मेले में स्कूली छात्रों ने

अनूठे मॉडल प्रदर्शित किए हैं। शिक्षिका शुभी शर्मा, जो कि स्कूल में फिजिक्स की शिक्षिका हैं, ने बताया कि इस जूते को उन्होंने 'सेफ स्पार्क' नाम दिया है। उन्होंने इसे अपने दो छात्रों, अथर्व शर्मा और मोहनीश जोशी के साथ मिलकर तैयार किया है। इसमें एक रीचार्जेबल बैटरी लगाई गई है, जो सामने वाले को नॉन-लीथल इलेक्ट्रिक शॉक देती है। यह शॉक जानलेवा नहीं है, लेकिन इससे व्यक्ति अचेत हो सकता है। यह विशेष रूप से उन लड़कियों और महिलाओं के लिए डिजाइन किया गया है, जो अकेले बाहर जाती हैं। उन्होंने बताया कि इसे बनाने का मुख्य उद्देश्य महिलाओं के खिलाफ बढ़ते अपराधों को ध्यान में रखते हुए किया गया है। देश में हर साल 30,000 रेप केस और करीब डेढ़ लाख किडनैपिंग केस सामने आते हैं।

जूते में यह हैं फीचर

शुभी बताती हैं कि इस जूते में तरह के फीचर हैं। इसमें एक पुश बटन है, जो अटैकर को शॉक देता है। यह बटन जूते के सामने या साइड में छिपा हुआ होता है, जिसे आप बिना हाथ लगाए जूता पहने ही एक्टिवेट कर सकते हैं। इस शॉक के कारण अटैकर डिस्टेंस बनाए रखेगा और पास नहीं आएगा। इसके अलावा, इसमें एक जीपीएस सिस्टम भी है, जो जुड़े हुए तीन नंबरों को खतरे की स्थिति में लोकेशन सहित मैसेज भेजता है। इसके साथ ही, यह वीडियो रिकॉर्डिंग भी करता है, क्योंकि इसमें एक कैमरा भी लगाया गया है, ताकि एविडेंस तैयार किया जा सके।

20 से अधिक लोगों को दिया

शुभी बताती हैं कि इसके लिए हमने पहले 600 से अधिक लोगों पर सर्वे किया, ताकि यह समझा जा सके कि महिलाओं और लड़कियों को किन परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इसके बाद, हमने इसे तैयार किया और एक एनजीओ के माध्यम से 20 लोगों को इसे दिया भी है। इसकी कुल लागत 600 से 700 रुपए के बीच आई है।

संपादकीय

दिलजीत पर दो बात

प्रधानमंत्री का देश के किसी बड़े कलाकार से मिलना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन जिस तरह पंजाबी गायक दिलजीत दोसांझ की पीएम मोदी से मुलाकात को राजनीतिक रूप से तूल दिया जा रहा है, वह कई सवाल खड़े करता है। मसलन दिलजीत की मोदी से भेंट किसी दूरगामी सियासत का आगाज है या फिर यह सिर्फ एक सौजन्य भेंट थी? दूसरे की संभावना इसलिए कम है, क्योंकि दिलजीत बड़े स्टार सिंगर होने के साथ साथ अपने मोदी विरोधी सियासी स्टैंड के लिए जाने जाते रहे हैं। इसका कारण वह मोदी भक्तों के निशाने पर भी रहे हैं। खासकर किसान आंदोलन को लेकर दिलजीत का स्टैंड भाजपा और समर्थकों को नागवार गुजरा था। इन सब सच्चाइयों के बाद भी अगर मोदी ने दिलजीत से मुलाकात की तो इसके पीछे की संभावनाओ और मजबूरियों को समझने की जरूरत है। दिलजीत ने इस साल के पहले दिन मोदी से भेंट की। इसके बाद रात 10-45 बजे मोदी और दिलजीत ने कोलैब कर सोशल मीडिया 'इंस्टाग्राम' पर एक रील पोस्ट की। इस पर 52 लाख से ज्यादा लाइक्स आए और करीब 3.75 लाख बार शेयर किया गया। मुलाकात के बाद दिलजीत ने एक्स पर अपनी पोस्ट में लिखा कि यह 2025 की शानदार शुरुआत है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के साथ एक बहुत ही यादगार मुलाकात रही। हमने संगीत सहित कई चीजों पर बात की। मुलाकात के दौरान भी दिलजीत ने मोदी को देखते ही उन्हें सैल्यूट किया। मोदी ने भी 'सत श्री अकाल' कहकर दिलजीत का स्वागत किया। जब दिलजीत ने गुरुनानक पर गाना गया, तब मोदी ने टेबल पर थाप देनी शुरू कर दी। उन्होंने दिलजीत की पीठ भी थपथपाई। अपने म्युजिक कंसर्ट के कारण अक्सर विवादों में रहने वाले दिलजीत के जीवन में यकीनन यह मुलाकात एक नया संदेश लेकर आई। हालांकि इस भेंट पर शंभू बार्डर पर आंदोलन कर रहे किसान भड़के हुए हैं। परोक्ष रूप से उन्होंने इसे बेवफाई कहा है। क्योंकि दिलजीत ने कभी किसान आंदोलन का खुलकर समर्थन किया था। इसी तरह उन्होंने यह भी शिकायत की थी कि भारत में देशी गायकों को गाने का मौका नहीं मिलता। इसे भी मोदी सरकार के खिलाफ माना गया। इंदौर में तो दिलजीत के कंसर्ट का कई हिंदूवादी संगठनों ने खुलकर विरोध किया था। लेकिन दिलजीत ऐसी आलोचनाओं से बेखबर नजर आते हैं। इसी तरह मोदी ने दिलजीत को गले लगाकर विरोध कर रहे हिंदूवादी संगठनों को भी कड़ा संदेश दे दिया है, जो एक निश्चित एजेंडे के तहत काम कर रहे हैं। दूसरे, दिलजीत को अपने पाले में कर मोदी ने आंदोलन कर रहे किसान नेताओं को भी संदेश दे दिया है कि वो अपने हिसाब से काम करते हैं। मोदी ने जिस तरह से दिलजीत को तवज्जो दी है, उससे ऐसा लगता है कि दोसांझ के बहाने मोदी और शाह ने एक नया कार्ड चला है, जिसका तात्कालिक लक्ष्य जल्द ही दिल्ली प्रदेश के होने वाले विधानसभा चुनावों में पंजाबी वोटों को साधना और दूरगामी उद्देश्य पंजाब में भाजपा के पक्ष में कोई नया चेहरा खड़ा करना है। जहां तक दिल्ली का सवाल है तो वहां करीब 20 फीसदी आबादी पंजाबी भाषियों की है। इनमें हिंदू और सिख दोनो शामिल हैं। हालांकि यह कहना अभी मुश्किल है कि दिलजीत के साथ दिलजमाई को भाजपा वोटो में तब्दील कर पाएगी या नहीं, फिर भी इसे स्मार्ट मूव तो माना ही जा सकता है। अभी यह भी तय नहीं है कि दिलजीत ने राजनीति में आने का मन बनाया है या नहीं। अगर वो सियासत में उतरते हैं और भाजपा का कमल थामते हैं तो पार्टी उनकी लोकप्रियता के सहारे आगे बढ़ने के बारे में सोच सकती है।

नजरिया

रघु ठाकुर
लेखक समाजवादी विचारक हैं।

बाबा साहब को मानो, पूजो मत

हिंदुस्तान की संसद लगभग एक सप्ताह से अधिक केवल कोलाहल आरोप प्रत्यारोप के साथ अंततरू समाप्त हो गई। संसद के इस शीतकालीन सत्र में कोई उल्लेखनीय कार्य नहीं हो सका। बल्कि आखिरी के दो दिनों में तो कुछ नये विवाद पैदा हुए। प्रतिपक्षीय दलों और विशेषतरू कांग्रेस ने सरकार के ऊपर भारतीय संविधान के अवमानना का आरोप लगाया, तथा आरोप लगाया कि भाजपा सरकार बाबा साहब के संविधान को समाप्त कर रही है। हिंदुस्तान के गृहमंत्री श्री अमित शाह ने अपना उत्तर देते हुए एक नया विवाद खड़ा कर दिया। उन्होंने कहा कि बाबा साहब, बाबा साहब का नाम रटते हैं, अगर इतनी बार भगवान राम का नाम लेते तो स्वर्ग पहुंच जाते और उनके इस कथन को कांग्रेस ने बाबा साहब के अपमान के रूप में लिया या रणनीति के तौर पर यह आरोप लगाया कि श्री अमित शाह ने बाबा साहब का अपमान किया। श्री अमित शाह और भाजपा के प्रवक्ताओं ने इसका खंडन किया और कहा कि कांग्रेस ने श्री अमित शाह के बयान को कांट छांटकर डाला है। तथा उन्होंने श्री अमित शाह के भाषण का पूरा अंश मीडिया व सोशल मीडिया में डाला। यह भी सही है कि अपने भाषण में श्री अमित शाह ने आगे यह भी कहा था कि बाबा साहब का नाम लेकर बार-बार रटते हो पर मानते नहीं हो। परंतु देश के मानसिक रूप से विभाजित मीडिया ने अपने-अपने तयशुदा लाइन के हिसाब से इस मुद्दे को देश के सामने परोसा।

हालाँकि यह अम्बेडकर के नाम का विवाद कुछ ही समय बाद मीडिया में दृष्टिओझल हो गया क्योंकि श्री राहुल गांधी के ऊपर भाजपा के सांसद श्री सारंगी पर हमला करने का आरोप लगा जिसमें श्री सारंगी का सिर फूटा और तीन टाँके भी आये। श्री राहुल गांधी के खिलाफएफआईआर भी दर्ज की गई और अब यह खबर मीडिया में आई है कि इसकी जांच करने के लिये क्राइम ब्रांच को दे दिया गया। बहरहाल इस कांड के माध्यम से बाबा साहब के नाम पर चली चर्चा पीछे चली गई।

राजनीतिक दल हर घटना या कथन को अपने ढंग से तोड़ते-मरोड़ते हैं और उसके माध्यम से राजनैतिक लाभ या वोटों का लाभ उठाने का प्रयास करते हैं। इस घटनाक्रम से भी कांग्रेस या प्रतिपक्ष को बाबा साहब के अपमान का आरोप लगाने का कितना फायदा आने वाले चुनाव में मिलेगा, यह कहना कठिन है। यद्यपि एक विपक्षीय राजनैतिक दल के नाते उन्होंने यह प्रयास किया। कांग्रेस ने एक दिन बाद पूरे देश में धरना प्रदर्शन करने का भी ऐलान किया और उनकी पार्टी शाखाओं ने केंद्रीय नेतृत्व के निर्देश के अनुसार धरना प्रदर्शन किये भी। परंतु इन धरना प्रदर्शनों में केवल उनके दलीय कार्यकर्ता ही शामिल हुए, आम अनुसूचित जाति, जनजाति के लोगों की भागीदारी लगभग नहीं रही या नगण्य जैसी रही।

बाबा साहब अंबेडकर को अनुसूचित जाति का एक हिस्सा अपना मुक्तिदाता मानता है और उन्हें लगभग भगवान जैसा पूजता है। यहां तक कि शादी-विवाह में बाबा साहब का चित्र रखकर उन्हें पूजते हैं। जब कभी कहीं भी बाबा साहब की प्रतिमा को खंडित करने का प्रयास हुआ या उनके कोई अपमान की कोई घटना हुई तो अनुसूचित जाति के लोग उग्र प्रदर्शन करते हैं तथा बड़ी संख्या में उनकी भागीदारी होती है। परंतु कांग्रेस या विरोधी दल के विरोध प्रदर्शन में दलीय कार्यकर्ताओं के अलावा सामान्य अनुसूचित जाति के लोगों ने कोई विशेष हिस्सेदारी नहीं की और इससे लगता है कि शायद अनुसूचित जाति के लोगों ने इसे दलीय राजनैतिक विरोध माना है तथा उन्होंने कोई विशेष हिस्सेदारी नहीं की। श्री अमित शाह के बोलने का लहजा अभी भी कुछ गुजराती और दंभी अधिक है और वे अक्सर ऐसा बोल जाते हैं कि विपक्ष को मुद्दा मिल जाता है। हो सकता है कि, उनकी वह भावना न हो परंतु उनका लहजा उनकी भावना के विपरीत रहता है। देश के गृहमंत्री के लिये यह बोली व लहजा उचित नहीं है। क्योंकि गृहमंत्री का पद प्रधानमंत्री के बाद सबसे महत्वपूर्ण पद माना जाता है और वैसे आज अमित शाह गृहमंत्री तो हैं ही, भाजपा के अलिखित अध्यक्ष भी हैं। कई बार तो ऐसा लगता है कि इस देश में भाजपा के दो अध्यक्ष हो गये। एक प्रत्यक्ष और दूसरा वास्तविक अध्यक्ष। लगभग इसी प्रकार दो प्रधानमंत्री जैसे लगते हैं। एक प्रधानमंत्री भारत के बाहर विदेशी देशों के पर्यटन के लिये व दूसरे देश के लिये संभव है कि वे ज्यादा काम के बोझ व अधिक मानसिक थकान में हो। इसलिये श्री अमित शाह के बयान की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है।

जहां तक बाबा साहब को मानने का सवाल है, न तो सत्ताधारी दल याने भाजपा व केंद्र की सरकार उनके विचारों को मानती है और न ही प्रतिपक्षी ही मानते हैं। अगर बाबा साहब के विचारों को मानते तो उन्होंने तो यह कहा था कि श्वे राजकीय समाजवाद चाहते हैं याने संवैधानिक समाजवाद। ्य आज समाजवाद शब्द का उल्लेख यद्यपि भारत के संविधान के प्रस्तावना में जोड़ दिया गया है परंतु वह केवल शाब्दिक आदर्श है। व्यवस्था को समाजवादी बनाने और समाजवादी कार्यक्रमों को लागू करने के लिये कोई संवैधानिक व वैधानिक उपाय नहीं किये गये। कांग्रेस भी लगातार सत्ता में रही है। क्या उसने समाजवाद को अपना आदर्श माना है? और क्या अपने कार्यक्रमों में समाजवादी सिद्धांतों को लागू किया है? क्या विश्व व्यापार का समझौता समाजवादी विचारों का है? यह कौन नहीं जानता कि डब्ल्यूटीओ का समझौता विश्व पूंजीवाद और आर्थिक साम्राज्यवाद का है जो कांग्रेस सरकार के द्वारा किया गया था।

भाजपा भी बाबा साहब को याने उनके विचारों को नहीं मानती। कांग्रेस ने बाबा साहब का सम्मान नहीं किया या अपमान किया यह सबका आरोप है। परंतु भाजपा ने ऐसा कौन सा काम किया जिससे माना जाये कि वह बाबा साहब को मानती है। स्वदेशी के नाम पर सत्ता में आये और जो तीन हजार से अधिक सामानों को आयात के लिये प्रतिबंधित किया गया था। उस प्रतिबंध को हटाकर उन्हें भी विदेशी आर्थिक ताकतों के मुनाफे के हवाले कर दिया। आज जो विषमता बढ़ी है जिस प्रकार से अरबपतियों की संख्या बढ़ रही है और अतिगरीबी बढ़ रही है तो क्या यह बाबा साहब का समाजवाद है। कुछ दिनों पूर्व प्रधानमंत्री जी ने फिर कहा कि मैं देश में चार ही जाति मानता हूँ। युवा, किसान,मजदूर और महिला इसका अर्थ तो यही हुआ कि वे देश के जातिवाद को और उसकी असलियत को नकारकर जाति पर पर्दा डालना चाहते हैं। जैसा कि लगभग चार दशकों तक कम्युनिस्ट मित्र कहते रहे। दुनिया में दो जातियां हैं, एक अमीर और गरीब। तथा इन शब्दों की आड़ में सवर्णवाद को संरक्षण व पोषण करते रहे। हालांकि पिछले 2020 के आसपास उन्होंने अपनी भूल को महसूस किया और जो बात डॉ. लोहिया ने कही थी कि सामाजिक बदलाव के बगैर व्यवस्था का बदलाव संभव नहीं है, अब यद्यपि बगैर लोहिया का नाम लिये कम्युनिस्ट मित्रों ने कहना शुरू किया है कि जाति जनगणना होनी चाहिए आदि-आदि। चालीस-पचास वर्षों के बाद उन्हें यह सच्चाई मालूम पड़ी। भाजपा की सरकार भी जातिवाद को मिटाना नहीं चाहती बल्कि जातिवाद पर पर्दा डालकर सवर्णवाद को पोषित करने का खेल, खेल रही है। यह बात अलग है कि अपनी चुनावी जरूरत के अनुसार प्रधानमंत्री जी कभी-कभी अपनी जाति का उल्लेख करने लगते हैं कि वह पिछड़े हैं। यहां तक कि मंत्रिमंडल के गठन में कितने मंत्री बनाये उनमें कितने मंत्री पिछड़ी जातियों के हैं, यह आंकड़ा भी देश के सामने परोसा गया है।

दरअसल संघ व संघ नियंत्रित भाजपा ने सवर्णवाद को बचाने के लिये यह रास्ता निकाला है कि पिछड़े वर्ग की कुछ जातियों को हिस्सेदारी देकर याने उनकी जाति के व्यक्तियों को संवैधानिक पद देकर प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जाए। स्वरू कल्याणसिंह, सुश्री उमाभारती और ऐसे अनेकों नाम बताये जा सकते हैं जहां पर उन्होंने पिछड़ी जातियों के नेता का नाम मछली पकड़ने के गारे के रूप में किया है। व्यवस्था के स्तर पर सवर्णवाद को पोषित कर रहे हैं। पुस्तकों में बदलाव कर रहे हैं। इतिहास को बदल रहे हैं और इतिहास के तथ्यों पर पर्दा डाल रहे हैं। यह एक रणनीति है जिसमें जातिवाद को छिपाया जाता है। अगर भाजपा सरकार, या भाजपा बाबा साहब को मानती है तो फिर प्रधानमंत्री जाति के सत्य को कैसे नकार सकते हैं। फिर जाति जनगणना का विरोध क्यों? मुझे तो लगता है कि देश के तीनों समूह केवल एक-सत्ताधारी दल भाजपा व उनके सहयोगी दल, दो-प्रतिपक्ष के कांग्रेस व इंडिया गठबंधन के दल, तीन-बाबा साहब के नाम पर भीम आर्मी या बसपा जैसे दल कोई भी बाबा साहब को नहीं मानते। बाबा साहब जातियों का विनाश चाहते थे, उनकी पुस्तक है श्एनहिलेशन आफ कास्ट्य परंतु उनके नाम पर बनी हुई पार्टियाँ, जातिवादी व परिवारवादी पार्टियां बन गई हैं जबकि बाबा साहब जातिवाद व परिवारवाद और पूंजीवाद सभी के खिलाफथे। उन्होंने तो जीवन के आखिरी समय एक रेल मजदूरों की सभा को संबोधित करते हुए कहा था कि श्मेरे देश में दो शत्रु है एक ब्राह्मणवाद और दूसरा पूंजीवाद्य। ब्राह्मणवाद से तात्पर्य ब्राह्मण जाति से नहीं था बल्कि विषमता को मानने वाली जन्मना भेदभाव को मानने वाली प्रवृत्तियों से था। कुल मिलाकर बाबा साहब को चुनावी साल के लिये गेंद जैसा इस्तेमाल किया जा रहा है, चाहे सत्ताधारी दल हो, चाहे प्रतिपक्षीय दल और चाहे अनुसूचित जातियों के नाम पर बने दल हों। 15 अक्टूबर 1956 को बाबा साहब ने बौद्ध धर्म स्वीकार करते समय अपने हाथ से 22 प्रतिज्ञाओं को लिखा था, जिन्हें सभी दीक्षा लेने वालों ने स्वीकार किया था। जिन्हें मैं यहां उद्धत कर रहा हूं, ताकि बाबा साहब का नाम लेने वाले हर व्यक्ति, दल , संगठन इन कसौटियों पर अपने आप का मूल्यांकन कर सकें।

मैं ब्रह्मा, विष्णु और महेश में कोई विश्वास नहीं करूंगा और न ही मैं उनकी पूजा करूंगा। मैं राम और कृष्ण, जो भगवान के अवतार माने जाते हैं, में कोई आस्था नहीं रखूंगा और न ही मैं उनकी पूजा करूंगा। मैं गौरी, गणपति और हिन्दुओं के अन्य देवी-देवताओं में आस्था नहीं रखूंगा और न ही मैं उनकी पूजा करूंगा। मैं भगवान के अवतार में विश्वास नहीं करता हूं। मैं यह नहीं मानता और न कभी मानूंगा कि भगवान बुद्ध विष्णु के अवतार थे। मैं इसे पागलपन और झूठा प्रचार-प्रसार मानता हूं। मैं श्रद्धा (श्राद्ध) में भाग नहीं लूंगा और न ही पिंडदान दूंगा। मैं बुद्ध के सिद्धांतों और उपदेशों का उल्लंघन करने वाले तरीके से कार्य नहीं करूंगा। मैं ब्राह्मणों द्वारा निष्पादित होने वाले किसी भी समारोह को स्वीकार नहीं करूंगा। मैं मनुष्य की समानता में विश्वास करता हूं। मैं समानता स्थापित करने का प्रयास करूंगा। मैं बुद्ध के आष्टांगिक मार्ग का अनुसरण करूंगा। मैं बुद्ध द्वारा निर्धारित परमितों का पालन करूंगा। मैं सभी जीवित प्राणियों के प्रति दया और प्यार भरी दयालु रहूंगा तथा उनकी रक्षा करूंगा। मैं चोरी नहीं करूंगा। मैं झूठ नहीं बोलूंगा। मैं कामुक पापों को नहीं करूंगा। मैं शराब, ड्रग्स जैसे मादक पदार्थों का सेवन नहीं करूंगा। मैं महान आष्टांगिक मार्ग के पालन का प्रयास करूंगा एवं सहानुभूति और अपने दैनिक जीवन में दयालु रहने का अभ्यास करूंगा। मैं हिन्दू धर्म का त्याग करता हूं, जो मानवता के लिए हानिकारक है और उन्नति और मानवता के विकास में बाधक है क्योंकि यह असमानता पर आधारित है और स्व-धर्म के रूप में बौद्ध धर्म को अपनाता हूं। मैं दृढ़ता के साथ यह विश्वास करता हूं कि बुद्ध का धम्म ही सच्चा धर्म है। मुझे विश्वास है कि मैं (इस धर्म परिवर्तन के द्वारा) फिर से जन्म ले रहा हूं। मैं गंभीरता एवं दृढ़ता के साथ घोषित करता हूं कि मैं इसके (धर्म परिवर्तन के) बाद अपने जीवन का बुद्ध के सिद्धांतों व शिक्षाओं एवं उनके धम्म के अनुसार मार्गदर्शन करूंगा। पर बाबा साहब को पाषाण प्रतिमा में ढालकर, उनकी पूजा कर, उनके विचारों को समाप्त किया जा रहा है।

जीवन ज्ञान

प्रमोद भार्गव
लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

कृषि और आहार की सनातन संस्कृति

ओम सह नाववस्तु सह नौ भुनक्तु सह वीर्यं करवाव है तेजस्विनावधीतमस्तु मा विद्विशाव है।

भारतीय ज्ञान परंपरा में यह भोजन का मंत्र है, जो आज भी गाया जाता है। आहार के प्रति सम्मान का द्योतक है। आहार का सीधा संबंध उदर से है। अतएव उदर को आहार का भंडार गृह भी कहा जाता है। भोजन ग्रहण करने के बाद शरीर में पोशण के लिए आवश्यक रासायनिक व शारीरिक क्रिया होती है। यही भोजन को पचाने का काम करती है। पाचन की प्रक्रिया इसे पचाकर सप्त धातुओं में बदल देती है।

मानव जीवन अन्न पर निर्भर है। अन्न की उत्पादकता कृषि पर आश्रित हैं। कृषि के लिए उत्तम गुणवत्ता के बीजों की आवष्यकता रहती है। तथापि भोजन केवल कृषि से ही नहीं मिलता है, अपितु फल-फूल और जल व वन्य जीवों से भी मिलता है। परंतु उत्तम आहार अनाज की विभिन्न किस्मों और फलों को ही माना जाता है। इन सब भोज्य पदार्थों की उपलब्धता के तत्पश्चात भी दूध और शहद ऐसे आहार हैं, जिन्हें दोष रहित संपूर्ण आहार माना जाता है। इसलिए बीमारी की अवस्था में चिकित्सक दूध और फल के सेवन की सलाह देते हैं। ज्यादातर आयुर्वेदिक दवाएं मधु (शहद) के साथ खाई जाती हैं। शुद्ध षहद हजारों वर्षा तक खराब नहीं होती। हड़प्पा-मोहनजोदड़ो के उत्खन्न में पांच हजार साल से भी ज्यादा पुराना शहद का भरा मिट्टी का मटका निकला था, जिसकी शहद खाने योग्य थी। हमारी सनातन संस्कृति में भूखा नहीं सोने की अवधारणा ऋग्वैदिक काल से ही प्रचलन में रही है। हमारा यही पांपरारिक बोध मनुष्य ही नहीं, पालतू पशुओं की भूख की चिंता करता है। इसीलिए प्रत्येक सनातनी के घर में पहली रोटी गाय के लिए बनाई जाती है। क्योंकि गाय दूध, दही, घी और मठा तो देती ही है, खेती-किसानी के लिए हलधर बैल भी देती है। इसलिए बच्चों के पालन-पोषण की तरह गाय की भी चिंता की जाती है। इन्हीं आदर्श नैतिक मूल्यों को समाज में स्थापित करने की भावना से भक्तिकालीन कवि कबीरदास कहते हैं,

'साईं इतना दीजिए, जामे कुटुंब समाए।
आपहुं भूखा न रहे, साधु न भूखा जाए।

अपरिग्रह की यह चेतना आज भी भारतीय सनातन समाज में व्याप्त है।

सृष्टि की उत्पत्ति के साथ ही अन्न की आवश्यकता अनुभव हुई। इस समस्या के निवारण की दृष्टि से ही कृषि का आविष्कार हुआ। कृषि, अन्न और आहार एक-दूसरे के पर्याय हैं। एक के बिना दूसरे का अस्तित्व संभव नहीं है। कृषि कार्य में अनाज की उपलब्धता है और अनाज मानव जीवन की ऊर्जा है, अतएव कृषि को मानव कल्याण का साधन माना गया है। इसीलिए यजुर्वेद में राजा के प्रमुख कर्त्तव्य के बारे में कहा है कि वह कृशि की उन्नति करे, जिससे धन-धान्य में वृद्धि हो। शतपथ ब्रह्मांड में कृषि कार्य को चार प्रकारों में बांटा गया है। एक, कर्षण (खेत की जुताई करना), दो वपन (बीज बोना), तीन लवण (पके खेत की कटाई करना) और चार मर्दन अर्थात दाएं करके स्वच्छ अन्न प्राप्त करना। ऋग्वेद और अथर्ववेद में राजा वेन के पुत्र पृथु को कृषि विद्या का प्रथम आविष्कारक और इंद्र को पहला कृषक माना गया है। इंद्र ने मरुत देवों के साथ मिलकर सरस्वती नदी के किनारे की उर्वरा भूमि पर माधुर्ययुक्त जौ की खेती की-

इमं देवा मधुना संयुतं यवं, सरस्वत्यामधि मणावचर्कृशुः।
इंद्र आसीत सीरपतिः शतक्रतुः कीनाषा आसन् मरुतः सुदानवः
-अथर्ववेदः6.30.1

आर्य और अनार्यों के युग में जौ या गेहूं की खेती बीज भूमि में फेंककर की जाती थी। कालांतर में हल का आविष्कार हुआ और खेती हलों में बैल जोतकर की जाने लगी। हल का उपयोग भविष्य में एक अस्त्र के रूप में भी हुआ। बलराम का अस्त्र हल ही है। वैदिक काल में हलेश्टि यज्ञ होता था। सम्राट हल चलाकर खेत में उत्तम फसलों के बीज बोते थे। भारत कृषि प्रधान देश होने के साथ यहां की अर्थ-व्यवस्था की नींव कृषि पर ही टिकी है। हल कृषि कार्य का प्रतीक है। वेद और रामायण काल में हल दहेज में दिया जाता था। वधू चरखा साथ लेकर ससुराल जाती थी। राजा जनक ने हल चलाया था। यही हल एक घड़े से टकराया तो उसमें से सीता उत्पन्न हुईं। महाभारत काल में राजा कुरु ने जिस क्षेत्र में हल चलाया था, वह कुरुक्षेत्र कहलाया। बौद्ध काल में राजा हल चलाते थे और रानी बीज बोती थी। हमारे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री ने 'जय जवान, जय किसान' का नारा देकर षोर्य और कृशि को चिन्हित किया था। लोक कवि धाध ने कहा था, 'हल लगा पाताल, मिट चला सब अकाल।'

फसल में पौश्टिकता लाने के लिए वैदिक ऋषियों ने खाद के रूप में दूध, घी और शहद का मिश्रण डालने का उपाय किया था। उत्तम फसल के लिए धूप की भी आवष्यकता है। सूर्य की किरणों से फसल के पौधों को ऊर्जा मिलती है भोजन के रूप में ग्लूकोज मिलता है। सूर्य की किरणें ही बीज में अंकुरण और वृद्धि का कारण हैं। वायु से फसल को कॉर्बन डाइऑक्साइड मिलती है। वैदिक युग में भिन्न फसलों की पैदावार प्रमुख रूप से होती थी। धान, जौ, उड़द, तिल, मूंग, चना, कंगुनी, छोटा चावल, सांवा, कोदो, गेहूं और मसूर। दूध और उससे बनने वाले दही व घी का भोजन में सर्वाधिक प्रयोग होता था। क्योंकि इन्हें पौष्टिक एवं बलवर्धक माना गया है। ऋग्वेद में दूध में पकाए गए चावल का उल्लेख है, जिसे हम खीर कहते है। मिट्टी के घड़ों में भरे हुए दही का उल्लेख है, जिससे पनीर बनाया जाता था। घी में तलकर मालपूए बनाए जाते थे। जौ को कूटकर उसकी भूसि अलग करके भूनकर पीसते थे, उससे बने सत्तू को दही के साथ खाने का चलन था। इस सत्तू में आगे चलकर चना और गेहूं के साथ मोटे अनाज का उपयोग भी होने लगा था, जिसका चलन वर्तमान में भी है।

प्राचीन भारतीय समृद्धि और समरसता के मूल में प्राकृतिक संपदा,कृशि और गोवंश थे। प्राकृतिक संपदा के रूप में हमारे पास नदियों के अक्षय-भंडार के रूप में शुद्ध और पवित्र जल स्त्रोत थे। हिमालय और उष्ण कटिबंधीय वनों में प्राणी और वनस्पति की विषाल जैव-विविधता वाले अक्षुण्ण भंडार और त्रृतुओं के अनुकूल पोषक तत्व पैदा करने वाली जलवायु थी। मसलन मामूली सी कोशिशष आजीविका के लायक पौष्टिक खाद्य सामग्री उपलब्ध करा देती थी। इसीलिए नदियों के किनारे और वन प्रांतरों में मानव सभ्यता और भारतीय संस्कृति विकसित हुई। आहार की उपलब्धता सुलभ हुई तो सृजन और चिंतन के पुरोधा सृश्टि के रहस्यों की तलाष में जुट गए। आर्थिक संसाधनों को समृद्ध बनाने के लिए ऋषि-मनीषियों ने नए-नए प्रयोग किए। कृषि फसलों के विविध उत्पादनों से जुड़ी। फलतः अनाज,दलहन,चावल,तेलीय फसलें और मसालों की हजारों किस्में प्राकृतिक रूप से फली-फूलीं। 167 फसलों और 350 फल प्रजातियों की पहचान की गई। अकेले चावल की करीब 80 हजार किस्में हमारे यहां मौजूद हैं। 89 हजार जीव-जंतुओं और 47 हजार प्रकार की वनस्पतियों की खोज हुई। मनीषियों ने प्रकृति और जैव-विविधता के उत्पादन तंत्र की विकास सरंचना और प्राणी जगत के लिए उपयोगिता की वैज्ञानिक समझ हासिल की। इनकी महत्ता और उपस्थिति दिर्घकालिक बनी रहे,इसलिए धर्म व अध्यातम के बहाने अलौकिक तादात्म्य स्थापित कर इनके,भोग के लिए उपभोग पर व्यावहारिक अंकुश लगाया। दूरदृष्टा मनीशियों ने हजारों साल पहले ही लंबी ज्ञान-साधना व अनुभवजन्य ज्ञान से जान लिया था कि प्राकृतिक संसाधनों का कोई विकल्प नहीं है। वैज्ञानिक तकनीक से हम इनका रूपांतरण अथवा कायातंरण तो कर सकते हैं,किंतु तकनीक आधारित किसी भी आधुनिकतम ज्ञान के बूते इन्हें प्राकृतिक स्वरूप में पुनर्जीवित नहीं कर सकते ? तमाम दावों के बावजूद क्लोन से अभी तक जीवन का पुनरागमन नहीं हुआ है। गोया,हमारी कृषि एवं गौवंश आधारित अर्थव्यस्था उत्तरोतर विकसित व विस्तारित हुई। विकास का समावेशी रूप बना रहा। अपढ़ भी गरिमा के साथ स्वावलंबी रहा। नतीजतन हम अर्थ व वैभव संपन्न हुए और सोने की चिड़िया कहलाए।

ऋषियों ने आहार प्रणालियों में विकास के साथ इनके महत्व का निर्धारण करते हुए इन्हें मुख्य रूप से तीन प्रकारों में विभाजित किया। सात्विक आहार, राजसी आहार और तामसिक आहार। सबसे प्रमुख सात्विक आहार माना गया। क्योंकि यह आध्यात्मिक विकास के लिए प्रेरित करने वाला माना गया है। इसमें फल-सब्जियां, दूध-दही, अनाज एवं दालें और कई फलों के दाने षामिल है। यह आहार मानसिक शांति और पवित्रता को बढ़ावा देने के साथ, इंद्रियों पर नियंत्रण भी करता है। इससे मानसिक विवेक का संयम बना रहता है। राजसी आहार तामसिक और राजसिक गुणों वाला होता है। इसे आध्यात्मिक उन्नति की दृष्टि से श्रेष्ठ नहीं माना जाता है, क्योंकि इसमें तामसिक तत्वों की अधिकता होती है। यह तत्व मानसिक स्थिति में विचलन पैदा करते है। अतएव चित्त चंचल बना रहता है। इस तरह के भोज्य पदार्थों में तीखा और तला हुआ भोजन, मिठाई, तेज मसाले, शराब और अन्य नशीलें पदार्थ शामिल हैं। तामसिक आहार को सनातन संस्कृति में उचित नहीं माना गया है। क्योंकि यह मानसिक अस्थिरता और आध्यात्मिक उन्नति में बाधक होता है। इसे ग्रहण करने से क्रोध और कमुकता बने रहते हैं। इस आहार में मांस से बने भोजन और शराब शामिल रहते हैं।यदि हमारा भोजन पौष्टिक और पवित्र बना रहता है तो हम यजुर्वेद के उस मंत्र को साकार रूप में बदलने में सफल होंगे जो भोजन और ऊर्जा के बीच अंतरसंबंध की व्याख्या करता है। शरीर को जिंदा रहने के लिए आहार की और आत्मा को अच्छे विचारों की जरूरत पड़ती है, जो शुद्ध और सात्विक भोजन से ही संभव है,

ऊँ यन्तु नद्यौ वर्शन्तु पर्जन्या सुपिप्पला ओषधयो भवन्तु,
अन्नवताम मोदनवताम मामिक्षगमयति एशाम राजा भूयासम।
ओदनम् मुद्रवते परमेश्ठी वा एषः यदोदनः, पमावैनं श्रियं गमयति।

यजुर्वेद में दिए इस मंत्र का अर्थ है, 'हे ईश्वर! बादल पानी बरसाते रहें और नदियां बहती रहें। औषधीय वृक्ष फलें-फूलें और सभी वृक्ष फलदायी हों। मुझे अन्न और दुग्ध उत्पादन करने वालों से लाभ प्राप्त हो और ऐसी धरती का मैं राजा बनूं। हे ईश्वर! थाली में रखा हुआ भोजन आपके द्वारा दिया प्रसाद है। यह मुझे स्वस्थ और समृद्ध बनाए रखेगा।' साफ है, राजा प्रकृति और अन्नदाता से उत्तम भोजन की सामग्री देते रहने की प्रार्थना कर रहा है। यही प्रार्थना एक समय सभी सनातन संस्कृति के उपासक परमात्मा से करते रहे हैं।

अमेरिका में ही क्यों नहीं जले जहरीला कचरा ?

सरोकार

डॉ. चन्दर सोनाने
लेखक मप्र जनसंपर्क विभाग के रिटायर्ड अधिकारी हैं।

भोपाल से जब से यूनियन कार्बाइड का 337 मीट्रिक टन जहरीला कचरा पीथमपुर आने की सूचना मिली, तब से ही पीथमपुर और इंदौर में उसका विरोध शुरू हो गया था। किन्तु जब भोपाल से हाल ही में पीथमपुर 337 मीट्रिक टन कचरा पहुँच गया तो 3 जनवरी को जन आक्रोश भड़क उठा। जन स्वास्थ्य और पर्यावरण

से जुड़ी तमाम आशंकाओं से डरे लोगों ने पीथमपुर बंद रखा। दो युवकों ने आत्मदाह की कोशिश की। 7 किलोमीटर लंबा हाईवे पूरा दिन जाम रहा। स्थिति उग्र हो गई। कई बार पथराव हुआ। पुलिस ने लाठी चार्ज भी किया। जन आक्रोश को देखते हुए मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने संवेदनशीलता दिखाई और शुक्रवार 3 जनवरी को ही देर रात कैबिनेट की विशेष बैठक बुलाकर यह निर्णय लिया कि पीथमपुर में भेजा गया जहरीला कचरा अभी नहीं जलेगा। राज्य सरकार जन भावनाओं को कोर्ट के सामने रखेगी। मुख्यमंत्री ने इस समस्या पर कहा कि नागरिकों के जीवन को खतरा हो, ऐसा कोई कदम मध्यप्रदेश सरकार नहीं उठाएगी। अभी पीथमपुर में कचरा डंब किया गया है। उसे फिलहाल नहीं जलाया जायेगा। कोर्ट के सामने जनभावनाएं रखकर उससे मार्गदर्शन लिया जायेगा।

उल्लेखनीय है कि भोपाल में यूनियन कार्बाइड के कारखाने में 3 दिसम्बर 1984 को रात को जहरीली गैस के रिसाव से करीब 20 हजार लोग सोए के सोए ही रह गए थे। लाखों लोग उससे प्रभावित हुए। वे अभी भी अपना इलाज कराने के लिए मजबूर है। कोर्ट के आदेश पर कुछ साल पहले राज्य सरकार ने पीथमपुर में 10 मीट्रिक टन जहरीला कचरा जलाया था। पीथमपुर के आसपास के लोगों का कहना और मानना है कि जहाँ कचरा जलाया था, वहाँ के आसपास की कृषि भूमि में 90 प्रतिशत तक फसल कम आने लगी। कई लोग बीमार हो गए जो अभी तक अपना इलाज करा रहे है। यूनियन कार्बाइड के कचरे मर्करी, लेड और अन्य कैंसर कारक केमिकल है। विषैले तत्वों के कारण क्षेत्र का पानी दूषित हो रहा है। पीथमपुर और महू में कैंसर और अन्य अनुवांशिक बीमारियाँ फैल रही है।

पूर्व में केवल 10 टन कचरा जलाने से 90 प्रतिशत कृषि भूमि की उर्वरक क्षमता प्रभावित हुई है। जल दूषित हुआ है। कैंसर जैसी बीमारियाँ फैल रही है। यदि अब 337 मीट्रिक टन जहरीला कचरा पीथमपुर में जलाया जायेगा तो सहज ही कल्पना की जा सकती है कि क्या हालात होंगे ? पीथमपुर के साथ उज्जैन-इंदौर, यशवंत सागर, गंभीर नदी, चंबल नदी पर खतरनाक असर होने की भी संभावना बताई जा रही है।

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने जन आक्रोश देखते हुए पीथमपुर में यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा जलाने पर फिलहाल रोक लगा दी है। इसके लिए वे बधाई के पात्र हैं। किन्तु सवाल यहाँ यह उठता है कि अमेरिका के यूनियन कार्बाइड कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष वॉरेन एंडरसन की क्या कोई जिम्मेदारी नहीं बनती है ? जब यूनियन कार्बाइड कारखाना अमेरिका के निवासी का था, तो यूनियन कार्बाइड का शेष बचा 337 मीट्रिक टन कचरा मध्यप्रदेश के पीथमपुर में ही क्यों जलाया जा रहा है ? पीथमपुर ही नहीं मध्यप्रदेश में भी कही नहीं जलाया जाना चाहिए। पूरा देश हमारा है। अमेरिका के यूनियन कार्बाइड कॉर्पोरेशन के अध्यक्ष और उनके स्टाफ की गलती से जब 3 दिसम्बर 1984 में जहरीली गैस रिसाव का हुआ तो पूरी जिम्मेदारी यूसीसी के अध्यक्ष की ही बनती है। इसलिए मध्यप्रदेश और भारत सरकार को यह पुरजोर कोशिश करनी चाहिए कि यूनियन कार्बाइड का यह जहरीला कचरा मध्यप्रदेश या देश में कही नहीं जले। यूनियन कार्बाइड कॉर्पोरेशन की ही जिम्मेदारी है तो वह यहाँ से जहरीला कचरा ले जाए और कहीं भी जलाए या नष्ट करें। किसी भी हालत में मध्यप्रदेश और देश में यह जहरीला कचरा जलाया या नष्ट नहीं किया जाना चाहिए, ताकि लोगों की जान और स्वास्थ्य की सुरक्षा की जा सके। मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव से अपेक्षा है कि वे केन्द्र सरकार के समक्ष अपना पक्ष मजबूत से रखेंगे और भारत सरकार अमेरिका के समक्ष अपना यह प्रस्ताव रखे कि भारत देश में यह जहरीला कचरा कहीं नहीं जलेगा ! देश के बाहर कहीं भी ये जहरीला कचरा जलाने की जिम्मेदारी पूरीतरह से यूनियन कार्बाइड कॉर्पोरेशन की ही है। और वही अपनी जिम्मेदारी का निर्वहन भी करें।

स्वामी, सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए प्रकाशक एवं मुद्रक उमेश त्रिवेदी द्वारा श्री सिद्धीविनायक प्रिंटर्स, प्लॉट नं. 26-बी, देशबंधु परिसर, प्रेस कॉम्पलेक्स, जोन-1, एम.पी.नगर, भोपाल, म.प्र. से मुद्रित एवं डी-100/46, शिवाजी नगर भोपाल से प्रकाशित।

प्रधान संपादक
उमेश त्रिवेदी
कार्यकारी प्रधान संपादक
अजय बोकिल
संपादक (मध्यप्रदेश)
विनोद तिवारी
वरिष्ठ संपादक
पंकज शुक्ला
प्रबंध संपादक
अरुण पटेल
(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र भोपाल रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2003/ 10923,
Ph. No. 0755-2422692, 4059111
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

प्रदीप मिश्र
लेखक व्यंग्यकार हैं।

जिनकी बंजर बुद्धि अब करेंगे आत्मशुद्धि

नए साल के शुभागमन और प्राचीन के परागमन से पूर्व जो परिलक्षित हो रहा है। इसमें कुछ-कुछ अनचाहा और इच्छित हो रहा है। इसनें सियासतदानों से लेकर नादानों तक की चिंता बढ़ा दी है। जय बापू, जय भीम और जय संविधान रैलियों की %इंडिया% की घोषणा, चतुर चाचा की चाल और चहलकदमी ने 2029 से पहले चार साल पहले 2025 में ही आस्तीनें चढ़ा दी हैं। दरवाजे क्या खुलने लगे। दिल धू-धू कर जलने लगे। चंद चाटुकारों के चाणक्य के चंडूखाने के षड्यंत्र मंद पड़ गए। तेजी से बदल रहे देश के सब यंत्र-तंत्र-मंत्र बंद पड़ गए। 2024 जाते-जाते एक बड़ी बुरी खबर आई। उनका मुंह हमेशा काला ही रहे, जिन्होंने ये सुनाई। जो खरीदता ही रहा हो, विरोधियों को खदेड़ता ही रहा हो, वो विल्मर से बाहर निकल रहा है। 31 मार्च 2025 से पहले ही वह कौन बरखुरदार है, जो खून-पसीने के 17 हजार करोड़ रुपये बिना पानी के निगल रहा है। क्या इसे ईमान के रास्ते पर लौटने का संकेत माना जाए। आटा, तेल, दाल, चावल और मसालों के कारोबार में मार्जिन घटने का संदेश माना जाए।

लग नहीं रहा था कि तीसरी अर्थव्यवस्था का कर्णधार जल, थल और नभ में भी कहीं रुकेगा। जब प्रधान सेवक आगे-पीछे झुकता हो, लाला क्यों झुकेगा। पर अगर नीयत साफ हो गई तो सारे सेवक फंस जाएंगे। न जाने कितनों के अरमान धारावी के बदलने से पहले ही उसमें धंस जाएंगे। मुश्किल ये समझना है कि फरमान कहां से आ रहे हैं। पारदर्शिता और ईमानदारी के सहारे सेठ किसी नए को तो नहीं लुभा रहे हैं। खरीदने वाले जब खुले बाजार में बेचे जाएंगे तो बिकने वालों को कैसा लगेगा। इसके बाद न जाने कब और किस-किस का ईमान जगेगा। फिर तो हर कोई बेईमानी और हक मारने से डरेगा। हालात पहले से ही बता रहे हैं कि बालक राम के बाद कल्कि आ रहे हैं। कलिकाल खत्म और भारत के लोग सतयुग में जा रहे हैं। जाता साल एक और चमत्कार कर गया। जिसने भी सुना, वो डर गया। चिंता सताने लगी। देशप्रेम जगाने लगी। मणिपुर के मुख्यमंत्री को यकायक सद्बुद्धि आ गई।उन्होंने बदतर हालात के लिए देश से माफी मांग ली। जो देखने नहीं गए और चुप भी रहे, उनकी ओजवर्धक वाणी कहींन कहीं निशाने पर टांग ली है। बड़े वाले भी क्षमा मांग लेंगे तो भी कुछ बदल नहीं जाएगा। बिगड़ चुका वातावरण संभल की तर्ज पर संभल नहीं पाएगा।

ऐसे में एक और संकट निकट और विकट है। न जाने कब और किसकी छुट्टी हो जाए और आगे किसकी कट जाए टिकट है। 2024 में आरक्षण के खात्मे और संविधान बदलने के रास्ते के खुलासे को 'हम दो हमारे दो' ने 440 के करंट को 240 में ही बर्दाश्त कर लिया। नासमझों का हौसला बढ़ा और बाबा साहेब की बेइज्जती करने के बाद भी सोचने लगे, उनकी बात को बहुजन समाज ने आत्मसात कर लिया। उन्हें अनुमान ही नहीं था कि ये चिंगारी 'आपदा में अवसर' नहीं होगी, भूकंप-सुनामी जैसी तबाही लाएगी। श्रोता-दर्शक-पाठक, समर्थक शोर कम करेंगे...दिमाग से सिर्फ दिल और दलितों की गवाही आएगी। सबको जानकारी हो गई। अब तो जानत सब कोई। छल, दंभ, द्वेष, पाखंड, झूठ और अन्याय उनकी निश दिन की भाषा हो गई है। बेईमानी से मनमानी, भ्रष्टाचार में शिष्टाचार, कुटिलता में करुणा, नफरत से शराफत 21वीं सदी के आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) की नई परिभाषा हो गई है।

नया नवेला दावा बाजार में आ गया है-2025 में ही महंगाई को काबू कर लेंगे। 2011-12 के आधार वर्ष को 2022-23 में बदलकर हर किसी के दामन में खुशियां भर देंगे। तुलना करते रहिए। झुनझुना कुतरते रहिए। वैसे यह भी बता दिया गया है कि 10 वर्ष में 17.18 करोड़ रोजगार हो गए हैं। 140 करोड़ में से 64.33 प्रतिशत लोग रोजगारशुदा हैं। बचे हुए बेरोजगारों के अंदाज जुदा हैं। काला धन गोरा हो गया है। छोटे लोगों के लिए छिछोरा बड़े लोगों को चंगा छोरा हो गया है। 2014 में विदेशी कर्ज 455.9 अरब डॉलर था। 2024 में 711.8 अरब डॉलर हो गया है। इसके बाद बंजर बुद्धि वाले भी अंदर की बात और आंकड़ों का सच जानने के लिए सतत प्रयत्नशील हो गए हैं। अभी तक जिन्हें आकाशवाणी जैसे ज्ञान की प्रतीक्षा रहती थी और आगे भी रहेगी, निश्चित तौर पर वे सहनशील हैं। जब रहस्य नहीं जान पाएंगे, यथाशीघ्र ज्वलनशील हो जाएंगे। नहीं समझे तो व्यवस्था-अव्यवस्था की अर्थव्यवस्था में स्वयं को अनाड़ी मानकर आत्म शुद्धि करेंगे और सुंदर संग सुशील हो जाएंगे। फिर न किसी प्राणिमात्र को प्रभावित करने के लिए भरमाएंगे और न ही चोरी के बाद सीनाजोरी के लिए गरमाएंगे।

कानून और न्याय

विनय झैलावत

पूर्व असिस्टेंट सॉलिसिटर जनरल एवं वरिष्ठ अधिवक्ता

पुरुष भी पीड़ित -2: पुरुषों के भी घरेलू हिंसा के शिकार होने की आशंका

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2020 की आत्महत्या रिपोर्ट सेपता चलता है कि भारत में बड़ी संख्या में आत्महत्याएं पारिवारिक समस्याओं से जुड़ी हैं, जो पुरूषों और महिलाओं दोनों को प्रभावित करती हैं। व्यापक आंकड़ों की कमी के बावजूद, यह स्पष्ट है कि पुरूष भी घरेलू हिंसा के शिकार हैं और उनकी आत्महत्या दर बढ़ रही है। इसकी तुलना में, यदि लिंग भूमिकाएं उलट दी गईं, तो प्रतिक्रिया भिन्न हो सकती है।

हम अक्सर महिलाओं के साथ होने वाली घरेलू हिंसा के बारे में सुनते हैं, जिसमें पुरूषों को नुकसान पहुंचाने वाले के रूप में देखा जाता है। लेकिन, आजकल चीजें तेजी से बदल रही है। पुरुष भी घरेलू हिंसा के शिकार हो सकते हैं। उन्हें मौखिक, शारीरिक, भावनात्मक, मनोवैज्ञानिक या यौन शोषण का अनुभव हो सकता है। दुर्भाग्य से, कई पुरूष इसके बारे में बात नहीं करते हैं और वे चुपचाप सहते रहते हैं। कानून आम तौर पर पीड़ित महिलाओं की मदद करने पर ध्यान केंद्रित करते हैं, जिससे इन पुरूषों को उस समर्थन के बिना छोड़ दिया जाता है जिसकी उन्हें आवश्यकता होती है। हमारी आपराधिक न्याय प्रणाली पुरूषों को दुर्व्यवहार से बचाने के लिए सुसज्जित नहीं है। यह एक लैंगिक कानून है जो पुरूषों को केवल दुर्व्यवहार करने वाले के रूप में देखता है, पीड़ितों के रूप में नहीं। जैसे-जैसे पुरूषों के खिलाफ अन्यायपूर्ण हिंसा के अधिक मामले सामने आ रहे हैं, लोगों ने पुरूषों के अधिकारों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय पुरूष आयोग की मांग करना शुरू कर दिया है। इसके पीछे जो कारण बताए जा रहे हैं, उनमें पुरूषों के लिए अपने कानूनी और सामाजिक बोझ से राहत पाने और न्याय पाने के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाना। दुर्व्यवहार के शिकार पुरूष और जिनके खिलाफ दहेज के झूठे मामले दर्ज किए गए हैं, उनका समर्थन करना और मामलों का प्रतिनिधित्व करना।

पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए क्योंकि भरण-पोषण के कभी न खत्म होने वाले वित्तीय बोझ के कारण कई पुरूष पीड़ित आत्महत्या कर रहे हैं। लैंगिक समानता पाने के लिए, पुरूषों और महिलाओं दोनों के पास ऐसी संस्थाएं होनी चाहिए जिनसे वे लैंगिक हिंसा और अपराधों की स्थितियों में संपर्क कर सकें। यह भी महसूस किया जा रहा है कि यदि आधी आबादी की मदद के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग है, तो यह उचित है कि पुरूषों को भी अपना राष्ट्रीय आयोग मिले। यह पुरूषों को एक आधिकारिक इकाई का समर्थन प्रदान करेगा जो उन्हें यौन उत्पीड़न, घरेलू दुर्व्यवहार या झूठे कानूनी आरोपों के मामलों में अपने अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करेगा, मुख्य है।

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो की 2020 की आत्महत्या रिपोर्ट से पता चलता है कि भारत में बड़ी संख्या में आत्महत्याएं पारिवारिक समस्याओं से जुड़ी हैं, जो पुरूषों और महिलाओं दोनों को प्रभावित करती हैं। व्यापक आंकड़ों की कमी के बावजूद, यह स्पष्ट है कि पुरूष भी घरेलू हिंसा के शिकार हैं और उनकी आत्महत्या दर बढ़ रही है। इसकी तुलना में, यदि लिंग भूमिकाएं उलट दी गईं, तो प्रतिक्रिया भिन्न हो सकती है। उदाहरण के लिए, जहां विवाहित पुरूषों के लिए आत्महत्या की संख्या 64,791 है, वहीं महिलाओं के लिए यह 27,742 है। ये आंकड़े बताते हैं कि पुरूषों के खिलाफ घरेलू हिंसा एक गंभीर मुद्दा है। इसे अक्सर कम रिपोर्ट किया जाता है। हिंसा के मामलों को उचित और निष्पक्ष तरीके से निपटाने के लिए सख्त कानूनों की स्पष्ट आवश्यकता है।

दहेज विरोधी और भरण-पोषण प्रावधानों के दुरुपयोग के कारण भारत में हजारों परिवार प्रतिकूल रूप से प्रभावित हुए हैं। वृद्ध माता-पिता जेलमें समय बिता रहे हैं। न्याय का कोई नामोनिशान नहीं है। यह कानून इतना सख्त है कि कोई भी विवाहित महिला इसका दुरूपयोग कर अपने पति को परेशान कर सकती है और यहां तक कि उसे आत्महत्या के लिए भी मजबूर कर सकती है। इस मामले पर अदालतें अक्सर अपनी राय देती रही है। अतुल की मौत से हमें सबकलेना चाहिए। यह सुनिश्चित करने के लिए कानून में संशोधन किया जाना चाहिए कि कोई भी इसके प्रावधान का दुरुपयोग नहीं कर सके और दहेज विरोधी कानून प्रावधानों पर पुनर्विचार करने का अब समय आ गया है।

पुरूषों के खिलाफ घरेलू हिंसा को कानून द्वारा मान्यता नहीं दी गई है। इससे महिलाएं परिणामों से बच सकती हैं। पुरूषों को घरेलू हिंसा से बचानेऔर मौजूदा कानूनों के दुरुपयोग को रोकने के लिए कानूनों की आवश्यकता है। जबकि महिलाओं को सशक्त बनाने और उनकी सुरक्षा करने के उद्देश्य से बनाए गए कानून महत्वपूर्ण है। पुरुषों की सुरक्षा और अधिकारों को भी सुनिश्चित करने के लिए इन कानूनों को संतुलित करना भी उतना ही आवश्यक है। महिलाओं के सशक्तिकरण के लिए बनाए गए कानूनों को दुरुपयोग को रोकने के लिए सावधानी बरतनी चाहिए और समाज को लिंग की परवाह किए बिना सभी व्यक्तियों के लिए निष्पक्षता और न्याय के सिद्धांत पर काम करने का प्रयास करना चाहिए।

पुरुषों के खिलाफ घरेलू हिंसा के मुद्दे को पहचान कर और उसका समाधानकरके, हम एक अधिक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज बना सकते हैं जहां सभी व्यक्तियों के अधिकारों और सुरक्षा का सम्मान और सुरक्षा की जाएगी। समाज के लिए पुरूषों के खिलाफ घरेलू हिंसा को पहचानना और उसका समाधान करना महत्वपूर्ण है। इसमें लिंग की परवाह किए बिना सभी पीड़ितों की मदद के लिए कानून और सहायता प्रणाली

बनाना शामिल है। जागरूकता बढ़ाकर और रूढ़िवादिता को चुनौती देकर, हम सभी के लिए एक सुरक्षित और अधिक न्यायसंगत समाज की दिषा में काम कर सकते हैं।

हमारी आपराधिक न्याय प्रणाली पुरूषों को दुर्व्यवहार से बचाने के लिए सुसज्जित नहीं है। यह एक लैंगिक कानून है जो पुरूषों को केवल दुर्व्यवहार करने वाले के रूप में देखता है, पीड़ितों के रूप में नहीं। जैसे-जैसे पुरूषों के खिलाफ अन्यायपूर्ण हिंसा के अधिक मामले सामने आ रहे हैं, लोगों ने पुरूषों के अधिकारों की रक्षा के लिए राष्ट्रीय पुरूष आयोग की मांग करना शुरू कर दी है। आयोग की स्थापना के मुख्य कारण। पुरूषों के लिएअपने कानूनी और सामाजिक बोझ से राहत पाने और न्याय पाने के लिए एक सुरक्षित स्थान बनाना। दुर्व्यवहार के शिकार पुरुष और जिनके खिलाफ दहेज के झूठे मामले दर्ज किए गए हैं, उनका समर्थन करना और मामलों का प्रतिनिधित्व करना। पुरूषों के मानसिक स्वास्थ्य को बेहतर बनाने में मदद करने के लिए क्योंकि भरण-पोषण के कभी न खत्म होने वाले वित्तीय बोझ के कारण कई पुरूष पीड़ित आत्महत्या कर रहे हैं।

लैंगिक समानता पाने के लिए, पुरूषों और महिलाओं दोनों के पास ऐसी संस्थाएं होनी चाहिए जिनसे वे लैंगिक हिंसा और अपराधों की स्थितियों में संपर्क कर सकें। यदि आधी आबादी की मदद के लिए राष्ट्रीय महिला आयोग है, तो यह उचित है कि पुरूषों को भी अपना राष्ट्रीय आयोग मिले। यह पुरूषों को एक आधिकारिक इकाई का समर्थन प्रदान करेगा जो उन्हें यौन उत्पीड़न, घरेलू दुर्व्यवहार या झूठे कानूनी आरोपों के मामलों में अपने अधिकारों के लिए लड़ने में मदद करेगा। कार्यस्थल पर उत्पीड़न या जीवनसाथी द्वारा उत्पीड़न कोई लैंगिक मुद्दा नहीं है। यह मानवाधिकार का मुद्दा है। कानून के तहत पुरूष भी महिलाओं के समान ही सुरक्षा के पात्र है जब तक भारत लिंग-तटस्थ कानूनों को लागू नहीं करता, पुरूष पीड़ित चुपचाप पीड़ा सहते रहेंगे, जिससे अन्याय का चक्र कायम रहेगा।

पारिवारिक अदालतों में प्रणालीगत सुधार की आवष्यकता है। खासकर जब बच्चे तक पहुंच, माता-पिता के अलगाव और लंबी देरी के मुद्दों की बात आती है। हमें मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दे को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए। %पुराने न्यायाधीश आत्महत्या और उत्पीड़न जैसी चीजों के प्रति कम संवेदनषील होत हैं। पुरूष आत्महत्या, अवसाद और बच्चे से अलगाव को अक्सर उनके द्वारा महत्वहीन बना दिया जाता है।% यह देखा गया है कि वैवाहिक विवादों में प्रतिकूल पहलू जोड़ते हैं। दूसरा पहलू गुजारा भत्ता का है। कानून में इसकी कोई ऊपरी सीमा परिभाषित नहीं है। भुगतान के मामले में भी पुरुषों के प्रति संवेदनशीलता की कमी है। यदि कोई अपनी नौकरी खो देता है या कम वेतनमान वाली नौकरी बदलना चाहता है तो क्या होगा ? फिर उनका दावा है कि यह एक जानबूझकर उठाया गया कदम था। वे यह नहीं देखते कि आईटी या टेक या किसी भी क्षेत्र में लोग बहुत आसानी से अपनी नौकरियां खो देते हैं। पुरूषों के खिलाफ घरेलू हिंसा पर आधिकारिक डेटा दुर्लभ है। लेकिन गैर सरकारी संगठनों द्वारा किए गए अध्ययनों से पता चलता है कि यह एक महत्वपूर्ण मुद्दा है। राष्ट्रीय अंतरंग साथी और यौन हिंसा सर्वेक्षण जैसे अध्ययन इस बात पर प्रकाश डालते हैं कि पुरूष उत्पीड़न एक गंभीर मुद्दा है। यह पहचाना महत्वपूर्ण है कि घरेलू हिंसा केवल महिलाओं का मुद्दा नहीं है। पुरूष भी इसके षिकार हो सकते हैं। इसलिए, जब महिलाएं पुरूषों पर घरेलू हिंसा का आरोप लगाती हैं, तो न्याय सुनिश्चित करने के लिए पूरी तरह से जांच की जानी चाहिए और निर्दोष पुरूषों को उन अपराधों के लिए गलत तरीके से दंडित नहीं किया जाना चाहिए जो उन्होंने नहीं किए हैं। इसके अतिरिक्त, घरेलू हिंसा से पीड़ित पतियों को अपनी अपमानजनक पत्नियों के खिलाफ तलका के लिए दायर करने का अधिकार होना चाहिए, जैसे महिलाओं को समान स्थितियें में कानूनी सहारा लेने का अधिकार है।

स्मृति लेख

कार्टूनिस्ट काक : सूनी हो गयी कार्टून की दुनिया

राजेन्द्र शर्मा

न ये साल की पहली भोर ही मन को उदास कर गयी । सात जुलाई 1967 से बिना नागा हर रोज एक कार्टून बनाने वाले कार्टूनिस्ट काक इस फानी दुनिया से अलविदा कह गये । काक के जाने से कार्टून की दुनिया सूनी हो गयी है । उन्नाव जिले के पुरा गांव के स्वतंत्रता सेनानी श्री शोभ शुक्ल की पांचवीं संतान हरीश चन्द्र शुक्ला (जिन्हें दुनिया काक के नाम से जानती है) को सातवीं कक्षा में उनके द्वारा पेंसिल से खो खो करते बंदर के बनाये गये चित्र,जो चित्र कम कार्टून ज़्यादा था, को कला अध्यापक जगदम्बा सिंह द्वारा दिये गये ब्रश्शस्त्र ने उन्हें स्कैच करने के लिए प्रेरित किया गया । अन्य विषयों की तैयारी कर हरीश चन्द्र जैसे ही फ़ारिग होते अपनी कापी पर पेंसिल से स्कैच करने लगते ,यही उसके जीवन का परम सुख बन गया।

सातवीं कक्ष में बनाया गया वह 'बंदर ' और उसकी शरारतें , कारस्तानियाँ हरीश के मस्तिष्क में इतने गहरे पैठ गयी कि काक बनने पर भी वह बंदर स्मृति से विस्मृत नहीं हुआ बल्कि और ज़्यादा शिद्दत से उभरा । काक के कार्टूनों के प्रिय पात्र जो गली का फक्कड बूडढा है, जो देश दुनिया की हर धटना पर अपनी बात जो देश के आम आदमी के मन की बात होती है, उसे कहने में गुरेज़ नहीं करता । उस बुड्ढे को ज़रा गौर से देखियेगा, उसके स्टैक्चर में कहीं न कहीं वह बंदर दिखाई दे ही जाता है ।

पढ़ाई लिखाई पूरी कर कानपुर के ही एक सरकारी प्रतिष्ठान में नौकरी मिल जाने और और फिर दाम्पत्य जीवन में बंध जाने के बावजूद भी हरीश चन्द्र शुक्ला का कार्टून बनाने का शौक बदस्तूर रहा । हरीश चंद्र शुक्ला नौकरी और गृहस्थी के नित्य के दायित्वों को निभा जैसे ही फ़ुरसत पाते, आराम नहीं करते बस पेंसिल उठाकर स्कैच करने बैठ जाते । इसी से उनकी थकान उतरती थी, यही था उनके जीवन का परम सुख ।

वर्ष 1965-66 में उत्तर प्रदेश में चंदरभानु गुप्त मुख्यमंत्री थे । हरीश चंद्र शुक्ला ने उन पर कार्टून स्कैच किया और कानपुर से प्रकाशित होने वाले अख़बार राम राज्य में भेज दिया। राम राज्य अख़बार में यह हरीश चंद्र शुक्ला का पहला कार्टून छपा परंतु यह अख़बार सीमित मात्रा में छपता था । लिहाज़ा कोई कोई विशेष रेस्पांस नहीं मिला लेकिन रेसपांस मिले न मिले, हरीश चंद्र शुक्ला तो बक़ौल शायर वसीम बरेलवी खुद को मनवाने का हुनर मुझे भी आता है ,मै कतरा हू समंदर भी मेरे घर आता है, दृढ़ निश्चय कर चुके थे कि उन्हें करना क्या है।

पहला कार्टून छपने के डेढ़ साल बाद खान अब्दुल ग़फ़्फ़ार खान/सीमांत गांधी भारत आये । सभी राजनेताओं ने उनका स्वागत किया, हरीश चंद्र शुक्ला ने पेंसिल उठाई और कार्टून बनाया जिसमें सीमांत गांधी की बड़ी छवि बनाते हुए उनका स्वागत करते नेताओं को बहुत छोटा छोटा दिखाया गया था । यह कार्टून दैनिक जागरण के संपादक नरेंद्र मोहन को दे आये । कार्टून ग़ज़ब था और संपादक पारखी । नरेंद्र मोहन ने इस कार्टून को सात जुलाई 1967 को पहले पन्ने पर प्रकाशित किया ।

संयोग देखिये,उसी दिन हरीश चंद्र शुक्ला के पहले बेटे का जन्म हुआ। सारा घर परिवार खुश कि घर में नन्हा शिशु आया है लेकिन हरीश चंद्र शुक्ला के लिये यह यक्ष प्रश्न अपने आप से कि वह पुत्र आगमन से खुश है या अपना कार्टून छपने से खुश है । बहरहाल सात जुलाई 1967 , कार्टूनों की दुनिया में ऐतिहासिक दिन बन गया , उसी दिन हरीश चंद्र शुक्ला के बड़े बेटे शुभव शुक्ला के साथ साथ देश के जाने माने कार्टूनिस्ट ' काक ' का नामकरण हुआ ।

सात जुलाई 1967 का वह दिन इस मायने में ऐतिहासिक दिन है कि उस दिन हरीश चंद्र शुक्ला नेपथ्य में चले गये और सामने थे 'काक', जिन्हें सारा देश इसी नाम से पहचानता हैं। स्वयं काक साहब भी इसे नाम से पुकारे जाने के हामी थे, कोई उनके सामने हो और हरीश जी नमस्कार , शुक्ला जी प्रणाम कहें तो वह कोई उत्तर न देकर सीधे सवाल पूछते हैं कि यह हरीश चंद्र शुक्ला कहाँ मिले आपको ?

सात जुलाई 1967 को ' काक 'का नामकरण होने पर

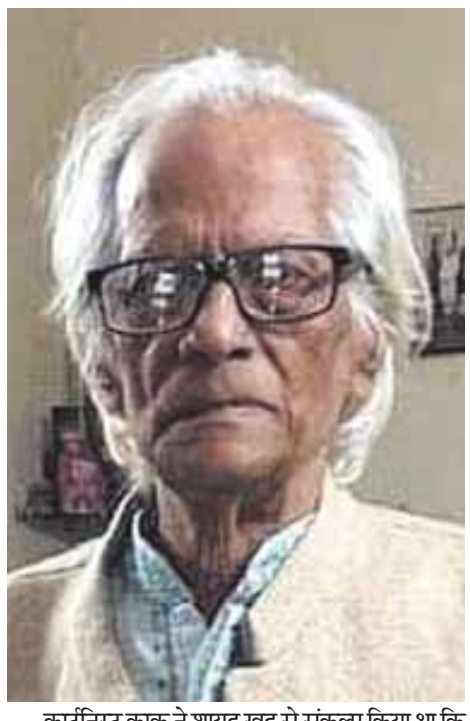

कार्टूनिस्ट काक ने शायद खुद से संकल्प किया था कि जब तक जीवन है,वह हर रोज़ कार्टून बनायेंगे । 58 साल कम नहीं होते है , इन 58 साल में एक भी दिन ऐसा नहीं जब काक साहब ने कार्टून न बनाया हो । काक की इस संकल्प शंकित को क्या कहियेगा कि करोना के इन लाँक डाउन के दिनों में करोना उनकी संकल्प शंकित को डिगा नहीं सका, वह हर रोज़ कार्टून बनाते रहे ।

सात जुलाई 1967 को दैनिक जागरण के पहले पन्ने पर छपे अपने कार्टून के उपरांत काक ने कार्टूनों की दुनिया में ऊँची उड़ान भर दी । एक से एक नुकीला, चुभता हुआ, गुदगुदाता हुआ कार्टून हिंदी के तमाम अख़बारों में दिखने लगा । कानपुर से दैनिक जागरण,आज, जयपुर में राजस्थान पत्रिका ,चंडीगढ़ में हिंदी ट्रिब्यून में काक के कार्टून उड़ान भर रहे थे । अपनी बात को बेहद सलीक़े से अपने प्रिय पात्र बुड्ढे के ज़रिये कहने वाले काक ने देश के किसी नेता को नहीं छोड़ा जिसका कार्टून न बनाया हो। देश भर के नेता काक को जानने समझने लगे थे कि पता नहीं उनके व्यक्तित्व के किस पहलू पर, किस बयान पर काक कार्टून बना दें।

दिनमान साप्ताहिक में सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन अज्ञेय के बाद बतौर संपादक रघुवीर सहाय आये । रघुवीर सहाय के लिये यह चुनौती थी कि जिस स्तर तक अज्ञेय दिनमान को ले आये थे, उसे आगे बढ़ाना है। रघुवीर सहाय की पहल पर काक ने दिनमान के लिये कार्टून बनाने शुरू किये । कई बार उनके कार्टून को ही रघुवीर सहाय ने कवर पेज बना दिया । यह काक की काक दृष्टि का ही कमाल था कि रघुवीर सहाय के समय से दिनमान में छपने शुरू हुए कार्टून कन्हैया लाल नंदन ,सतीश झा, धनश्याम पंकज के कार्यकाल में भी यथावत छपते रहे. दिनमान जैसी पत्रिका के लिये काक के कार्टून अपरिहार्य हो गये थे ।

उन्हीं दिनों कलकत्ता से रविवार का प्रकाशन शुरू हुआ । योगेन्द्र कुमार लल्ला, एस पी सिंह , उदयन शर्मा काक को कहाँ छोड़ने वाले थे । रविवार के लिये भी काक अपरिहार्य हो गये थे । अपने कार्टून और अपने फक्कड़ बुड्ढे की बदौलत काक राजनेता के पंसदीदा हो गये थे । अटल बिहारी वाजपेयी के विराट व्यक्तित्व से अवगत कराते हुए काक ने इन पंक्तियों के लेखक को बताया था कि जब बेहमई नरसंहार के बाद विभिन्न दलों के नेतागणों के दौरे हो रहे थे । इंदिरा गांधी आकर जा चुकीं थीं । इसी क्रम में अटल जी भी आये . उन दिनों काक कानपुर में दैनिक जागरण के लिये कार्टून बना रहे थे । मुखपृष्ठ पर कार्टून छपा । शीर्षक था '' बेहमई की हुतात्माओं की शांति के लिए थोड़ी और घूल ''।

कार्टून में अटल जी बेहमई जा रहे थे, धूल उड़ रही थी । यह कार्टून कुछ ज्यादा ही तीखा हो गया था ,पर वाह अटल जी, उसी दिन कानपुर की विशाल सभा में उन्होंने कार्टून का बाकायदा उल्लेख किया और उलाहना दिया कि कार्टूनिस्ट ने हमें कुछ ज्यादा ही मोटा दिखा दिया है ,देख लो, मैं इतना मोटा नहीं हूँ । काक दंग रह गये यह सुनकर । अपनी आलोचना को न केवल इतनी सहजता से लेना बल्कि इतना अप्रत्याशित महत्व देना यह अटल जी की विशेषता थी । काक बताते थे कि अटल जी के व्यक्तित्व की इससे ज्यादा विराटता का उदाहरण और क्या होगा कि डेढ़ दशक बाद जब मैं दिल्ली में नवभारत टाइम्स के लिये कार्टून बना रहा था उनसे मुलाकात हुई तो वह कार्टून भूले नहीं थे । छूटते ही वही शिकायत ,आपने मुझे बहुत मोटा दिखा दिया था ।

1967 से 1983 तक कुल 15 बरस तक हर रोज़ कार्टून बनाने और हर रोज़ किसी न किसी पत्र पत्रिका यथा दैनिक जागरण, दैनिक आज, राजस्थान पत्रिका ,दैनिक ट्रिब्यून आदि तथा दिनमान और रविवार साप्ताहिक में कार्टून प्रकाशित होने के फलस्वरूप कार्टूनिस्ट काक प्रतिष्ठित हो चुके थे लेकिन इस सीमा तक वह काक थे । कानपुर की अपनी नौकरी में वह हरीश चंद्र शुक्ला ही थे जिस पर कार्टूनिस्ट काक का व्यक्तित्व भारी पड़ने लगा था पर मध्यवर्गीय जीवन में गृहस्थी को पालना पोसना पहली प्राथमिकता होती है। उधर दिल्ली, जयपुर और लखनऊ के समाचार पत्रों के संपादक काक के कार्टूनों के जलवे को जान चुके थे । सभी काक को सलाह देते कि अब पूर्णकालिक रूप से अख़बार ज्वाइंन करो ।

बडी जददोजहद के बाद काक ने हरीश चन्द्र' शुक्ला को सदैव के लिए उसी सरकारी प्रतिष्ठान में छोड दुनिया के पूर्णकालिक रुप से काक बन कर जनसत्ता में ज्वाइंन किया ।

डेढ साल बाद नवभारत टाईम्स में आ गये और 1999 में नवभारत टाईम्स से ही सेवानिवृत्त हुए. लगभग पच्चीस बरस काक को सेवानिवृत्त हो गये थे परन्तु कार्टून बनाना ही उनका जीवन रहा, उनकी सांसे रही । बीते बरस ही अपने जन्मदिन के अस्सर पर इन पंक्तियों के लेखक से काक ने कहा था कि जब तक उनकी जीवन है, वह कार्टून बनाते रहेगें । सचमुच वह अपने जीवन के अन्तिम दिन तक कार्टून बनाते रहे ।

पुण्यतिथि पर विशेष

चेतनादित्य आलोक

लेखक रांची निवासी वरिष्ठ पत्रकार हैं।

वर्षों तक अंधेरे में गोते लगाता रहा लुई ब्रेल का महान आविष्कार

संयुक्त राष्ट्र संघ की अधीनस्थ संस्था 'विश्व स्वास्थ्य संगठन' की एक रिपोर्ट के अनुसार विश्व भर में लगभग 39 मिलियन लोग दृष्टिहीन हैं। वहीं, दुनिया के लगभग 253 मिलियन लोगों में किसी-न-किसी प्रकार का कोई दृष्टि विकार आज भी मौजूद है, लेकिन प्रसन्नता की बात यह है कि दृष्टिहीनता आज मनुष्य के लिए अभिशाप नहीं है, क्योंकि दुनिया भर में दृष्टिहीनों के लिए अब शिक्षा-दीक्षा की पूरी व्यवस्था है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो मनुष्य की आंखें भले ही ज्योति विहीन हों, किंतु शिक्षा की पवित्र लौ जलाकर उसके अंतर को प्रकाशित किया जा सकता है। जरा सोचिए कि यदि मनुष्य का अंतर प्रकाशित हो जाए तो भला बाहर का अंधकार उसका क्या ही बिगाड़ सकता है।

ब्रेल लिपि के आविष्कारक

लुई ब्रेल (04-06 जनवरी) का जन्म 04 जनवरी 1809 को फ्रांस की राजधानी पेरिस से पच्चीस मील दूर पूर्व दिशा में स्थित कुप्रवे नामक गांव में हुआ था। चार बच्चों वाले परिवार में सबसे छोटे लुई दुनिया के सबसे प्रसिद्ध दिव्यांग व्यक्तियों में से एक थे। वे एक फ्रांसीसी आविष्कारक थे, जिन्होंने दृष्टिहीन एवं दृष्टिबाधित लोगों के लिए पढ़ाई-लिखाई में काम आने वाली ब्रेल लिपि जैसा अत्यंत जरूरी अविष्कार किया था। यही कारण है कि लुई को दुनिया भर के दृष्टिहीन एवं दृष्टिबाधित लोग आज भी अपना मसीहा मानते हैं। बहरहाल, लुई ब्रेल के सम्मान में 2019 में संयुक्त राष्ट्र महासभा (यूएनजीए) द्वारा 04 जनवरी को प्रत्येक वर्ष 'विश्व ब्रेल दिवस' मनाने का निर्णय लिया गया, जिसके बाद पहली बार 04 जनवरी 2019 को 'विश्व ब्रेल दिवस' मनाया गया।

जन्मांध नहीं थे

लुई ब्रेल जन्मांध नहीं थे। उनका जन्म एक सामान्य बालक की तरह ही बिलकुल सामान्य दृष्टि के साथ हुआ था, लेकिन दुर्भाग्य से, एक दुर्घटना के बाद उनकी दोनों ही आंखें खराब हो गईं। हालांकि, उनकी दृष्टिहीनता उनके लिए तब भले ही अभिशाप प्रतीत हुई हो, लेकिन बाद में न केवल उनके, बल्कि पूरी दुनिया के दृष्टिहीनों के लिए वरदान साबित हुई।

जीवन में ऐसे अंधकार छाया

लुई के पिता साइमन रेले ब्रेल शाही घोड़ो के लिए काठी और जीन बनाने का कार्य करते थे। इसके लिए वे काफी तेज धार वाले औजारों का उपयोग करते थे। एक दिन पिता की अनुपस्थिति में चमड़े की सिलाई करने वाला सूआ लेकर लुई अपने पिता की नकल करते हुए चमड़े के एक टुकड़े को सिलने की कोशिश कर रहे थे। इसी दौरान सूआ फिसलकर उनकी एक आंख में जा घुसा। तब वे मात्र तीन वर्ष के थे। आर्थिक तंगी के कारण समय पर समुचित चिकित्सा नहीं करा पाने के कारण लुई की वह आंख खराब हो गई। बाद में संक्रमण होने से उनकी दूसरी आंख भी खराब हो गई। तब वे उनकी आयु मात्र 08 वर्ष थी।

शिक्षा-दीक्षा

थक-हारकर, लुई के माता-पिता उन्हें गांव के ही पादरी के पास लेकर नित्य जाने लगे, जहां पर उन्हें धार्मिक उपदेश सुनाए जाते। लुई पादरी की बातों को बहुत ध्यान से सुनते, जिससे प्रभावित होकर उस पादरी ने लुई का नामांकन पास के ही एक सामान्य विद्यालय में करा दिया, लेकिन वह विद्यालय दृष्टिहीन लुई के लिए उचित नहीं था। इसलिए उनके माता-पिता ने 1819 में उनका नामांकन दृष्टिहीन बच्चों के विश्व के प्रथम विद्यालय 'रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ' में करा दिया। यहीं पर लुई को कैप्टन चार्ल्स बारबेयर से मिलने एवं 12 उभरे हुए बिन्दुओं वाली शिक्षण प्रणाली से अवगत होने का अवसर प्राप्त हुआ था।

चार्ल्स बारबेयर से मिली प्रेरणा

सन् 1809 ई. में फ्रांसीसी सेना के कैप्टन चार्ल्स बारबेयर ने नेपोलियन के निर्देश पर 12 उभरे हुए बिन्दुओं वाली एक शिक्षण प्रणाली विकसित की थी, जिससे युद्ध के दौरान रात के अंधेरे में भी सैनिकों को गुप्त संदेश पढ़ने में आसानी हो सकती थी। इसका प्रदर्शन उन्होंने पेरिस स्थित रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ में किया था, जिसकी स्थापना 34 वर्ष पहले वैलेंटिन हाउ ने फ्रांसीसी लेखक दीदरो से प्रभावित और प्रेरित होकर की थी।

छह बिन्दुओं वाली प्रणाली विकसित की

लुई ने अनेक प्रयोगों से यह जान लिया था कि मनुष्य की तर्जनी सर्वाधिक संवेदनशील उंगली होती है, जो एक साथ छह बिन्दुओं को महसूस कर सकती है, जबकि छह से अधिक होने पर बिन्दु उंगली के पोर की सीमा से बाहर हो जाते हैं। इस प्रकार, 1824 में 15 वर्ष की आयु में लुई ने छह बिन्दुओं वाली ब्रेल लिपि की अत्यंत सरल, व्यवस्थित एवं वैज्ञानिक कुल 64 भिन्न आकृतियों (डॉट्स कॉम्बिनेशंस) की रचना कर ली थी।

1829 में प्रकाशित की लिपि

ब्रेल लिपि की सरलता के कारण इसे सीखना आसान था, लेकिन लुई के विद्यालय रॉयल इंस्टीट्यूट फॉर ब्लाइंड यूथ ने इसका समर्थन नहीं किया, क्योंकि पैसे का अभाव था और इसे शुरू करने की लागत निषेधात्मक थी। फिर लुई के जीवन में एक बड़ा मोड़ आया, जब 1826 में वे अपने ही विद्यालय में शिक्षक बनाए गए। उसके तीन साल बाद 1829 में उन्होंने ब्रेल लिपि को बत्तीस पन्नों की एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया, जिसका शीर्षक 'मेथड ऑफ राइटिंग लैंग्वेज, प्लेन चैंट एंड म्यूजिक, बाई मीन्स ऑफ रेज्ड पॉइंट्स फॉर द यूज ऑफ ब्लाइंड पर्सन्स' था।

जीवन काल में मान्यता नहीं दिला पाए

लुई अपनी ब्रेल लिपि को जीवन काल में मान्यता नहीं दिला पाए। दरअसल, उनको किसी बड़े व्यक्ति अथवा संस्था का प्रोत्साहन नहीं मिला था। यही कारण है कि लुई का महान आविष्कार वर्षों तक अंधेरे में गोते लगाता रहा। इसी बीच, 1851 में लुई ब्रेल को तपेदिक की बीमारी हो गई और अंततः 06 जनवरी 1852 को केवल 43 वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया।

विश्व भर में फैला आविष्कार

फ्रांसीसी सरकार द्वारा 1854 में पहली बार ब्रेल लिपि को मान्यता दिये जाने के बाद 1868 ई. में यूरोप के अन्य देशों ने भी लुई के उक्त आविष्कार को नेत्रहीनों के लिए शिक्षण प्रणाली के रूप में मान्यता दे दी। लेकिन वास्तव में ब्रेल लिपि सन् 1878 में सर्वमान्य हुई जब 'इंटरनेशनल कांग्रेस ऑन वर्क फॉर द ब्लाइंड' में दुनिया के कई देशों के प्रतिनिधि शामिल हुए और इसे वैश्विक स्तर पर स्वीकृति मिली। भारतवर्ष में पहला नेत्रहीन विद्यालय सन् 1886 में एक मिशनरी शार्प एनी द्वारा अमृतसर में स्थापित किया गया। लुई के आविष्कार ने लाखों-करोड़ों लोगों के जीवन में रोशनी बिखेरी और यह क्रम आज भी अनवरत जारी है। यही कारण है कि नेत्रहीन आज भी उन्हें अपना 'मसीहा' मानते हैं, लेकिन यह दिन देखने के लिए लुई इस दुनिया में नहीं रहे। अपने तैंतालीसवें जन्मदिवस के दो दिन बाद अपने विद्यालय में ही उनकी मृत्यु हो गई।

लैंस प्रत्यारोपण एवं ऑपरेशन शिविर 5 फरवरी को

बैतूल। युवा साहू समाज सेवा संगठन जिला बैतूल एवं चिरायु मेडिकल कॉलेज हॉस्पिटल बैरागढ़ भोपाल के तत्वावधान में एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चिचोली के सहयोग से जिला स्तरीय मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं ऑपरेशन शिविर का आयोजन 5 फरवरी दिन बुधवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चिचोली में दोपहर 12 बजे से 3 बजे तक आयोजित किया जाएगा। आयोजन समिति ने बताया कि इस शिविर में मरीजों के ऑपरेशन के लिए जरूरी है कि मरीज अपने साथ समग्र आईडी आधार कार्ड एवं यदि आयुष्मान कार्ड है तो उसकी छाया प्रति लेकर इस शिविर में पधारे। शिविर में आवास , भोजन ,जांच, ऑपरेशन ,दवाइयां निशुल्क दी जाएगी एवं मरीज की सेवा आत्मीयता पूर्वक की जाएगी। जिन मरीजों की आंखों में मोतियाबिंद पाया जाएगा उन सभी मरीजों को ऑपरेशन के लिए चिरायु मेडिकल कॉलेज अस्पताल भोपाल ले जाया जाएगा एवं वापस पुन- सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र चिचोली में छोड़ दिया जाएगा जहां से सभी मरीज अपने गृह निवास को जा सकेंगे। गोपाल साहू प्रहलाद साहू अजय जीतपूरे ने जिले वासियों से इस विशाल जिला स्तरीय मोतियाबिंद जांच परामर्श एवं ऑपरेशन शिविर का लाभ लेने का आग्रह किया है।

समाज के लिये समय, श्रम और साधन लगाने वाला होता है ब्राह्मण

बैतूल। मनुष्य जन्म से शुद्र जन्म लेता है अच्छे कर्मों के माध्यम से ब्राह्मण बनता जाता है। ब्राह्मण वह है जो अपने समय, श्रम, साधन को समाज के लिए लगाता है। गुरु दीक्षा के माध्यम से अपनी इच्छा की गुरुदेव को समर्पित करना व गुरु की इच्छानुकूल कार्य करने से मनुष्य का जीवन सुधरता चला जाता है। ये विचार गायत्री परिवार के जिला कार्यक्रम प्रभारी धनराज धोटे ने ग्राम मंगोनाकला, प्रभातपट्टन में पंच कुंडीय गायत्री महायज्ञ के समापन अवसर पर दीक्षा संस्कार में व्यक्त किये। उन्होंने पं.श्रीराम शर्मा आचार्य को गुरु रूप में वरण करने की प्रक्रिया वैदिक मंत्रों को साक्षी में करवाई। ग्राम के लगभग 80 से अधिक परिजनों ने गुरुदीक्षा ली। उन्हें गायत्री महामंत्र का महत्व बताते हुए सदबुद्धि की कामना करके सद्कार्य

करने के लिए प्रेरित किया गया। इस अवसर उपजोन समन्वयक दिनेश देशमुख ने कहा कि युग निर्माण योजना भगवान की योजना हैं। इसमें सभी सहभागी बने व ज्योति कलश यात्रा की जानकारी देते हुए प्रज्ञा मंडलों व नवचेतना केन्दों के गठन के बारे में बताया। इस अवसर पर मंगोना प्रज्ञापीठ में प्रज्ञा वाचनालय का शुभारंभ अतिथियों द्वारा किया गया। यज्ञीय कार्यक्रम के समापन अवसर पर उपजोंन समन्वयक दिनेश देशमुख, उपजोन के सदस्य सम्पतराव धोटे, जिला समन्वयक डॉ कैलाश वर्मा, जिला सह समन्वयक रविशंकर पारखे, तहसील समन्वयक मुलताई नारायण देशमुख, तहसील समन्वयक प्रभातपट्टन सुभाष महस्की, जिला समन्वय समिति के अजय पवार, गुलाबराव चिल्हाटे, युवा सह समन्वयक अनूप वर्मा, यादोराव निम्बालकर, डॉ.रामदास गढ़ेकर, नारायण सिंह चौहान, रामदास देशमुख आदि शामिल हुए।

स्वर और श्रोताओं का संगम 11 जनवरी को

बैतूल। कैंसर मरीजों और दिव्यांगों के सहायतार्थ सामाजिक संस्था संतुलन के द्वारा 11 जनवरी 2025 को लाल बहादुर शास्त्री स्टेडियम में आयोजित म्यूजिकल नाइट को लेकर बैतूल शहर के अलावा बाहर के श्रोताओं में भी काफी उत्साह देखने को मिल रहा है। गुलाबी ठण्ड में स्वर और श्रोताओं का 11 जनवरी को बेहतरीन संगम होगा। संतुलन समिति के अध्यक्ष सजल प्रशांत गर्ग ने बताया कि म्यूजिकल नाइट को लेकर बैतूल के श्रोताओं में तो उत्साह है ही इसके अलावा बैतूल के बाहर से भी श्रोता लगातार संपर्क कर रहे हैं। श्री गर्ग ने बताया कि महाराष्ट्र के अमरावती, यवतमाल, आरवी और नागपुर, मध्यप्रदेश के इंदौर,भोपाल पांढुर्णा, नर्मदापुरम, इटारसी के साथ ही जिले के सारनी, बगडोना, पाथाखेड़ा, मुलताई, आमला सहित अन्य क्षेत्रों से भी श्रोता कार्यक्रम में शामिल होने के लिए 11 जनवरी को बैतूल पहुंचेंगे। युवा लोन्हारी कुंबी समाज सेवा संगठन के जिलाध्यक्ष एवं आयोजन समिति के सदस्य यशवंत मुन्ना मानकर ने बताया कि अंतर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त ढोलक वादक गिरीश विश्वा जिन्होंने सारे गामा पा और इंडियन आयडल के प्लेटफार्म से अपनी जो पहचान बनाई है आज वो अंतर्राष्ट्रीय स्तर तक पहुंच गई है। गिरीश विश्वा को लेकर युवाओं में भी काफी उत्साह है। म्यूजिकल नाइट को लेकर संगीत प्रेमी लगातार समिति के पदाधिकारियों से संपर्क कर रहे हैं।

पहली बार सोयाबीन की समर्थन मूल्य में खरीदी स्लॉट बुक करने के बाद भी 105 ने नहीं बेची उपज

समर्थन मूल्य में सोयाबीन बेचने 3057 ने कराया था पंजीयन, अंतिम तिथि तक मात्र 2079 ने बेची

संजय द्विवेदी, बैतूल। जिले में पहली बार समर्थन मूल्य पर सोयाबीन की खरीदी हुई, लेकिन सोयाबीन खरीदी को किसानों का समर्थन नहीं मिल पाया। आपको बता दे कि किसानों ने 6 हजार रुपए प्रति क्विंटल पर सोयाबीन खरीदी की मांग की थी, लेकिन सरकार ने सोयाबीन का समर्थन मूल्य 4892 रुपए तय किया था। जिन किसानों ने समर्थन मूल्य पर सोयाबीन बेची, उन किसानों को लगभग 24 करोड़ रुपए का भुगतान किया जा चुका है। जिन किसानों को भुगतान नहीं मिला है, उनके भी भुगतान की प्रक्रिया चल रही है। जल्द ही राशि भी खातों में पहुंच जाएगी। कृषि विभाग के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि समर्थन मूल्य पर खरीदी के लिए समर्थन मूल्य में सोयाबीन बेचने के लिए कुल 3057 किसानों ने पंजीयन कराया था। इसमें से 2079 किसानों ने सोयाबीन की बिक्री खरीदी केन्द्रों पर की है, जबकि 2184 किसानों ने स्लॉट बुकिंग कराया था। अंतिम तारीख के गुजरने के कारण 978 किसान समर्थन मूल्य पर उपज नहीं बेच पाये।

31 दिसंबर तक 6344 मेट्रिक टन सोयाबीन खरीदी- शासन ने समर्थन मूल्य पर सोयाबीन खरीदी 25 अक्टूबर से शुरू की थी, जिसकी अंतिम तारीख 31 दिसंबर निर्धारित की थी। इस दौरान 2079 किसानों से 6344 मेट्रिक टन सोयाबीन की खरीदी की गई। हालांकि

किसान संगठनों ने खरीदी की तारीख बढ़ाने की शासन से मांग भी की, लेकिन खरीदी की स्थिति को देखते हुए शासन ने तय तारीख को ही खरीदी बंद कर दी। जिले की बात करें तो पंजीयन कराने वाले किसानों की तुलना में दो-तिहाई किसानों ने ही अपनी उपज को समर्थन मूल्य पर बेचा। इसका सबसे बड़ा कारण शासन द्वारा खरीदी के निर्धारित सख्त नियम व उपज मंडी में नगद भुगतान मिलना भी माना जा रहा है।

सोयाबीन खरीदी के लिए बनाये थे 13 केन्द्र- जिले के सोयाबीन खरीदी के लिए 13 खरीदी केन्द्र बनाये गये थे। इन केन्द्रों पर सोयाबीन बेचने के लिए किसानों ने पंजीयन भी किया था, लेकिन जितने किसानों ने उपज बेचने के लिए पंजीयन कराया, उससे कम ही किसानों ने सोयाबीन बेची। कृषि विभाग से मिली जानकारी के अनुसार जिले में करीब 105 किसान ऐसे भी रहे, जिन्होंने स्लॉट तो बुक कराया था, लेकिन उपज नहीं बेची। इन किसानों को खरीदी केन्द्र पर उपज लाने के लिए मैसेज भी भेजे गये, लेकिन किसान उपज लेकर नहीं पहुंचे। जिसके कारण 105 किसान समर्थन मूल्य पर सोयाबीन की उपज बेचने से वंचित रह गये। हालांकि किसानों को उम्मीद थी कि खरीदी की तिथि आगे बढ़ेगी, लेकिन शासन ने निर्धारित तिथि के बाद खरीदी बंद कर दी।

1608 किसानों का भुगतान

शासन ने जिन किसानों से सोयाबीन की खरीदी की थी, उनमें से 1608 किसानों को भुगतान कर दिया गया है। कृषि विभाग के उप संचालक आनंद बडोनिया ने बताया कि इन किसानों को करीब 24 करोड़ का भुगतान हो चुका है। 31 दिसंबर तक लगभग 471 किसान भुगतान पाने से शेष रह गये थे, जिनके भुगतान की प्रक्रिया भी जारी है। जल्द ही इन किसानों के खातों में राशि पहुंच जाएगी। बता दे कि शासन ने सोयाबीन खरीदी के लिए प्रति टन 4892 रूपये की राशि तय की थी। इसके बावजूद भी किसानों ने समर्थन मूल्य को समर्थन न देते हुए मंडी में अपनी उपज बेची।

मंडी में बिका 1 लाख 46 हजार क्विंटल सोयाबीन

कृषि उपज मंडी को सोयाबीन बेचने वाले किसानों ने खासा समर्थन दिया। कृषि उपज मंडी बडोरा की सचिव शीला खातरकर ने बताया कि 1 अक्टूबर 2024 से 31 दिसंबर 2024 तक करीब 1 लाख 46 हजार 175.6 क्विंटल सोयाबीन की खरीदी मंडी में हुई। जबकि मंडी में शुरू-शुरू में किसानों को सोयाबीन के अच्छे दाम मिले, लेकिन बाद में समर्थन मूल्य से कम ही दाम पर सोयाबीन किसानों ने बेची। इसके पीछे किसानों ने तर्क दिया कि मंडी में एक तो नगद भुगतान मिल जाता है। दूसरा सोयाबीन खरीदी के वक्त अचानक बारिश हो गई। जिससे कई किसानों का सोयाबीन काला पड़ गया। जबकि समर्थन मूल्य पर सोयाबीन खरीदी के लिए 12 प्रतिशत नमी सहित अन्य मापदंड निर्धारित थे। ऐसे में किसानों ने मंडी में ही सोयाबीन की उपज बेचना उचित समझा। इससे कई किसानों को घाटा भी सहना पड़ा।

इनका कहना है -

जिले में सोयाबीन बेचने के लिए 3057 किसानों ने पंजीयन कराया था। जिसमें से 2079 किसानों ने 6344 मेट्रिक टन सोयाबीन बेचा है। 1608 किसानों को भुगतान भी कर दिया है। इस बार सोयाबीन कटाई के वक्त बारिश आने से सोयाबीन काला पड़ गया था। पहली बार समर्थन मूल्य पर सोयाबीन की खरीदी हुई और अनुमान के मुताबिक खरीदी भी हुई है।

- आनंद बडोनिया,
उप संचालक, कृषि विभाग बैतूल

बैतूल और घोड़ाडोंगरी विस में करोड़ों की लागत से बनेगे उप स्वास्थ्य

आमजनता को मिलेगी बेहतर स्वास्थ्य सुविधाएं, उपमुख्यमंत्री ने दी सौगात

बैतूल। बैतूल विधानसभा अंतर्गत आधा दर्जन उपस्वास्थ्य केन्द्रों में 3 करोड़ 90 लाख रूपए की लागत से सर्वसुविधायुक्त भवनों का निर्माण होगा। बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल की अनुशंसा पर मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री स्वास्थमंत्री नें यह बड़ी सौगात दी है। भवन के अभाव में विभिन्न शासकीय भवनों में संचालित हो रहे 6 उपस्वास्थ केन्द्र भवनों का निर्माण 15 वे वित्त आयोग की राशि से किया जाएगा। राष्ट्रीय स्वास्थ मिशन नें प्रत्येक उपस्वास्थ केन्द्र भवन निर्माण के लिए 65 लाख रुपये स्वीकृत किए है। बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल की अनुशंसा पर मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री स्वास्थ मंत्री राजेन्द्र शुक्ल नें राष्ट्रीय स्वास्थ मिशन मध्यप्रदेश के तहत 15 वे वित्त आयोग योजना से बैतूल विधानसभा क्षेत्र के 6 ग्रामों में संचालित भवन विहीन उपस्वास्थ केन्द्रों के भवन निर्माण के लिए 3 करोड़ 90 लाख रुपये स्वीकृत किए है। बैतूल विधानसभा क्षेत्र के बोरपानी, कनारा (बोथी सियार) मलकापुर, माथनी, सांईखंडारा, सेलगाँव (बारव्ही) ग्रामों में 65-65 लाख रुपये के सर्वसुविधायुक्त उपस्वास्थ केन्द्र भवनों का निर्माण होगा। बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल ने बताया कि उपस्वास्थ केन्द्र भवन में सामुदायिक स्वास्थ अधिकारी, महिला बहुउद्देशीय कार्यकर्ता के लिए आवास गृह के निर्माण के साथ नलकूप खनन एवं बाउंड्रीवॉल का निर्माण भी होगा। जिससे उपस्वास्थ केन्द्र परिसर सुरक्षित रहेगा और पेयजल की व्यवस्था भी रहेगी। जिससे ग्रामीणों को और बेहतर स्वास्थ सेवाएं मिलेगी।

घोड़ाडोंगरी विस में बनेगे 12 उप स्वास्थ केन्द्र और 2 प्राथमिक स्वास्थ केन्द्र

भौंरा। आमजनता को बेहतर स्वास्थ सुविधाएं उपलब्ध हो, इसके लिए घोड़ाडोंगरी विधानसभा क्षेत्र के विभिन्न गांवों में 12 उप स्वास्थ्य केन्द्र और दो प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का निर्माण होगा, वहीं चिचोली में 50 बिस्तरीय सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र चिचोली का निर्माण मय विकास कार्य किया जायेगा। इन निर्माण कार्यो के लिए प्रशासनिक स्वीकृति मिल चुकी है। करीब 20करोड़ 93 लाख की लागत से यह सभी निर्माण कार्य होगे। घोड़ाडोंगरी विधानसभा क्षेत्र के चिचोली में 995 लाख, शाहपुर के बीजादेही में प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र का 159 लाख और घोड़ाडोंगरी के पाढर में 159 लाख से प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र निर्माण होगा। इसके अलावा अलीगंज, गजपुर (लापाझिरी) आवरिया (केसिया) बेला, गवासेन, गोधना, नसीराबाद, टांडा, ऊचागोहान, कुप्पा, नीमपानी और शक्तिगढ़ में 65-65 लाख की लागत से सर्वसुविधायुक्त उप स्वास्थ्य केन्द्र भवन बनेगे। घोड़ाडोंगरी विधायक गंगा उइके की अनुशंसा पर मध्यप्रदेश के उपमुख्यमंत्री स्वास्थमंत्री नें यह बड़ी सौगात दी है।

110 करोड़ बाजार मूल्य की भूमि शासन के नाम दर्ज

कई महत्वपूर्ण कार्ययोजनाएं की जाएगी प्रस्तावित

बैतूल। शहर के कोठी बाजार क्षेत्र में स्थित ईएलसी स्कूल संचालन क्षेत्र की लगभग 2 लाख 23 हजार 515 वर्ग फुट की भूमि को शर्त उल्लंघन की दशा में लीज निरस्त करते हुए शासन के नाम दर्ज करने की कार्यवाही की गई है। इस बेसकीमती भूमि का बाजार मूल्य लगभग 110 करोड़ हैं। डिस्ट्रिक्ट मजिस्ट्रेट बैतूल श्री नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार न्यायालय अपर कलेक्टर द्वारा भूमि की लीज निरस्त करने के संबंध में आदेश जारी किए गए हैं। अपर कलेक्टर श्री राजीव नंदन श्रीवास्तव द्वारा जारी आदेश के तहत भूमि की लीज निरस्त करते हुए उसे शासकीय भूमि के रूप में दर्ज किया गया है। आगामी समय में इस भूमि पर कई महत्वपूर्ण कार्ययोजना प्रस्तावित की जाएगी। भूमि संबंधी लीज शर्तों के उल्लंघन पर जिला प्रशासन द्वारा बड़ी कार्यवाही की गई है। 3 जनवरी को अपर कलेक्टर न्यायालय द्वारा इस संबंध में आदेश जारी किए गए।

गुरु गोविंद सिंह जी का प्रकाश पर्व आज

बैतूल। सिखों के दसवें गुरु, धन धन श्री गुरु गोविंद सिंह महाराज जी का प्रकाश पर्व आज 6 जनवरी को गुरुद्वारा गुरु सिंह सभा बैतूल में श्रद्धा, भाव और सत्कार के साथ मनाया जाएगा। इस पावन अवसर पर विशेष धार्मिक कार्यक्रमों का आयोजन किया जाएगा। गुरुद्वारे में सुबह 11.30 बजे से दोपहर 1.30 बजे तक विशेष कीर्तन का आयोजन होगा, जिसमें गुरु घर के ज्ञानी भाई अरविंदर सिंह अपनी अमृतमयी वाणी से संगत को निहाल करेंगे। इसके बाद दोपहर 1.30 बजे से दोपहर 3.30 बजे तक गुरु का लंगर बरताया जाएगा, जिसमें सभी श्रद्धालु प्रसादी ग्रहण करेंगे। उल्लेखनीय है कि गुरु गोविंद सिंह जी का प्रकाश पर्व सिख समाज के लिए विशेष महत्व रखता है। उन्होंने सिख धर्म को नई दिशा दी।

छत्तीसगढ़ में पत्रकार की जघन्य हत्या के विरोध में पत्रकार कल्याण परिषद बैतूल ने सौंपा ज्ञापन

कलेक्टर-एएसपी और पीआरओ से मुलाकात कर जताया रोष

बैतूल। गत दिनों बीजापुर (छत्तीसगढ़) के भ्रष्टाचार को उजागर करने वाले युवा पत्रकार मुकेश चंद्राकर की बेरहमी से हत्या किये जाने के विरोध में पत्रकार कल्याण परिषद की जिला इकाई बैतूल के पत्रकारों द्वारा कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी एवं एएसपी कमला जोशी से मुलाकात कर उन्हें छत्तीसगढ़ के राज्यपाल और मुख्यमंत्री के नाम से ज्ञापन सौंपा। जिसमें मांग की गई है कि आरोपियों को जल्द से जल्द गिरफ्तार कर उन्हें कड़ी से कड़ी सजा दी जाये। उल्लेखनीय है कि बीजापुर के पत्रकार श्री चंद्राकर ने ठेकेदार द्वारा सडक़ निर्माण में भारी भ्रष्टाचार को लेकर खबरें प्रकाशित की थी, ऐसा संदेह जताया जा रहा है कि इसी के चलते भ्रष्टाचारियों द्वारा उनकी हत्या करके शव को सेप्टी टैंक में फेंक दिया था। इस मौके पर बैतूल कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी ने भी पत्रकार की हत्या पर शोक जताते हुए कहा कि इस घटना से लोकतंत्र का चौथा स्तंभ आहत हुआ है। ज्ञापन सौंपने वालों में पत्रकार कल्याण परिषद नर्मदापुरम संभाग प्रभारी वरिष्ठ पत्रकार राधेश्याम सिन्हा, बैतूल जिलाध्यक्ष वरिष्ठ पत्रकार कैलाश प्रसाद अग्निहोत्री, महासचिव वरिष्ठ पत्रकार संजय द्विवेदी, जिला उपाध्यक्ष डीआर विक्की लिलहोरे, धनराज मालवीय, शिवा गुप्ता, चंद्रशेखर यादव, प्रसून चौधरी सहित अन्य पत्रकार गण उपस्थित थे।

नूतन वर्ष व सफलतापूर्वक एक वर्ष पूर्ण होने पर दी बधाई

राष्ट्रीय पत्रकार कल्याण परिषद की बैतूल इकाई द्वारा ज्ञापन सौपने के बाद बैतूल कलेक्टर नरेंद्र सूर्यवंशी को पुष्प गुच्छ भेंट कर उन्हें नूतन वर्ष एवं जिले में उनके सफलतापूर्वक एक वर्ष के कार्यकाल पूर्ण करने पर हार्दिक शुभकामनाएं दी। गौरतलब है कि पत्रकार कल्याण परिषद की बैतूल इकाई द्वारा परंपरागत ढंग से हमेशा नवागत कलेक्टर/ एसपी सहित अन्य उच्च अधिकारियों का स्वागत-सत्कार करते हैं और समय-समय पर जैसे राष्ट्रीय पर्व होली-दीपावली, नववर्ष आदि पर, ऐसे जिले के जिम्मेदार बड़े प्रशासनिक अधिकारियों को पुष्प गुच्छ भेंटकर शुभकामनाएं देते रहते हैं। कलेक्टर को ज्ञापन के पहले पत्रकारो ने एसपी ऑफिस पहुँचकर एसपी के बाहर भ्रमण पर होने के चलते एएसपी कमला जोशी से मिलकर उन्हें भी ज्ञापन दिया। इस दौरान पत्रकारों ने एएसपी श्रीमती जोशी से पत्रकार सुरक्षा के मुद्दे के अलावा जिले में घटित हो रही अपराधिक घटनाओं पर चर्चा की। इसके बाद पत्रकार कल्याण परिषद की टीम द्वारा जनसंपर्क अधिकारी बैतूल रोमित उईके से मुलाकात कर उन्हें पत्रकारों के हित में आवश्यक कदम उठाने का आग्रह करते हुए विस्तार से चर्चा की गई। इसके बाद उन्हें नववर्ष की शुभकामनाएं देते हुए पुष्प गुच्छ का गुलदस्ता भेंट किया। पत्रकार कल्याण परिषद के इस परंपरागत तरीके की जनसंपर्क अधिकारी रोमित उइके ने सराहना की।

विकास की सभी संभावनाओं पर व्यापक स्तर पर काम कर रहे हैं पीएम-सीएम: डीडी उइके

केन्द्रीय राज्यमंत्री, बैतूल विधायक ने किया 6.29 करोड़ के विकास कार्यों का लोकार्पण-भूमिपूजन

बैतूल। केन्द्रीय राज्य मंत्री दुर्गादास उइके ने कहा कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी एवं मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव शिक्षा, स्वास्थ, रोजगार सहित विकास की सभी संभावनाओं पर

व्यापक स्तर पर काम कर रहे है। परिणाम स्वरूप देशभर में गाँव से लेकर शहर तक तरक्की नजर आ रही है। उन्होनें कहा कि म.प्र के मुख्यमंत्री की संकल्पना से वार्डो मे संजीवनी क्लीनिक बन रहे है जिससे वार्ड वासियों को स्थानीय स्तर पर ही स्वास्थ सुविधाएं मिल रही है। बैतूल नगर के दुर्गावार्ड हमलापुर क्षेत्र में 27 लाख 49 हजार रुपये की लागत से निर्मित संजीवनी क्लीनिक भवन के लोकार्पण कार्यकम में केन्द्रीय राज्यमंत्री दुर्गादास उइके नें उक्त बातें कही। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें कहा कि मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव की मंशा है कि साधारण इलाज के लिए वार्ड, मोहल्ले,गरीब बस्तियों में संजीवनी क्लीनिक संचालित किए जाए। जिससे साधारण बीमारी के इलाज के लिए वार्डवासियों,गरीबों को जिला अस्पताल नहीं जाना पडेगा। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें कहा कि मोहल्ला क्लीनिक में ईलाज के लिए एक डॉक्टर सहित दो मेडीकल स्टाफ की व्यवस्था रहेगी साथ ही जेनरिक मेडीसिन भी निःशुल्क मिलेगी।

इन विकास कार्यो की दी सौगात

केन्द्रीय राज्य मंत्री डी.डी.उइके,बैतूल विधायक हेमंत खण्डेलवाल नें रविवार को बैतूल नगर के विभिन्न वार्डो में 6 करोड़ 29 लाख 87 हजार रुपये के विकास कार्यो का भूमिपूजन लोकार्पण कर वार्ड वासियों को सौगात दी। इस दौरान बैतूल नपा अध्यक्ष श्रीमती पार्वती बाई बारस्कर, उपाध्यक्ष श्री महेश राठौर सहित पार्षदगण मौजूद रहे। केन्द्रीय राज्यमंत्री एवं बैतूल विधायक ने महावीर वार्ड में 15 लाख 22 हजार रुपये की लागत की 200 मीटर सीसी रोड का भूमिपूजन किया। साथ ही गाँधी वार्ड में 66लाख 83 हजार रुपए की लागत से 5 लाख 15 हजार लीटर क्षमता की उच्च स्तरीय पेयजल टंकी के विकास कार्य,दुर्गा वार्ड में 27 लाख 49 हजार रुपये से निर्मित संजीवनी क्लीनिक भवन का लोकार्पण एवं किदवई वार्ड ट्रेचिंग ग्राउंड मे 5 करोड 70 लाख 33 हजार रुपये लागत की लीगेसी डंप साइट रेमेडिएशन परियोजना कार्य का शुभारंभ किया। बैतूल विधायक श्री खण्डेलवाल नें कहा कि केन्द्रीय मंत्री के विशेष प्रयासों से उक्त बडी परियोजना स्वीकृत हुई है। जिससे आगामी समय में यहा डम्प कचरे की समस्या से क्षेत्र वासियों को मुक्ति मिल जाएगी। भूमिपूजन-लोकार्पण कार्यक्रमों में गंज मंडल अध्यक्ष विकास मिश्रा,सांसद प्रतिनिधी कैलाश बंडू धोटे,पार्षदगण नितेश पिंटू परिहार, संतोष भलावी, नरेन्द्र हरसुले, आभा श्रीवास्तव, रेणुका यादव, सोमती धुर्वे, कायम कावरे, वर्षा बारस्कर, किरण खातरकर, पूर्व पार्षद पवन यादव,डॉ अरूण जयसिंघपुरे, सिराज पठान,पार्टी पदाधिकारी गणमान्य नागरिक, अधिकारीगण सहित अन्य लोग मौजूद रहे।

विवेकानंद केंद्र द्वारा अमृत परिवार मिलन आयोजित

भोपाल। विवेकानंद केन्द्र कन्याकुमारी शाखा भोपाल द्वारा अमृत परिवार कार्यक्रम–परिवार मिलन व भारत माता पूजन कार्यक्रम केन्द्र कार्यालय पर आयोजित हुआ, जिसमें खेल,गीत चर्चा हुई उसके पश्चयात भारत माता का पूजन किया गया, एवं सभी कार्यकर्ताओं ने एक उन्नत राष्ट्र के लिए संकल्पना की। कार्यक्रम में एक साथ बड़ी संख्या में कार्यकर्ताओं का मिलना हुआ, इस मौके पर भोपाल नगर के नगर प्रमुख ने कहा - अमृत परिवार मिलन कार्यक्रम का उद्देश्य हमारी संस्कृति और संस्कार को संजोए रखना है। प्रत्येक परिवार भारतीय परंपरा को संरक्षित करने में अपना योगदान दे, और राष्ट्र कार्य में अपनी भी भूमिका निभाये।

नवीन तकनीक अपनाने में भारत अग्रणी : मुख्यमंत्री डॉ. यादव

मुख्यमंत्री ने किया ड्रोन प्रशिक्षण केन्द्र का उद्घाटन

भोपाल (नप्र)। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने कहा कि प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की दूरदृष्टि के कारण ड्रोन टेक्नोलॉजी को देश में बढ़ावा मिला है। नमो ड्रोन दीदी जैसी योजना से महिलाओं को सशक्त बनाने में मदद मिली है। उन्होंने कहा कि नवीन तकनीकों को अपनाने में भारत अग्रणी बन रहा है। आज के समय में खेतों में दवा छिड़काव से लेकर अन्य अनेक ऐसे क्षेत्र हैं जहाँ ड्रोन टेक्नोलॉजी का बेहतर उपयोग हो रहा है। मुख्यमंत्री डॉ. यादव इंदौर में ड्रोन प्रशिक्षण केन्द्र का शुभारंभ करने के बाद कार्यक्रम को संबोधित कर रहे थे। यह प्रशिक्षण केंद्र मध्यप्रदेश फ्लाइंग क्लब और कस्तूरबा ग्राम ट्रस्ट के संयुक्त उपक्रम से प्रारंभ हुआ है।

ड्रोन के साथ होगी मध्यप्रदेश की प्रगति की भी नई उड़ान– कार्यक्रम में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने स्वयं भी ड्रोन उड़ाकर देखा। ड्रोन उड़ाते हुए मुख्यमंत्री डॉ.यादव ने प्रतीकात्मक रूप से दिखाया कि मध्यप्रदेश भी इसी तरह विकास की नई उड़ान भर रहा है। उन्होंने कहा कि मध्यप्रदेश का विशाल भौगोलिक क्षेत्र और वन संपदा के प्रबंधन में ड्रोन की यह टेक्नोलॉजी मददगार सिद्ध होगी।

सीएम 66 मेडिकल मोबाइल यूनिट को आज करेंगे रवाना

भोपाल (नप्र)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के 'सबका साथ, सबका विकास, सबका विश्वास और सबका प्रयास' के मूलमंत्र के अनुक्रम में प्रदेश के दूरस्थ और पिछड़े क्षेत्रों तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचाने के लिए 'पीएम जनमन' के अंतर्गत मोबाइल मेडिकल यूनिट (रूरू) सेवा की शुरुआत की जा रही है। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव सोमवार 6 जनवरी को पीएम जनमन योजना के तहत 21 जिलों के 87 विकासखंडों के लिए 66 मोबाइल मेडिकल यूनिट को हरी झंडी दिखाकर रवाना करेंगे। मुख्यमंत्री निवास श्यामला हिल्स में कार्यक्रम होगा। इन मोबाइल मेडिकल यूनिट से प्रदेश के दूरस्थ अंचलों में स्वास्थ्य सेवाओं की सुगम प्रदायगी सुनिश्चित होगी।

प्रत्येक मोबाइल मेडिकल यूनिट की लागत 33 लाख 86 हजार रूपये है। इस यूनिट से अनूपपुर, अशोक नगर, बालाघाट, छिंदवाड़ा, दतिया, डिंडोरी, गुना, ग्वालियर, कटनी, मंडला, मुरैना, नरसिंहपुर, सतना, शहडोल, श्योपुर, सीधी, शिवपुरी, जबलपुर, रायसेन, उमरिया एवं विदिशा जिले के 87 विकासखंड के 1268 गांव की लगभग 3 लाख 12 हजार से अधिक की आबादी को सुगम स्वास्थ्य सेवाएं मिल सकेंगी। जीपीएस से लैस इन यूनिट में सक्शन मशीन, कान जांच की आटो स्कोप, एक्स-रे मशीन, स्ट्रेक्चर, ऑक्सीजन सिलेंडर आदि उपकरण होंगे।

कांग्रेस ने सौरभ शर्मा भ्रष्टाचार कांड की सीबीआई जांच और मंत्री की बर्खास्तगी की मांग को लेकर राजपूत का बंगला घेरा

मुख्यमंत्री के नाम सौंपा एसीपी को ज्ञापन, सीबीआई जांच नहीं तो कांग्रेस अजा विभाग करेगा उग्र आंदोलन

भोपाल। प्रदेश कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग के प्रदेष अध्यक्ष प्रदीप अहिरवार ने नेतृत्व में परिवहन विभाग के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा और आयकर विभाग द्वारा इंदौर, ग्वालियर और भोपाल सहित अन्य दर्जनों ठिकानों पर की गई छापेमारी एवं सौरभ शर्मा एवं मंत्री गोविंद राजपूत की बर्खास्तगी एवं सीबीआई जांच की मांग को लेकर आज राजधानी भोपाल के इंडियन कॉफी हाउस से मंत्री गोंविद राजपूत के बंगले तक पैदल मार्च कर विरोध प्रदर्षन किया किया गया और मुख्यमंत्री के नाम ज्ञापन एसीपी श्री पांडे जी को सौंपा गया।

श्री अहिरवार ने प्रदर्षन एवं घेराव कार्यक्रम के दौरान सौंपे ज्ञापन अनुसार बताया कि परिवहन विभाग के पूर्व आरक्षक सौरभ शर्मा के यहां विगत 19 दिसम्बर 2024 को लोकायुक्त की कार्यवाही के दौरान पड़े छापे में मिली अकूत संपत्ति जिसमें चल और अचल करोड़ों रूपयों की संपत्ति शामिल है, लोकायुक्त द्वारा पड़े छापे के बाद आयकर विभाग द्वारा सौरभ शर्मा के विरूद्ध की गई जांच में भी नये खुलासे हुये जिसमें सौरभ शर्मा की डायरी में अनेकों लोगों के नाम मिले, जिसमें पूर्व परिवहन मंत्री श्री गोविंद राजपूत के सौरभ शर्मा से करीबी संबंध उजागर हुये हैं। राजधानी भोपाल से सटे मेंडोरी गांव के एक फार्म हाउस में एक इनोवा गाड़ी में करीब 52 किलो सोना और 11 करोड़ रूपये की नगद राषि पकड़ाई गई। सौरभ शर्मा के यहां मिली करोड़ों की अकूत संपत्ति के दौरान ही एक फार्म हाउस में 52 किलो सोना व बड़ी मात्रा में नगदी मिलना एक बड़ी सांठगांठ की ओर इंगित करता है।

श्री अहिरवार ने कहा कि इन दोनों मामलों में सामने आ रही स्थितियों में लोकायुक्त और आयकर विभाग के

कमिष्नर और अधिनस्थ अधिकारियों और कर्मचारियों की संदिग्ध भूमिका प्रतीत होती है। लोकायुक्त और आयकर की जांच के बाद ईडी की जांच प्रारंभ होने पर ओर भी बड़े-बड़े खुलासे सामने आ रहे है। सौरभ शर्मा भ्रष्टाचार कांड में हजारों करोड़ रूपयों का भ्रष्टाचार सामने आया है। प्रदेष की भाजपा सरकार में जहां एक ओर भूमाफिया, षिक्षा माफिया, खनिज माफिया संरक्षित हो रहे थे अब सोना-चांदी माफिया भी उभरकर सामने आ गये हैं। जिससे प्रदेष शर्मसार हुआ है।

श्री अहिरवार ने कहा कि इस मामले को लेकर मध्यप्रदेष कांग्रेस कमेटी अनुसूचित विभाग ने ज्ञापन में शामिल बिंदुओं पर मांग की है कि तत्कालीन परिहवन एवं वर्तमान खाद्य नागरिक आपूर्ति मंत्री श्री गोविंद सिंह राजपूत को तत्काल प्रभाव से मंत्रीमंडल से बर्खास्त किया जाये। साथ ही मंत्री श्री गोविंद राजपूत और सौरभ शर्मा की कॉल डिटेल, डायरी एवं दोनों के निवास के सीसीटीवी कैमरों की डिटेल उजागर की जाये। डायरी में मिली जानकारी और उसमें संलिप्त लोगों के नामों, अकूत चल-अचल संपत्ति का खुलासा कर उसे उजागर किया जाये। सौरभ शर्मा की 2016 में परिवहन विभाग में आरक्षक पद पर नियम विरूद्ध अनुकंपा नियुक्ति दी गई थी। नियुक्ति के दौरान शासकीय नस्तियां पर की गई सिफारिष की समस्त प्रतियों की जांच कर नियुक्ति देने वाले समस्त अधिकारियों पर विधि सम्मत कार्यवाही की जाये।

श्री अहिरवार ने कहा कि जनवरी 2024 से 30 जून 2024 तक खवासा, मुलताई, मालथौन और चिरौला आरटीओ चैक पोस्ट पर सौरभ शर्मा द्वारा नौकरी से त्याग पत्र देने के बाद भी किसके संरक्षण में सौरभ शर्मा उक्त चेक पोस्टों पर वसूली करता रहा, उसकी जांच हो। साथ ही विगत 1 जुलाई 2024 से मप्र सरकार द्वारा परिवहन चैक पोस्ट बंद कर दिये गये हैं, उसके बावजूद भी परिवहन विभाग के आदेषों को धता बताते हुये उड़नदस्ता द्वारा की जा रही अवैध वसूली की जांच करायी जाये। सौरभ शर्मा के यहां पड़े छापे सहित एक दिन पूर्व 18 दिसंबर को आयकर विभाग द्वारा इंदौर, ग्वालियर सहित भोपाल के 49 अन्य स्थानों पर पड़े छापों की संयुक्त रूप से सीबीआई जांच करायी जाये। सरकार इन पहलुओं पर कार्यवाही अथवा सीबीआई जांच नहीं कराती है तो कांग्रेस अनुसूचित जाति विभाग इस मामले को लेकर प्रदेषस्तरीय उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होगा।

इस अवसर पर कांग्रेस अजा विभाग के पदाधिकारीगण सर्वश्री हेमंत नरवरिया, मुकेश बंसल, नीरज चंडाले, कुणाल गजभिये, जगन्नाथ अहिरवार, दर्शन कोरी, टी.आर. गेहलोत, रमेष बकोरिया, शुभम इंद्रासे, दिलावर ओसवाल, शुभम अहिरवार, विनय मालवीय, मणि अहिरवार, प्रवेश परिहार, रविन्द्र पासवान, कृष्णा चौधरी, प्रेमनारायण ठाकरे, कमलेश खातरकर, उमेश महोले, विजय अहिरवार, रिहांस, अजय सोनवाने, सचिन अहिरवार, अखिलेष चौधरी सहित बड़ी संख्या में कांग्रेस उपस्थित थे।

31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के तीसरे दिन मेपकास्ट के

क्रिएटिव लर्निंग सेंटर में विद्यार्थियों ने समझे विज्ञान और तकनीकी के सिद्धांत

भोपाल। 31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के तीसरे दिन विद्यार्थियों के प्रोजेक्ट्स का मूल्यांकन पूर्ण हुआ और विभिन्न कार्यशालाओं के माध्यम से उन्हें विद्यार्थियों को नया सीखने का अवसर प्राप्त हुआ।

'प्रेरणादायक नवाचारी' विषय पर विज्ञान शिक्षकों के लिए आयोजित कार्यशाला में आइसर पुणे के प्राध्यापक डॉ चैतन्य पुरी के व्याख्यान ने शिक्षा और विज्ञान में नवाचार के प्रेरक, बच्चों को सिखाने के अनोखे तरीके पेश किए । शिक्षा को दिलचस्प और व्यावहारिक बनाने के उद्देश्य से आयोजित एक कार्यक्रम में डॉ. चैतन्यपुरी ने अपने प्रेरणादायक विचारों और नवाचार के अनूठे तरीकों को साझा किया। उन्होंने बताया कि कैसे शिक्षकों की बॉडी लैंग्वेज और प्रैक्टिकल तरीकों का उपयोग शिक्षा को प्रभावशाली और सरल बना सकता है। अरविंद गुप्ता के शिक्षा दर्शन से प्रेरणा लेते हुए उन्होंने विज्ञान और गणित को समझाने के कई अनोखे और रचनात्मक तरीकों का प्रदर्शन किया। डॉ. चैतन्यपुरी ने बताया कि शिक्षक शिक्षा को सिर्फ पढ़ाने तक सीमित न रखें, बल्कि बच्चों को गतिविधियों और प्रैक्टिकल मॉडल्स के माध्यम से विषयों को समझने में मदद करें। उदाहरण के लिए, उन्होंने स्ट्रॉ का उपयोग करके तरंगों के प्रकार–अनुदैर्ध्य और अनुप्रस्थ समझाने का तरीका दिखाया। साथ ही, उन्होंने डीएनए की हेलिकल संरचना, तरंगदैर्ध्य ,आवृत्ति और आयाम को सरल भाषा और मॉडल्स के माध्यम से समझाने का प्रयास किया। उन्होंने सुझाव दिया कि खेलों और गतिविधियों के माध्यम से विज्ञान को पढ़ाया जाए। उदाहरण के लिए, सेंट्रिपिटल फोर्स को समझाने के लिए उन्होंने एक सरल गतिविधि का प्रदर्शन किया, जिसमें पाई और ध्वनि तरंगों की मदद से अवधारणाओं को जीवंत किया गया। छात्रों को प्रेरित करने के लिए उन्होंने ऐसे प्रयोग सुझाए जो न केवल विषय को आकर्षक बनाते हैं, बल्कि उनकी सोचने की क्षमता को भी विकसित करते हैं। गणित और ज्यामिति जैसे विषयों को सरल और मजेदार बनाने के लिए उन्होंने त्रिभुजों के प्रकार, लेजर लाइट की मदद से 3ष्ठ ज्यामिति के मॉडल, और स्पाइरोग्राफ जैसे उपकरणों का उपयोग करके पढ़ाने के तरीके बताए। उन्होंने कहा

कि गणित डरावना नहीं है, बल्कि इसे रोचक बनाने के लिए शिक्षकों को नए तरीके अपनाने होंगे। डॉ. चैतन्यपुरी ने बताया कि विज्ञान और गणित को समझाने के लिए महंगे उपकरणों की आवश्यकता नहीं होती। उन्होंने मोटर, तार, शीशे, और अन्य पुराने सामानों का उपयोग करके उपयोगी मॉडल और उपकरण बनाने का तरीका समझाया। उनका मानना है कि रोजमर्रा की चीजों का उपयोग करके नवाचार को बढ़ावा दिया जा सकता है। उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में पानी की समस्या का उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे नवाचार के माध्यम से स्थानीय समस्याओं को हल किया जा सकता है। उन्होंने सरल मॉडल्स का उपयोग करके छात्रों को यह समझाया कि पानी की कमी और स्वास्थ्य से जुड़ी समस्याओं को विज्ञान के प्रयोगों के माध्यम से दूर किया जा सकता है। डॉ. चैतन्यपुरी ने शिक्षकों को प्रोत्साहित किया कि वे छात्रों से अधिक से अधिक सवाल पूछें ताकि उनकी जिज्ञासा और सीखने की प्रवृत्ति बढ़ सके। उन्होंने कहा, गणित और विज्ञान डरावने नहीं हैं, बस उन्हें सही तरीके से पढ़ाने की जरूरत है। उन्होंने जोर दिया कि ऑनलाइन प्रैक्टिकल हमेशा सही नहीं होते, बल्कि खुद के प्रयोगों और गलतियों से सीखना अधिक महत्वपूर्ण है। उनका मानना है कि मानव त्रुटियां शिक्षा का एक अभिन्न हिस्सा हैं, और उनसे सीखकर ही नवाचार किया जा सकता है। डॉ. चैतन्यपुरी ने बताया कि आज के युग में शिक्षा को डिजिटल प्लेटफॉर्म्स के माध्यम से और अधिक सुलभ और रोचक बनाया जा सकता है। उन्होंने शिक्षकों और छात्रों को प्रेरित किया कि वे नवीन तकनीकों और उपकरणों का उपयोग करके अपने शिक्षण और सीखने की प्रक्रिया को आधुनिक बनाएं। 'नवाचार की कोई सीमा नहीं होती,' यह कहते हुए डॉ. चैतन्यपुरी ने छात्रों और शिक्षकों को प्रेरित किया कि वे शिक्षा को किताबों तक सीमित न रखें, बल्कि उसे प्रायोगिक और मजेदार बनाएं।

31वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान कांग्रेस के तहत आज एक विशेष सत्र में बंगलुरु के शैक्षिक रणनीतिकार श्री राज किशोर ने शिक्षकों और छात्रों को तकनीक और नवाचार के महत्व पर प्रेरित किया। इस सत्र का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों को 'चैटजीपीटी,'फिल्टर बबल, और तकनीकी नवाचार के प्रभावों के प्रति जागरूक करना था। राज किशोर ने फिल्टर बबल की अवधारणा को विस्तार से समझाते हुए कहा कि डिजिटल प्लेटफॉर्म हमारी सोच को सीमित कर सकते हैं। उन्होंने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म जैसे इंस्टाग्राम, स्नैपचैट, टेलीग्राम और फेसबुक के नकारात्मक प्रभावों पर प्रकाश डाला। उन्होंने शिक्षकों और छात्रों को सलाह दी कि डिजिटल उपकरणों का संतुलित उपयोग ही सबसे बेहतर तरीका है। राज किशोर ने चैटजीपीटी की अनुकूलन क्षमताओं की चर्चा करते हुए बताया कि यह गूगल से कहीं अधिक व्यक्तिगत और उपयोगकर्ता-केंद्रित है।

जनता की सेवा हमारा ध्येय- गौर

एक करोड़ 32 लाख रुपए के विकास कार्यों का किया भूमि-पूजन

भोपाल(नप्र)। पिछड़ा वर्ग एवं अल्पसंख्यक कल्याण राज्यमंत्री (स्वतंत्र प्रभार) श्रीमती कृष्णा गौर ने कहा कि जनता की सेवा हमारा ध्येय है और जनता के भरोसे पर खरा उतरना, जनता की सेवा व विकास में कोई कमी नहीं रखना यह हमारी सरकार की जिम्मेदारी है। यह बात उन्होंने रविवार को वार्ड-62 में एक करोड़ 32 लाख रुपए के विभिन्न विकास कार्यों के भूमि-पूजन अवसर पर कही।

राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि, गोविंदपुरा क्षेत्र के आनंद नगर मंडल के वार्ड 62 में एक करोड़ 32 लाख 60 हजार रुपए की लागत से लगभग दो दर्जन स्थानों पर विकास कार्यों का भूमि-पूजन किया। राज्यमंत्री श्रीमती गौर ने कहा कि अनंतपुरा, रावतपुरा और दौलतपुरा मे लगातार विकास कार्य कराए जा रहे हैं। यह सब हमारे कार्यकर्ताओं की मेहनत और लगन का परिणाम है।

वार्ड 62 के आनंद नगर बाल विहार में इन कार्यों का भूमि-पूजन किया जिसमें 15 लाख रुपए के सीसी रोड, नाली निर्माण कार्य गोदियापुरा में 10 लाख की लागत से बनने वाली आरसीसी नाली निर्माण कार्य वार्ड 62 के बिजली नगर में 7 लाख 60 हजार की लागत से बनने वाली आरसीसी नाली निर्माण कार्य सीसी रोड पीरिया गांव आदि में कुल 53 लाख रुपए के विभिन्न विकास कार्य शामिल है।

इसके अलावा नेम सिंह ठाकुर गली रावतपुरा कोकता के पास 5 लाख रुपए की सीसी रोड, कन्हैया गली रावतपुरा कोकता के पास 5 लाख रुपए से सीसी रोड, आर सीसी नाली एवं रोड क्रास का निर्माण किया जाएगा। हनुमान मंदिर दौलतपुरा कोकता के पास 5 लाख रुपए से सीसी रोड का निर्माण होगा। रामदेव बाबा मंदिर बंजारा बस्ती रावतपुरा कोकता के पास 5 लाख रुपए से सीसी रोड, आर सीसी नाली और रोड क्रास का निर्माण होगा। रावतपुरा कोकता में दुर्गा जी के शेड के पास 5 लाख रुपए से नाली एवं पेपर ब्लॉक लगाने का कार्य किया जाएगा। मस्जिद से वसीम भाई के घर अनंतपुरा कोकता तक 15 लाख रुपए से सीसी रोड के निर्माण का भूमिपूजन किया।

इस अवसर पर मंडल अध्यक्ष संतोष ग्वाला, प्रदीप लौधी, दलजोत, श्रीमती ममता विश्वकर्मा, श्रीमती छाया ठाकुर, मनोज विश्वकर्मा, धर्मेंद्र प्रजापति, नरेंद्र ठाकुर, आनंद राव पांडे, संजय कुमार उपस्थित रहे।

भोपाल के स्पा सेंटर्स से पकड़ाए 68 लोगों को छोड़ा

पुलिसकर्मी के संरक्षण में चल रहा था स्पा रेड में आपत्तिजनक सामग्री भी मिली

भोपाल (नप्र)। भोपाल पुलिस ने शनिवार रात को 10 टीमें बनाकर शहर के विभिन्न इलाकों में चल रहे स्पा सेंटर्स पर छापा मारा। इस दौरान 15 स्पा सेंटर्स की जांच की गई। इनमें से चार स्पा सेंटर्स में अनैतिक कार्य करते हुए युवक-युवतियों को रंगे हाथ पकड़ा गया, जबकि 11 स्पा सेंटर्स बंद पाए गए। कार्रवाई में कुल 35 महिलाओं और 33 पुरुषों को हिरासत में लिया गया। इनमें से तीन महिलाएं नेपाल की रहने वाली हैं। हालांकि सभी आरोपियों को नोटिस देकर छोड़ दिया गया है। बागसेवनिया के ग्रीन वैली स्पा लाइन में पदस्थ एक आरक्षक का संरक्षण होने की बात कही है। हालांकि इसका संचालन एक महिला करती है। पुलिस अब इन दोनों की कॉल डिटेल रिकॉर्ड (सीडीआर) की जांच कर रही है।

सभी आरोपियों को तीन थाना पुलिस को सौंपा: क्राइम ब्रांच ने सभी 68 आरोपियों को एमपी नगर थाना, कमला नगर थाना और बागसेवनिया थाना पुलिस के सुपुर्द कर दिया। बाग सेवनिया इलाके में चल रहे स्पा सेंटर में छापे के बाद दो पुलिसकर्मियों की भूमिका संदिग्ध पाई गई है। पुलिस

उनकी सीडीआर निकलवा रही है।

स्पा सेंटर की आड़ में चला रहे थे सेक्स रैकेट: क्राइम ब्रांच ने करीब 10 स्पा सेंटर पर रेड की। इनमें 5 ऐसे ठिकाने मिले, जहां स्पा सेंटर की आड़ में सैक्स रैकेट चलाया जा रहा था। रेड की भनक मिलते ही कुछ इलाकों में स्पा सेंटर संचालक भाग निकले, जिससे वहां कार्रवाई नहीं हो सकी। रेड के बाद पुलिस मिसरोद थाना क्षेत्र स्थित एक मॉल भी गई थी, लेकिन वहां सभी स्पा सेंटर बंद मिले।

कहां-कितने आरोपी पकड़े गए

ग्रीन वैली स्पा सेंटर-बाग सेवनिया- 22 लड़की और 18 लड़के पकड़े गए। शहर में सबसे बड़ी कार्रवाई इसी सेंटर पर हुई। इनमें अधिकतर लड़कियां शहर की थीं। कई लड़कियां बाहरी भी निकलीं। पुलिस सभी का बैकग्राउंड खंगाल रही है। नक्षत्र मानसरोवर कॉम्प्लेक्स-एमपी नगर-4 युवतियां और 4 युवक पकड़े गए। मिकाशो फैमिली स्पा एंड पर्चकर्म सेंटर आरके टॉवर-एमपी नगर- 3 लड़की और 5 लड़के पकड़े गए। वेलनेस स्पा-कमला नगर-6 युवतियां और 6 पुरुष पकड़े गए।

इन सेंटरों पर हर उम्र की लड़कियां मिलती थी: इन सेंटरों पर हर उम्र की लड़की मौजूद थी। ग्राहकों को पसंद कराने के लिए मोबाइल पर उनकी प्रोफाइल भेजी जाती थी। कई दलालों के मोबाइल में लड़कियों की प्रोफाइल मिली है। ग्राहकों को यह प्रोफाइल वॉट्सऐप सहित अन्य सोशल मीडिया अकाउंट के जरिए भेजी जाती थी। पसंद आने पर ग्राहकों से मोटी रकम ऐंठी जाती थी।

कोदो की रोटी खाने से एक परिवार के 8 लोग बीमार, कटनी का ये तीसरा मामला

प्रशासन ने विषाक्तता मामले की जांच शुरू की

कटनी(नप्र)। कोदो की रोटी खाने से एक ही परिवार के आठ लोग बीमार हो गए। जिनको जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है और उनकी हालत में सुधार है। घटना बहोरीबंद तहसील क्षेत्र के बरही गांव की है। इससे पहले भी दो बार ऐसी घटनाएं जिले में सामने आ चुकी हैं। जानकारी के अनुसार बहोरीबंद क्षेत्र के बरही गांव निवासी श्याम सुंदर पटेल के परिवार के सदस्यों ने घर में सुबह नाश्ते में कोदो से बनी रोटी और सब्जी खाई। सभी सदस्य अपने काम में लग गए और कुछ ही देर बाद सभी की हालत बिगड़ने लगी। उनको उल्टी होने लगी और चक्कर आने लगे।

बीमार होने वालों में बुजुर्ग से लेकर बच्चे भी शामिल: बीमार होने वालों में परिवार की लक्ष्मी बाई पटेल 65 साल, 65 लक्ष्मी बाई, अनसुईया बाई पटेल 30 वर्ष, सूरज प्रसाद पटेल 42 साल, शैलेंद्र पटेल 20 वर्ष, चार

से आठ साल के चार बच्चे बीमार हो गए। सभी की हालत बिगड़ने पर स्वजनों ने एंबुलेंस 108 को फोन किया और सभी को लेकर बहोरीबंद सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्र पहुंचाया। जहां से हालत में सुधार न होने पर प्राथमिक उपचार के बाद सभी को जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। जहां पर उनके स्वास्थ्य में सुधार हो रहा था।

कोदो की खेती को प्रोत्साहन: बता दें कर केंद्र सरकार द्वारा किसानों को इसकी खेती करने को प्रोत्साहित किया जा रहा है। कोदो, जिसे कोदरा भी कहा जाता है, एक पोषणयुक्त मोटा अनाज है। इसमें प्रोटीन, विटामिन बी कॉम्प्लेक्स, मिनरल्स, और डाइटरी फाइबर प्रचुर मात्रा में होते हैं।

॥ मंदिरम् ॥

04

बटेश्वर मंदिर समूह, मुरैना

प्रचलित नाम बटेसर, (बटेसरा), मध्य प्रदेश के मुरैना जिले में के द्वारा निर्मित लगभग 200 बलुआ पत्थर से बने बौद्ध मंदिर व खण्डहर हैं। यह ग्वालियर के उत्तर में लगभग 35 किलोमीटर और मुरैना शहर से लगभग 30 किलोमीटर (19 मील) है। ये मंदिर समूह उत्तर भारतीय मंदिर वास्तुकला की शैली के हैं। मंदिरों में ज्यादातर छोटे हैं और लगभग 25 एकड़(10 हेक्टेयर) में फैले हुए हैं। वे [गौतम बुद्धा] बोधिसत्व अवलोकितेश्वर और शक्तिको समर्पित हैं - बौद्ध धर्मके भीतर तीन प्रमुख परंपराओं का प्रतिनिधित्व करते हैं। यह स्थल चंबल नदी घाटी में स्थित पड़ावली, जो कि प्रमुख हर मंदिर के लिए जाना जाता है, के किले के निकट एक पहाड़ी के उत्तर-पश्चिमी ढलान पर है। बटेश्वर मंदिर 8 वीं और 10 वीं शताब्दी के बीच बनाए गए थे। इस स्थान का नाम संभवतः इस मंदिर प्राँगण के सबसे बड़े मंदिर भूतेश्वर मंदिर के नाम पर है, तथा इसे बटेस्वर, बटेसर अथवा बटेसरा के नाम से भी जाना जाता है। जिन मंदिरों के रूप में वे वर्तमान में दिख रहे हैं, उनमें से अधिकांश 2005 में भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा शुरू की गई एक परियोजना के अंतर्गत खंडहर के पत्थरों से पुनर्निर्मित हुए हैं।

170 रुपये में बना लेते थे नकली घी, फिर अमूल और पतंजलि सहित 18 ब्रांड के नाम से बेचते

आगरा के ताजगंज में पकड़ी फैक्ट्री में मिला कई ब्रांड का नकली घी और अन्य सामान

ग्वालियर (नप्र)। आगरा में नकली घी बनाने का बड़ा कारोबार पकड़ा गया है जिसमें मास्टरमाइंड ग्वालियर के कारोबारी ही निकले हैं। आगरा के ताजगंज इलाके में अमूल, पतंजलि से लेकर 18 ब्रांड के नकली घी पैककर देश के कई राज्यों में सप्लाई किया जा रहा था। ग्वालियर रजिस्टर्ड प्योर इट और रियल गोल्ड नाम की फर्मों का उपयोग आगरा में मिला है। आगरा जिले की पुलिस ने मैनेजर सहित पांच लोगों को एफआईआर दर्ज कर गिरफ्तार कर लिया है, लेकिन संचालकगण ग्वालियर की मैनावाली गली के नीरज अग्रवाल, पंकज अग्रवाल व बृजेश अग्रवाल हैं जिनके साथ ग्वालियर के और भी लोग शामिल हैं।

घरों से फरार हो गए

इनकी तलाश में आगरा से आई पुलिस ने ग्वालियर में दबिश भी दी लेकिन यह घरों से फरार मिले। खाद्य और औषधि विभाग ग्वालियर के अनुसार रामनाथ अग्रवाल व उनके परिवार के लोग पहले नकली घी के कारोबार में लिप्त थे और

रासुका भी लगी थी। 2010 के बाद से इन्होंने ग्वालियर छोड़ दिया था। बता दें कि गुरुवार को आगरा में ताजगंज पुलिस ने नकली देसी घी फैक्ट्री पर छापा मारकर मैनेजर राजेश भारद्वाज समेत पांच लोगों को गिरफ्तार किया था। फैक्ट्री में अमूल, पतंजलि, प्योर इट, कृष्णा जैसी कई ब्रांड का नकली घी बनाया जाता था।

चौंकाने वाली जानकारी सामने आई: फैक्ट्री दाल बाजार ग्वालियर के रहने वाले पंकज अग्रवाल, नीरज अग्रवाल, बृजेश अग्रवाल संचालित कर रहे थे। पुलिस ने जब खरीदारी और सप्लाई बाजार की जानकारी की तो चौंकाने वाली जानकारियां सामने आई।

फास्ट फूड की दुकानों पर बेचते थे: पुलिस के अनुसार बिल्टियों की जांच में पता चला कि नकली देसी घी को राजस्थान, हरियाणा, पंजाब, असम व बिहार के अलावा उत्तर प्रदेश के दो दर्जन से ज्यादा शहरों के फास्ट फूड बाजारों में सीधे बेचा जाता था। इसी घी से डोसा, भल्ले, समोसे और आमलेट तक बनाया जाता था।

144 किग्रा एक्सपायरी वनस्पति बरामद किया

आरोपित छोटे दुकानदारों को अपने नेटवर्क के माध्यम से सीधे जोड़ते थे। आर्डर आने के बाद यही माल पहुंचा देते थे। आगरा के डीसीपी सिटी सूरज कुमार राय ने बताया कि मुकदमे में नामजद फरार फैक्ट्री मालिकों की गिरफ्तारी को ग्वालियर में टीम दबिश दे रही हैं। पुलिस ने छापे के दौरान फैक्ट्री से 144 किलोग्राम एक्सपायरी वनस्पति बरामद किया था।

वॉट्सएप से कारोबार चलाते थे नीरज और बृजेश: ग्वालियर में बैठे नीरज अग्रवाल और ब्रजेश अग्रवाल वॉट्सएप के जरिये पूरा कारोबार चला रहे थे। उनके पकड़े जाने पर पूछताछ में सप्लाई चेन की विस्तृत जानकारी मिलेगी।

रतलाम में ई-बाइक चार्जिंग के दौरान ब्लास्ट, बच्ची की मौत

- नाना समेत दो अन्य झुलसे, दो दिन पहले ही सुधरवाकर लाए थे

रतलाम (नप्र)। रतलाम में ई बाइक में चार्जिंग के दौरान धमाके से घर में आग लग गई। हादसे में 11 साल की बच्ची की मौत हो गई जबकि बच्ची के नाना समेत 2 लोग झुलस गए। इन्हें अस्पताल में भर्ती कराया गया है। जिस ई बाइक में धमाका हुआ उसे दो दिन पहले ही सुधरवाया गया था। हादसा पीएंडटी कॉलोनी में शनिवार-रविवार की दरमियानी रात करीब 2.30 बजे भागवत मोरे के घर हुआ। उनकी नातिन अंतरा चौधरी की हादसे में मौत हो गई। धमाके की आवाज सुनते ही पड़ोसियों की नींद खुली। वे मदद के लिए दौड़े। सूचना पर पुलिस और फायर ब्रिगेड भी मौके पर पहुंची और आग पर काबू पाया गया। आग से घर का सामान भी जल गया।

केंद्रीय मंत्री प्रह्लाद जोशी उज्जैन पहुंचे

बाबा महाकाल के सपत्नीक किए दर्शन

उज्जैन (नप्र)। विश्व प्रसिद्ध श्री महाकालेश्वर मंदिर में रविवार सुबह हुई भस्म आरती के दौरान दर्शन करने के लिए केंद्रीय ऊर्जा मंत्री प्रह्लाद जोशी पहुंचे। उन्होंने भस्म आरती के पश्चात गर्भगृह की देहरी से सपत्नीक भगवान महाकाल का पूजन कर आशीर्वाद लिया। पूजन कार्य पं. महेश पुजारी और पं. अर्पित पुजारी ने सम्पन्न कराया। पूजन के पश्चात केंद्रीय मंत्री जोशी का श्री महाकालेश्वर मंदिर प्रबंध समिति की ओर से आशीष दुबे ने भगवान महाकाल का प्रसाद और दुपट्टा भेंट कर सम्मान किया।

बड़नगर में सीएम मोहन यादव ने 3 गांवों के नाम बदले

जहांगीरपुर अब होगा जगदीशपुर, गजनीखेड़ी का चामुंडा महानगरी

बड़नगर के गजनीखेड़ा में 40 करोड रुपए की लागत के सीएम राइज स्कूल का लोकार्पण किया।

उज्जैन (नप्र)। बड़नगर में मुख्यमंत्री मोहन यादव ने बड़ी घोषणा करते हुए तीन गांवों के नाम बदलने का ऐलान कर दिया। अब गजनीखेड़ी गांव का नाम होगा चामुंडा महानगरी। ग्राम मौलाना का विक्रम नगर और जहांगीरपुर गांव का नाम जगदीशपुर करने को कहा है। मुख्यमंत्री ने सीएम राइज स्कूल, बड़नगर का नाम पूर्व प्रधानमंत्री व भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम पर रखा। मुख्यमंत्री डॉ.मोहन यादव ने बड़नगर के गजनीखेड़ा में 40 करोड रुपए की लागत के सीएम राइज स्कूल का लोकार्पण किया। बड़नगर के गजनीखेड़ी पंचायत को अब चामुण्डा माता नगर, मौलाना को विक्रम नगर और जहांगीरपुरी को जगदीशपुर के नाम से जाना जाएगा। मध्य प्रदेश सरकार ने बड़नगर, उज्जैन में नवनिर्मित सीएम राइज स्कूल का शुभारंभ किया। सीएम ने ऐलान किया कि स्कूल पूर्व प्रधानमंत्री एवं भारत रत्न स्वर्गीय अटल बिहारी वाजपेयी जी के नाम से जाना जाएगा। मुख्यमंत्री ने शिक्षा को युवाओं के स्वर्णिम भविष्य का आधार बताते हुए उच्च गुणवत्तापूर्ण शिक्षा हर वर्ग तक पहुंचाने की प्रतिबद्धता दोहराई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने विभिन्न विकास कार्यों का भूमिपूजन और लोकार्पण भी किया। कार्यक्रम में केंद्रीय मंत्री प्रल्हाद जोशी, सांसद अनिल फिरोजिया और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित रहे।

पहले भी नामों में परिवर्तन

इससे पहले भी जुलाई 2024 में सरकार ने कई गांवों के नाम में परिवर्तन किए थे। मध्य प्रदेश सरकार ने कुंडम का नाम कुंडेश्वर धाम, कूंची का चंदनगढ़ और कुंडिया का कर्णपुर किया था। जिसकी अधिसूचना जारी कर नाम परिवर्तन लागू भी कर दिया गया था।

ग्वालियर में ज्योतिषाचार्य ने महिला को ठगा

10 लाख के जेवर के बदले दिया आटा, परिवार पर आपदा का डर दिखाकर मंगवाए थे गहने

ग्वालियर (नप्र)। ग्वालियर में एक ऑफिस में कार्यरत महिला कर्मचारी को एक ज्योतिषाचार्य ने परिवार में आपदा का भय दिखाकर उसके घर के सभी जेवर मंगवाए। फिर उसने उन जेवरों को एक डिब्बे में रखकर महिला को वापस दे दिए। दो दिन बाद जब महिला ने डिब्बा खोला, तो उसमें आटा था और 10 लाख रुपए के जेवर गायब थे। घटना कंपू थाना क्षेत्र स्थित ललितपुर कॉलोनी की है। ठगी का अहसास होने पर पीड़ित महिला ने मामले की शिकायत कंपू थाना में दर्ज कराई है। पुलिस ने ज्योतिषाचार्य के खिलाफ ठगी का मामला दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। शहर के कंपू थाना क्षेत्र स्थित ललितपुर कॉलोनी में आयुर्वेदाचार्य और ज्योतिषी सर्वेश ने एक ऑफिस खोलकर रिसेप्शनिस्ट रागिनी सिंह को ठग लिया है। आरोपी ने रिसेप्शनिस्ट को अपने जाल में फंसाकर लगभग एक माह बाद कहा कि तुम्हारे परिवार पर आपदा आने वाली है। आपदा से बचने के लिए ज्योतिष ने उपाय बताते हुए कहा कि तुम अपने घर के सभी गहने चुपचाप किसी को बताए बिना ले आओ। मैं गहनों का उपचार करके तुम्हें दे दूंगा फिर आपदा टल जाएगी। महिला बाद में घर में रखे अपनी मां, बहन और खुद के गहने उन्हें बताए बिना चुपचाप एकत्र कर टिफिन के डिब्बे में रखकर ले आई। गहनों की कीमत लगभग 10 लाख रुपए बताई गई है। गहने ज्योतिष को देने के बाद उसने गहनों को पीले कपड़े और आटे में लपेट कर डिब्बे में रखकर वापस कर दिए और कहा कि दो दिन तक डिब्बे को नहीं खोलना है। साथ ही न ही किसी को बताना। आपदा के डर से युवती ने किसी को कुछ नहीं बताया। दो दिन बाद जब डिब्बा खोला, तब उसमें पीला कपड़ा व आटा था, गहने गायब थे। वह जब ज्योतिषाचार्य के दफ्तर पर आई तब वह बंद था। ठगी की शिकार युवती रागिनी को ज्योतिषाचार्य से मकान मालिक के भाई ने मिलवाया था। रिसेप्शनिस्ट की ड्यूटी के दौरान खाली समय में सर्वेश अपने दफ्तर में बुलाकर बातें करता था।

यूनियन कार्बाइड के कचरे का मामला

भाजपा ने कहा- जो जनता को भड़का रहे हैं, उन पर कार्रवाई हो

भोपाल/इंदौर (नप्र)। यूनियन कार्बाइड का जहरीला कचरा इंदौर के समीप पीथमपुर में जलाए जाने के निर्णय पर छिड़े विवाद के बीच शनिवार को भाजपा प्रदेश अध्यक्ष वीडी शर्मा व प्रदेश संगठन महामंत्री हितानंद शर्मा इंदौर पहुंचे। दोनों ने संभागीय नेताओं के साथ लंबी बैठक की। उसके बाद मीडिया से चर्चा में प्रदेश अध्यक्ष शर्मा ने कहा कि जो डॉक्टर कचरे से कैंसर की बात कह रहे हैं,उन पर प्रशासन को कार्रवाई करनी चाहिए। उन्होंने कांग्रेस पर आरोप लगाते हुए कहा कि कांग्रेस भ्रम फैला रही है। कांग्रेस के जो भी नेता इस मामले में जनता को भड़का रहे हैं, उन पर भी कानूनी कार्रवाई होनी चाहिए।

कही-सुनी

रवि भोई

(लेखक पत्रिका समवेत सृजन के प्रबंध संपादक और स्वतंत्र पत्रकार हैं।)

छत्तीसगढ़ में भाजपा के नेता और कार्यकर्ता तनाव में

छत्तीसगढ़ में भाजपा की सरकार बने एक साल से कुछ ज्यादा समय हो गया है, पर नेताओं को अभी तक लालबत्ती नहीं मिली है। लालबत्ती की चाहत रखने वाले नेता इंतजार में समय काट रहे हैं। पहले उम्मीद थी कि लोकसभा चुनाव के बाद कुछ हो जाएगा। फिर स्थानीय निकाय चुनाव का बेरियर आ गया। स्थानीय चुनाव की तारीख तय न होने से निगम-मंडल के दावेदारों का तनाव बढ़ता जा रहा है। आमतौर पर छत्तीसगढ़ में स्थानीय निकायों का चुनाव दिसंबर में निपट जाता है। पिछले कार्यकाल में स्थानीय निकाय चुनाव दिसंबर में संपन्न हो गया था और जनवरी में नगर निगमों में महापौर बैठ गए थे। अबकी बार जनवरी में महापौर और पालिका अध्यक्ष की जगह प्रशासक बैठने जा रहे हैं। स्थानीय निकाय के चुनाव समय पर न होने के कारण पार्षद और महापौर के दावेदारों का भी ब्लड प्रेशर बढ़ता जा रहा है। एक वार्ड में पार्षद के 10 से 15 दावेदार बताए जा रहे हैं। महापौर बनने के इच्छुक लोगों की भी कतार है। यही हाल मंत्री बनने के इच्छुक भाजपा विधायकों का है। मंत्रिमंडल के विस्तार की जब-तब हवा उड़ जाती है। मंत्रिमडल के विस्तार का शुभ-मुहूर्त निकल ही नहीं पा रहा है। विष्णुदेव साय मंत्रिमडल में अभी मंत्री के दो पद खाली हैं। हरियाणा फार्मूले से तीन मंत्री बन सकते हैं। राज्य में मंत्री बनने वाले विधायकों की लंबी फेहरिस्त है। नया-पुराना विधायक मंत्री बनना चाहता है, पर किसी का नंबर नहीं लग पा रहा है। चर्चा है इंतजार में ही भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं में तनाव बढ़ता जा रहा है।

सांसद और विधायक में टकराव

कहते हैं एक मुद्दे पर राजधानी रायपुर के सांसद का एक विधायक से टकराव हो गया। बताते हैं कि रायपुर में एक मेले के आयोजन को लेकर दोनों में सामंजस्य नहीं बैठा। खबर है कि आयोजनकर्ता जिस जगह मेले का आयोजन करना चाहते थे, सांसद जी उसी जगह पर अनुमति देने के पक्षधर थे, जबकि विधायक जी पक्षधर नहीं थे। चर्चा है कि विधायक जी ने जगह को लेकर जिला प्रशासन के सामने आपत्ति कर दी। हवा है कि सांसद जी ने वीटो पावर लगा दिया और निर्धारित स्थान पर ही आयोजकों को मेले की अनुमति जिला प्रशासन से मिल गई। बताते हैं मेले का उद्घाटन सांसद जी ने किया, पर विधायक जी उसमें नहीं पहुंचे।

अवनीश शरण यथावत, मांझी हटे

राज्य सरकार ने 2009 बैच के आईएएस अफसरों को नए साल में तोहफा दे दिया। उन्हें विशेष सचिव से पदोन्नत कर सचिव बना दिया। इनमें बिलासपुर कलेक्टर अवनीश शरण और बिपिन मांझी भी हैं। प्रमोशन के वक्त विपिन मांझी नारायणपुर के कलेक्टर थे। सरकार ने बिपिन मांझी को प्रमोशन के बाद वहां से हटा दिया और प्रतिष्ठा ममगई को नारायणपुर का कलेक्टर बना दिया। लेकिन प्रमोशन के बाद अवनीश शरण को यथावत बिलासपुर का कलेक्टर बनाए रखा गया है। बिपिन मांझी को लोक आयोग का सचिव बना दिया गया है। लोक आयोग में सचिव का पद खाली था। कहा जा रहा है कि अवनीश शरण अभी कुछ समय और बिलासपुर के कलेक्टर रहेंगे। बिलासपुर बड़ा जिला है और पहले भी रायपुर और बिलासपुर जैसे बड़े जिले में सचिव स्तर के अधिकारी कलेक्टर रहे हैं। विधानसभा चुनाव के दौरान अवनीश शरण को बिलासपुर का कलेक्टर बनाया गया था।

ईडी के जाल में कवासी

पूर्व मंत्री और कांग्रेस नेता कवासी लखमा अंततः ईडी की चपेट में आ गए। ईडी ने शराब घोटाले में कवासी लखमा और उनके परिजनों -रिश्तेदारों के यहां छापा मारा व दस्तावेज जब्त किए हैं। भूपेश बघेल मंत्रिमडल में कवासी लखमा पांच साल आबकारी मंत्री थे। बिना अक्षर ज्ञान के कवासी ने पांच साल आबकारी विभाग को चलाया। शराब घोटाले में कई अधिकारी लपेटे में आ चुके हैं। कुछ जेल में भी हैं। अब कवासी अनपढ़ होने के आधार पर क्या ईडी के जाल से बच पाएंगे, यह लोगों में चर्चा का विषय है। अनपढ़ होने के बाद भी कवासी का अपने इलाके और बस्तर में अच्छी पकड़ है। वर्तमान में कवासी लखमा बस्तर के बड़े नेताओं में गिने जाते हैं। कवासी लखमा पर कार्रवाई से बस्तर में कांग्रेस को झटका लग सकता है। चर्चा है कि कवासी लखमा के माध्यम से ईडी भूपेश बघेल तक पहुँचने की कोशिश कर सकती है।

कुलदीप जुनेजा का निशाना

पूर्व विधायक कुलदीप जुनेजा ने चिट्ठी बम फोड़ा है। कुलदीप जुनेजा ने कुछ लोगों की कांग्रेस में वापसी के विरोध का सहारा लेकर पोल खोल का काम कर दिया है। बताते हैं इससे कांग्रेस के कुछ बड़े नेताओं ने कुलदीप जुनेजा से मुँह फुला लिया है। चर्चा है कि कुलदीप जुनेजा आनंद कुकरेजा और उनके बेटे अजीत कुकरेजा की कांग्रेस में वापसी का विरोध कर रहे हैं। 2023 के विधानसभा चुनाव में अजीत कुकरेजा ने कांग्रेस से बगावत कर निर्दलीय चुनाव लड़ा था। कुलदीप की धारणा है कि 2023 में अजीत के कारण उनकी हार हुई। इस कारण वे पार्टी में वापसी का विरोध कर रहे हैं, पर चिट्ठी के बहाने कुलदीप जुनेजा ने परोक्ष रूप से कांग्रेस के दिग्गज नेताओं पर भी निशाना साध दिया है।

क्या ओंकार को जिलाध्यक्ष बनने देंगे बृजमोहन

बताते हैं रायपुर के पूर्व सांसद रमेश बैस के रिश्तेदार ओंकार बैस का रायपुर जिलाध्यक्ष के लिए नाम टाप पर है, पर क्या रायपुर के वर्तमान सांसद बृजमोहन अग्रवाल सहमति देंगे, यह बड़ा सवाल है। कहा जा रहा है कि रायपुर शहर भाजपा जिलाध्यक्ष के लिए बृजमोहन अग्रवाल की हरी झंडी जरुरी है। बताते है बृजमोहन अग्रवाल वर्तमान रायपुर शहर भाजपा जिलाध्यक्ष जयंती पटेल को ही पद पर बनाए रखना चाहते हैं। अब देखते हैं क्या होता है ?

आबकारी सचिव आर शंगीता ट्रेनिंग में जाएंगी

कहते हैं 2005 बैच की आईएएस और आबकारी सचिव आर शंगीता अगले हफ्ते से ट्रेनिंग पर मसूरी जाएंगी। कहा जा रहा है कि आर शंगीता 31 जनवरी तक ट्रेनिंग में रहेंगी। इस दौरान लिंक अफसर के रूप में मुकेश बंसल उनका काम संभालेंगे। 2005 बैच के आईएएस मुकेश बंसल अभी वित्त और सामान्य प्रशासन विभाग के सचिव के साथ मुख्यमंत्री के सचिव हैं।

सरकार का नया फार्मूला

राज्य सरकार ने 2009 के आईएएस अफसरों को पहली जनवरी को प्रमोट कर सचिव बना दिया और बिपिन मांझी को छोड़कर अन्य को जहां थे, वहीं पदस्थ कर दिया। लेकिन तकनीकी दिक्कतों के कारण कुछ अफसरों को ओएसडी बनाना पड़ा। मसलन डॉ प्रियंका शुक्ला को हेल्थ का ओएसडी बनाया गया। हेल्थ में पहले से ही अमित कटारिया सचिव हैं। इसी तरह सुनील जैन को खनिज विभाग का ओएसडी बनाया गया है। खनिज विभाग में सचिव पी दयानंद हैं। केडी कुंजाम को राजस्व विभाग का ओएसडी बना दिया गया है। राजस्व विभाग में पहले से ही अविनाश चंपावत सचिव हैं। ओएसडी के साथ इन अफसरों का विभागाध्यक्ष का पद यथावत रखा गया है।